काञ्चीनाथ झा 'किरण'

कुलानन्द मिश्र

भारतीय
MT
817.230 92
J 559 M
MT
817.230
J559M

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

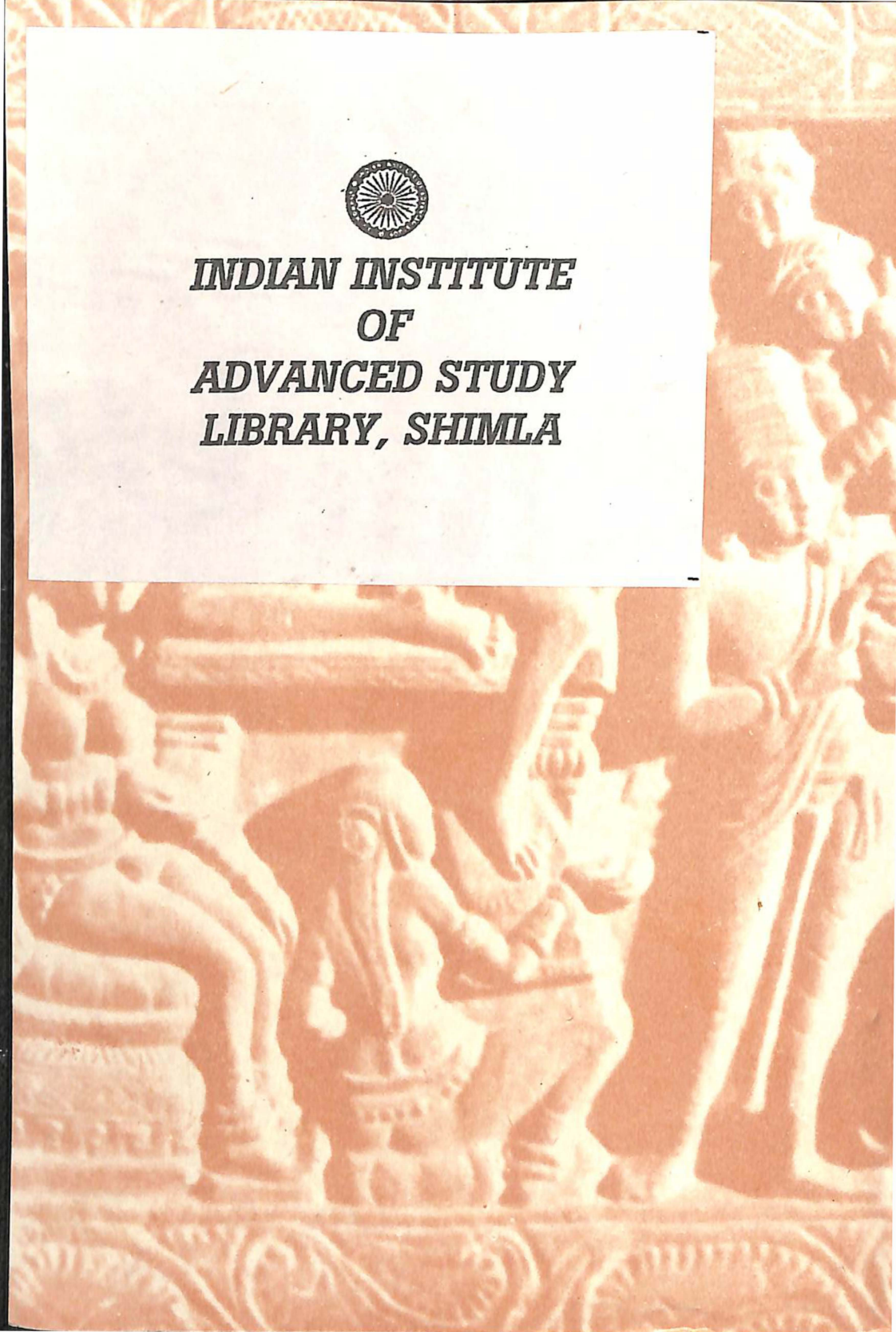

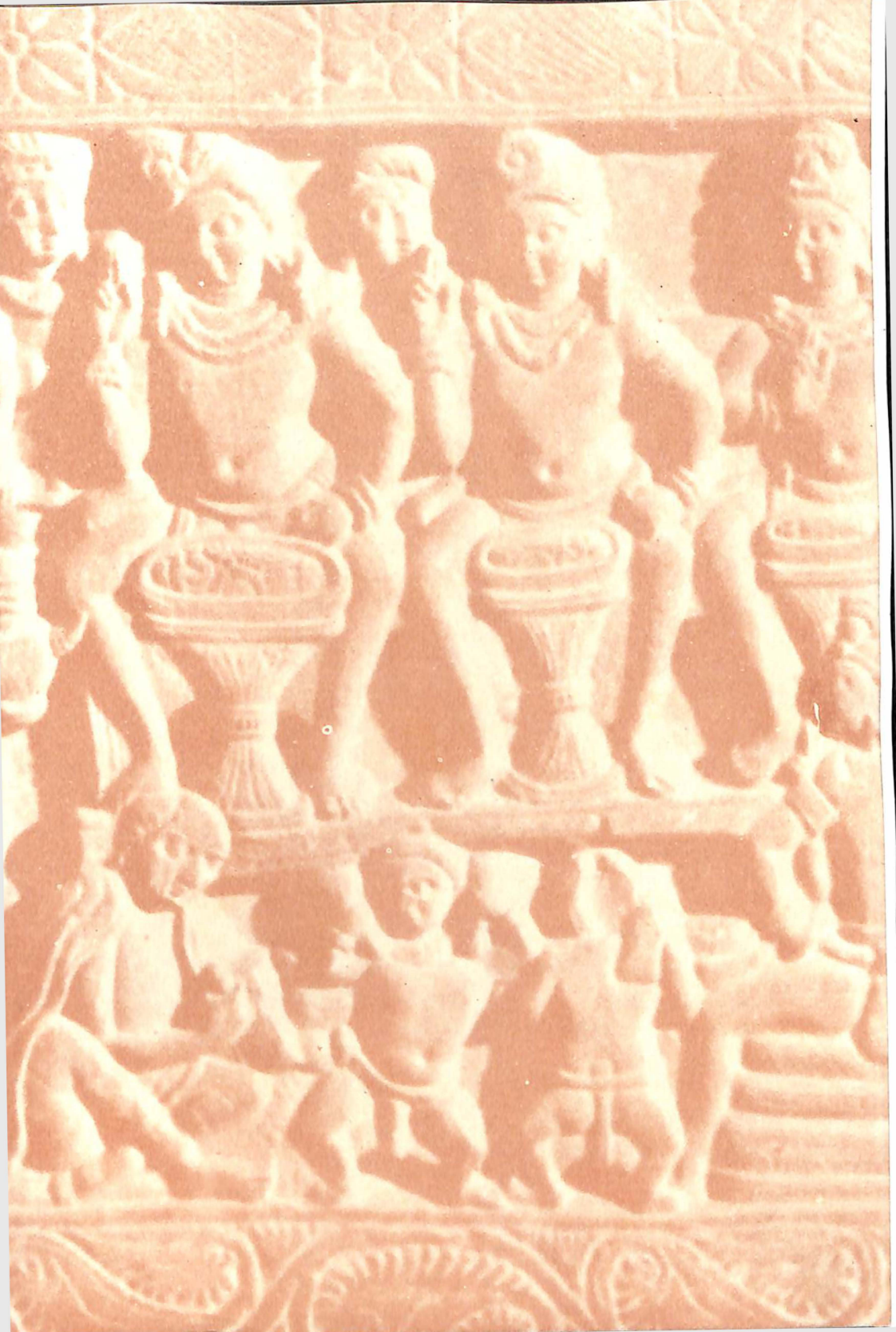

अस्तरपर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक राजसभाक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माता रानी मायाक स्वप्नकेर कऽ। रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिगद्ध कऽ रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

काञ्चीनाथ झा 'किरण'

लेखक
कुलानन्द मिश्र

साहित्य अकादेमी

Kanchinath Jha 'Kiran' : A monograph in Maithili by Kulanand Mishra on the Maithili author. Sahitya Akademi, New Delhi (1998), Rs. 25.

Library IIAS, Shimla
MT 817.230 92 J 559 M
00117126

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : 1998

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय
जीवनतारा भवन, 23 ए/44 एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053
मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुम्बई 400 014
ए डी ए रंगमंदिर, 109, जे. सी. मार्ग, बैंगलोर 560 002
304-305, अन्ना सलाई, तेनामपेठ, मद्रास 600 018

मूल्य : पचीस टाका

ISBN 81-260-0463-0

Typesetting : Paragon Enterprises, New Delhi-110 002
Printers : Super Printers, Delhi-110 051

817.23092
J 559M

117126
9.12.04

क्रम

पूर्वोक्ति	7
जीवन	9
स्थापना	15
साहित्य	21
परिशिष्ट	105

पूर्वोक्ति

मैथिली भाषा एवं साहित्यक एक सिद्ध साधक काञ्चीनाथ झा 'किरण'क व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विनिबन्ध लिखबा लेल साहित्य अकादेमीक अनुबन्ध जखन हमरा भेटल, हम थोड़े असमंजस मे पड़ि गेलहुँ। मोन पड़ल मैथिली अकादमी, पटना द्वारा आयोजित एकल काव्य-पाठक अवसर पर देल हुनक आत्म-परिचय, जाहिमे अपन प्रकृतिक परत खोलैत ओ अपना बुद्धिकेँ 'अष्टम्यन्त' कहने रहथि। कोनो अष्टम्यन्त बुद्धिवला व्यक्ति कि रचनाकारक हिसाब-किताब करबा मे अनेक तरहक खतराक संभावना रहैत छैक। ओहन व्यक्ति केँ ई खतरा स्वाभाविक रूप सँ विकट लगैत छैक जे जीवन तथा साहित्यकेँ एक नजरिएँ देखबाक साहित्यिक अनैतिकता (?) लेल सामान्यतः डाँड़न जाइत रहल अछि। तथापि जे हम एहि काज मे प्रवृत्त भेलहुँ तऽ एकर मुख्य कारण 'किरण'क व्यक्तित्वक प्रति हमर (एकटा स्वजनक) आदर-भाव तथा हुनक रचनाकारक प्रति हमर (एकटा समानधर्माक) अनुराग मानल जयबाक चाही। यद्यपि हम ठीक-ठीक 'किरण'क बाट नहि चलैत छी, तथापि हम ई जनैत छी जे हमरा दुनू गोटेक दिशा एक होयबाक कारण गंतव्य भिन्न नहि भऽ सकैछ। 'किरण' कहियो कोनो 'प्रभामण्डल' नहि बनौलनि, हुनक कोनो 'स्कूलो' नहि चलल, तथापि हुनक स्नेही, प्रशंसक, अतेक धरि जे पूजको सुविधापूर्वक भेटि सकैत छथि। मुश्किल तखन होयत जखन 'किरण'क सोच आ स्वभावक अनुसार बरतनिहार हुनक खास अपन लोकक खोज मे अहाँ बहरायब।

पोथी-प्रकाशनक दृष्टिसँ 'किरण' पर्याप्त उपेक्षित रहलाह। जे थोड-बहुत रचना पोथीक रूप मे प्रकाशितो भेलनि अछि, तकर प्रस्तुति एतेक त्रुटिपूर्ण अछि जे अधिकांश रचनाक शुद्ध रूप मे पाठ कऽ सकब सामान्य पाठक लेल संभव नहि थिक। 'किरण'क रचनासभक व्यवस्थित संस्करण ओकर संतुलित मूल्याङ्कन सँ अधिक अपेक्षा तथा चिंताक विषय थिक।

एहि विनिबन्धक लेखन-क्रम मे हमर ई चेष्टा रहल अछि जे एकरा माध्यम सँ 'किरण'क ओ स्वर आ स्वरूप प्रस्तुत हो जे हमरा संग हुनक लक्षाधिक पाठक आ श्रोता सुनैत-देखैत आयल अछि। 'किरण'क हार्दिकता आ वैचारिकता केँ रेखाङ्कित करैत काल हम अपन धारणा संग अन्य सुधी समीक्षक-आलोचक, प्रथित-कीर्त्तित रचनाकार, अन्वेषी अनुसंधित्सु तथा पंजीकार—इतिहास-लेखकक अभिमतकेँ यथासंभव ध्यान मे

राखल अछि। ओना हम हुनक ओहि स्वर आ स्वरूप पर अपन ध्यान सभसँ अधिक केन्द्रित राखल अछि जे 'किरण'क उपलब्ध रचना सँ स्वतः अभरैत छनि आ स्पष्ट देखल-सुनल जाइत छनि।

हम साहित्य अकादेमी आ एकर मैथिली परामर्शदातृ समितिक प्रति आभारी छी जे मैथिली साहित्यक एहि खास रूपसँ आम आदमीक जीवन तथा कृतित्व पर विनिबन्ध लेल हमरा अवसर प्रदान कयल। आभारी छी हम ओहि समस्त रचनाकार आ विचारकक, जनिक रचना कि विचारक हम एहि विनिबन्ध मे आवश्यकतानुसार उपयोग कयने छी। एहि विनिबन्धक लेखन-क्रममे अपेक्षित बहुतो सामग्री तथा सत्परामर्श लेल हम ख्यात आ निष्णात् कवि डॉ॰ भीमनाथ झा एवं साकांक्ष आ सचढ़ आलोचक मोहन भारद्वाज केँ कष्ट देलियनि, जकरा ओ दुनू स्नेहपूर्वक अवधारलनि। एहि दुनू सहृदय सुहृदक प्रति आभार प्रकट करब नैतिक रूपसँ हमरा लेल जतबा संगत हो, हम जनैत छी, हुनकासभकेँ ई मिसियो भरि नहि रुचतनि आ तेँ एहि संदर्भ मे हमर मौन जे बाजि सकत ओ बाजत।

एहि विनिबन्धक लेखन-अवधिमे हमर जीवनक्रम पर्याप्त असंयत रहल, तथापि जे हम ई पूर कऽ सकलहुँ तऽ एकर श्रेय एकांत रूपसँ हमर सखी-सहधर्मिणी कविताकेँ छनि जे दुःख स्वयं सहबेटा नहि जनैत छथि, दुःख सहबाक अवगति अनको प्रदान करबाक क्षमता रखैत छथि। हमर आ कविताक जीवन मे सह-अस्तित्वक यथार्थ एहन अद्‌भुत थिक जे हम हुनक जीवन मे ग्रीष्मक मध्याह्नक दाहक मार्तण्ड छी आ ओ हमर जीवन मे शरद पूर्णिमाक शीतल पीयूषवर्षी शशि छथि।

— कुलानन्द मिश्र

पटना
10 अप्रैल 1997

जीवन

समस्त विश्वक सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक मानचित्र मे जेहन गरिमामय स्थान एहि देश भारतकेँ प्राप्त छैक, तेहने महिमामण्डित स्थान एहि देशक सांस्कृतिक ओ आध्यात्मिक मानचित्र मे बिहार प्रदेश केँ ओ बिहार प्रदेशक सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक मानचित्र मे मिथिला क्षेत्र केँ प्राप्त रहलैक अछि। जनसंख्याक दृष्टि सँ एहि देशक दोसर प्रांत बिहार अपन भौगोलिक परिवेश तथा सांस्कृतिक अभिरुचि एवं आचार तथा अभिव्यक्तिक भाषा मे न्यूनाधिक भिन्नताक कारण चारि प्रमुख क्षेत्र मे विभक्त अछि जे क्रमशः मिथिला, मगध, भोजपुर ओ आदिवासी क्षेत्रक रूपमे जानल जाइछ। बिहारक सांस्कृतिक, आध्यात्मिक ओ शैक्षिक क्षेत्र मे मिथिलाक अतिविशिष्ट योगदान रहलैक अछि। वर्तमान नेपालक दक्षिणी ओ पूर्वी तथा बिहारक उत्तरी, पूर्वी तथा पश्चिमी क्षेत्र मे अवस्थित मिथिलाक नदी-मातृक भू-भाग ज्ञान, चिंतन, धार्मिक आचरण ओ बहुविध लेखन लेल अत्यन्त ख्यात रहल अछि। 'धर्मस्य तत्वं ज्ञेयं मिथिलाया व्यवहारतः' —सन उक्ति अखनो अप्रासङ्गिक नहि भेल अछि।

एही यशस्विनी मिथिलाक अन्तर्गत दरभंगा जिलाक मुख्यालय दरभंगा सँ पूर्व निर्मली गेल रेलवे लाइनक लोहना रोड स्टेश्न सँ लगभग एक कि॰ मी॰ पश्चिम स्थित अछि उजानक धर्मपुर टोल जे ओहि क्षेत्र मे सुविख्यात विदेश्वर स्थान सँ एक कि॰ मी॰ दक्षिण पड़ैत अछि। 'किरण'क पिता मुकुन्द झा, जे एकटा नैष्ठिक सद्गृहस्थ रहथि, एही धर्मपुर टोलक वासी छलाह। हिनक विवाह पाही टोलक रूपेश्वरी देवी संग भेल रहनि। 'किरण'क मातृपक्ष 'कुसुमाञ्जलि' नामक विख्यात न्याय-ग्रंथक प्रसिद्ध टीकाकार मेघ ठाकुरक, जे महाराजा महेश ठाकुरक अग्रज रहथिन, संतान पक्ष सँ सम्बद्ध छल आ श्रोत्रिय ब्राह्मणक प्रथित वंशमे पड़ैत छल। सुनील कुमार ठाकुर द्वारा 'किरण' पर प्रस्तुत शोध-प्रबन्धक अनुसार हिनक जन्म मातामही सँ प्राप्त छौड़ही मौजे (अपरनाम-महाराजपुर) मे भेल छलनि। हिनक जन्मतिथिक सम्बन्ध मे मतान्तर थिक। मध्यम-पाण्डव (डा॰ भीमनाथ झा) अपन 'परिचायिका' मे हिनक जन्मतिथि 28 दिसम्बर, 1906 अङ्कित कयने छथि, जखन कि सुनील कुमार ठाकुर अपन शोध-प्रबन्ध मे हिनक जन्मतिथि 01 दिसम्बर

1906 मानैत छथि। एहि दुहू गोटे सँ भिन्न थिक 'किरण'क सुपुत्र डा॰ कैलाशनाथ झाक मान्यता, जिनका अनुसार किरणक जन्मतिथि 01 दिसम्बर[1] 1907 थिक। वास्तविक तिथि जे हो, मुदा ओ निश्चित रूप सँ एकटा शुभ तिथि छलि, जाहि मे मैथिली भाषा तथा साहित्यक विकास लेल 'किरण' – सन दृढ़व्रती साधक तथा रचनाकारक जन्म भेल छल। रूसक प्रसिद्ध लेखक चेर्निशेव्स्कीक ई कथन जे 'बहुत काल सँ दुनिया मे एहन लेखक नहि भेल छल, जे अपन जनता लेल एतेक महत्त्व रखैत हो जतबा गोगोल रूसक लेल' थोड़बेक रूपान्तर संग 'किरण'क सम्बन्ध मे एहि तरहेँ प्रस्तुत कयल जा सकैछ जे बहुतकाल सँ मिथिला मे एहन लेखक नहि भेल जे अपन भाषा तथा साहित्यक संग अपन लोको लेल एतेक महत्व रखैत हो, जतेक 'किरण' मैथिली तथा मिथिलाक लेल महत्व रखैत छथि। अपन भाषा तथा भूमि लेल 'किरण'क मोनक आदर, अनुराग तथा समयोचित संतापक अंत नहि छल। विद्यापति केँ सम्बोधित करैत 'किरण' कहैत छथि :–

मिथिला-मृदु-भाषा-काननमे, अपने जे रोपल काव्य-लता।
छल टूटि पड़ल बंगीय भ्रमर, जनि देखि मनोहर मंजुलता।
अछि सूखि रहल से भूमि खसलि, आसार बिना आधार बिना।
नव कोरक हाय फुलैत कोना ? जननी तन मे रसधार बिना ?
(–विद्यापति, 1940 ई॰)

एहि कविता-खण्ड मे विद्यापति पर बहुत दिन धरि बंगालक दाबीक सम्बन्ध मे संकेत स्पष्ट अछि। एकटा अन्य कविता मे विद्यापति द्वारा देववाणी संस्कृतक स्थान पर 'देसिल बयना'क प्रयोग लेल 'किरण'क मोन मे कवि कोकिलक प्रति असीम आदर तथा कृतज्ञताक भाव छनि :–

देशक पिछड़ल जनक नेहवस देव वाणी केँ ठोकराय।
धरतीक बोली मे लिखि अपनहुँ धरती पुत मे देल मिलाय।।
\+ + + +
मधुर गीतमे गाबि-गाबि जे मायक बोलीमे लिखि देल।
सुमरि चरन तइजन कविकेर, कवि किरणक सिर अछि अवनत भेल।।
(–कवि कोकिल)

किरण ई मानैत छलाह जे सामान्यजन धरि कविता तखने पहुँचि सकैछ, सामान्यजन केँ तखने अनुप्राणित कऽ सकैछ; जखन ओ लोकक भाषा मे लिखल जाय। साहित्यकेँ संजीवनी शक्ति उपलब्ध करयवा लेल बोध तथा अभिव्यक्ति–एहि दुनू स्तर पर ओकर

1. किरण कवितावली

सामान्य लोकक समीप होयब अनिवार्य होइत छैक—ई कवि 'किरण'क आन्तरिक आस्था रहनि।

'किरण'क जन्मक बाद हिनका सम्बन्ध मे ज्योतिषी तथा गुणी ई भविष्यवाणी कयने रहथि जे ई अल्पजीवी तथा अशिक्षित होयताह, मुदा हमरासभ लेल सुखद सत्य ई थिक जे किरण अपन कठोर अध्यवसाय एवं अदम्य मनोबलक बल पर एहि दुनू भविष्यवाणी कें (दीर्घजीवी बनि तथा उच्चतम शैक्षिक योग्यता हासिल कऽ) सर्वथा मिथ्या सिद्ध कऽ देलनि। प्रायः एहने कर्मठ तथा दृढ़व्रतीक कल्पना कऽ मनस्वी शायर इकबाल ई सत्परामर्श देने रहथि जे—

खुदी को कर बुलन्द इतना
कि हर तकदीर से पहले
खुदा बन्दे से खुद पूछे
बता तेरी रजा क्या है ?

'किरण' 1922 ई. मे संस्कृतक प्रथमाक तथा 1930 मे मध्यमाक परीक्षा मे उत्तीर्ण भेलाह। एहि मध्यक अवधि मे ई वाटसन हाइ स्कूल, मधुवनी तथा दिनाजपुरक (सम्प्रति बंगलादेशक) बुद्धिनाथ इन्स्टिच्यूट मे अंग्रेजी पद्धति सँ अध्ययन कयलनि तथा 1928 ई. मे प्रवेशिकाक (मैट्रिकक) परीक्षा मे प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण भेलाह तथा अपन मेधाक परिचय देलनि। वर्ष 1929 ई. मे दरभंगाक मेडिकल स्कूल मे प्रवेशो लेल ई चुनल गेल रहथि, मुदा अर्थाभावक कारण ओतय शिक्षा ग्रहण करब हिनका लेल संभव नहि भेलनि। अर्थक अभाव हिनक जीवनक स्थायीभाव बहुत काल धरि बनल रहलनि, जाहि सँ अपन व्यक्तित्वक मनोवाञ्छित विकास करबा मे हिनका पर्याप्त वाधाक विरुद्ध संघर्षरत रहय पड़लनि।

वर्ष 1930 मे किरण मध्यमा परीक्षा मे उत्तीर्ण भेलाह आ ओही वर्ष हिनक विवाह कोइलख (मधुबनी) वासी माधव झाक सुपुत्री ललिता झा संग भेलनि। ससुरक आर्थिक सहयोग सँ ई ओही वर्ष काशी हिन्दू विश्वविद्यालयक आयुर्वेदिक महाविद्यालय मे प्रवेश लेलनि, जतऽ सँ 1933 ई. मे ई कलकत्ता विश्वविद्यालय मे स्थानान्तरण करा लेलनि। वर्ष 1935 ई. मे ई एल. ए. एम. एस. (लाइसेन्सिएण्ट इन आयुर्वेदिक मेडिसिन एण्ड सर्जरी) क परीक्षा मे उर्त्तीण भेलाह तथा वर्ष 1936 ई. मे काशीक रानी चन्द्रावती डिस्पेन्सरी मे चिकित्सकक पद पर नियुक्त भऽ गेलाह। बाद मे हिन्दू सेवा सदन मे चिकित्सक तथा रानी चन्द्रावती श्यामा आयुर्वेदिक महाविद्यालय मे चिकित्सा शास्त्रक अध्यापक नियुक्त भेलाह। दर्शनानन्द आयुर्वेदिक कालेजो मे हिनक प्राध्यापक होयबाक उल्लेख भेटैछ[1]। काशी प्रवासक अवधि मे 'किरण'क आन्दोलनकारी तथा साहित्यकारक

1. परिषद-पत्रिका (किरण स्मृति अंक, 1990 ई.)

व्यक्तित्वक निर्माण भेल। वर्ष 1943 ई॰ मे किरण साहित्य शास्त्री तथा 1954 ई॰ मे आइ॰ ए॰क परीक्षा मे उत्तीर्णता प्राप्त कयलनि तथा अपन ज्ञानार्जनक उद्योग कें जारी रखलनि। बाद मे पारिवारिक कारण सँ परदेश सँ स्वदेश घुरि आयब हिनका लेल अनिवार्य विवशता भऽ गेलनि तथा ई गाम आबि वर्ष 1948 ई॰ सँ गामक निकटस्थ लक्ष्मीश्वर एकेडेमी, सरिसब मे अध्यापन करय लगलाह। हिनक ओहि समयक अध्यापनक सम्बन्ध मे डा॰ शिवशङ्कर श्रीनिवास अपन एक लेख[1] मे लिखने छथि "अद्‌भुत लोकप्रियता ओ अपूर्व सम्मान पौलन्हि मास्टर साहेब। स्कूल सँ समाजधरि लोकप्रिय। कर्मठ, इमानदार, विद्वान ओ छात्र कें अपन बूझि पढ़ौनिहार छलाह ओ। विद्यार्थी मे जे जतेक तेज वा गरीब हो ओ हुनका ततेक प्रिय। निर्बलक बलराम छलाह ओ। एहि लेल हुनका कतेको बेर कठिनाइ भेलन्हि—संघर्षक भोग भोगऽ पड़लनि, परन्तु ताहि लेल हुनका ककरो डर-भर वा कोनो परवाहि नहि छलनि। विद्यार्थीगण हुनका समीप अत्यन्त नम्र ओ निर्भीक भऽ उपस्थित होअय। हुनक कहब रहनि-विद्यार्थी डरि गेल तँ पढ़त की। ओकरा अपनत्वक बोध होइ तेना पढ़वियौ।"

'किरण'क समग्र व्यक्तिक निर्माणक सम्बन्ध मे डा॰ भीमनाथ झा अपन निबन्ध 'मैथिली संघर्ष महाकाव्यक नायक : किरणजी[2] मे अत्यन्त संतुलित रूप सँ विचार कयने छथि। ओ कहैत छथि :— "साहित्यक सर्वाङ्गीण विकासक प्रयास हो कि राजनीतिक माध्यमे क्षेत्रक उद्धारक आयास, मैथिली कें विश्वविद्यालय मे प्रवेशाधिकारक लड़ाइ हो कि भाषा-आन्दोलनक युद्ध मे प्रतिपक्षी पर चढ़ाइ, जन-जनमे स्वभाषा-प्रेम जगयबाक अभियान हो कि गाम-गाम मे साहित्यिक-सांस्कृतिक चेतनाक शंखनाद करबाक संधान, मिथिला-मैथिली द्रोही कें ताकि-ताकिकऽ माटि चटौनाइ हो कि माटि मे लेढ़ायल रत्नकें, अपने झाड़ि-पोछि कऽ समाजक सोझाँ रखनाइ किरणजी सभकाज स्वयं कयलनि, ककरो अढ़ौलनि नहि कहियो।"

+ + + +

"(अजुका दृष्टि सँ कुख्यात) पंजी-प्रथाक हिनक खास दृष्टिकोण छल जे बहुतोकें प्रिय नहि, मुदा हिनका मतेँ यैह सत्य छल आ सत्यकें नुकाबय ई नहि जनैत छलाह, भनहि ओ कतबो कटु किएक ने हो। विषय सामाजिक-राजनीतिक हो कि साहित्यिक-काव्यशास्त्रीय सभ पर ई अपन स्वतंत्र धारणा बना लैत छलाह आ तकरा निर्भीकता सँ प्रचारित करैत छलाह। साफ-साफ बाजब हिनक स्वभाव छल, जे हिनक व्यक्तित्वकें विवादास्पद तऽ बना दैत छल, मुदा 'दुर्लभ' सेहो बनौने रहल।"

ई 'किरण'क ईर्ष्य कर्मठताक ज्वलन्त प्रमाण थिक जे ओ लगभग पचपन वर्षक अवस्था मे वर्ष 1961 ई॰ मे बिहार विश्वविद्यालय सँ॰ बी॰ए॰ तथा वर्ष 1964 ई॰ मे

---

1. डा॰ किरण : हमर मास्टर साहेब (कर्णामृत : किरण स्मृति अंक, 1989)
2. कर्णामृत (किरण स्मृति अंक, 1989)

अठावन वर्षक अवस्था मे एम. ए. (मैथिली) क परीक्षा मे उर्त्तीर्णता प्राप्त कयलनि। एम.ए. कयलाक किछु वर्ष बाद 1967 ई. मे 'किरण' चन्द्रधारी मिथिला कालेज, दरभंगामे व्याख्याताक पद पर नियुक्त भेलाह तथा मैथिली साहित्यक आदिपुरुष ज्योतिरीश्वर ठाकुरक कालजयी कृति 'वर्ण रत्नाकर' पर 'वर्णरत्नाकर : काव्यशास्त्रीय अध्ययन' नामक विस्मयकारी शोध-प्रबन्ध लिखि बिहार विश्वविद्यालय सँ वर्ष 1969 मे पीएच-डीक उपाधि प्राप्त कयलनि। एकटा कर्मठ, संघर्षशील तथा सफल जीवन जीनिहार व्यक्ति तथा रचनाकार 'किरण'क निधन 9 अप्रैल 1988 ई. कैं भऽ गेलनि। अपन अटूट लगन तथा अक्लान्त अध्यवसायक बल पर अपन भाग्यरेख कैं बदलि देनिहार महापुरुष 'किरण' तऽ विधिक विधानक अनुसार दुनिया सँ चलि गेलाह, मुदा हिनक यशःकाय हिनक परवर्ती पीढ़ी कैं बहुतो काल धरि संघर्ष ओ साधनाक अमूल्य पाठ पढ़बैत रहत।

काशी मे छात्र-जीवने सँ मैथिली लेल किंवा सामान्यजनक प्राप्य लेल आन्दोलनक जे प्रवृत्ति 'किरण' मे अंकुरित भेलनि, ओ आगाँ जा झमटगर गाछक रूप मे परिणत भऽ गेलनि। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय मे मैथिलीक स्वीकृति मे हिनक भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण छलनि। बाद मे मैथिली लेल आन्दोलन कयनिहार 'किरण' आ साहित्यकार 'किरण' मे अविच्छिन्नता स्थापित भऽ गेल आ ई निर्णय करब ककरो लेल धर्मसंकटक गप्प भऽ गेल जे 'किरण' भाषाक उन्नति लेल साहित्यक सृजन कयलनि कि साहित्यक विकास लेल भाषाक आन्दोलन मे लागल रहलाह। डा. भीमनाथ झा प्रायः सर्वांशतः सत्य कहैत छथि जे ''आन्दोलनात्मक ओ सर्जनात्मक-भाषा-सेवाक जे ई दू गोट माध्यम अछि, किरणजी दुनू क्षेत्र मे अग्रिम स्थानक अधिकारी छथि।''[1]

अपन जीवनकाल मे पर्याप्त यश तथा लोकक आदर-स्नेह तऽ 'किरण' कैं प्राप्त भेलनि, मुदा हिनक व्यक्ति आ साहित्यक यथार्थपरक मूल्याङ्कन संभव नहि भेलनि, नहि भऽ सकलनि। एहि प्रसंग रामलोचन ठाकुरक मार्मिक खेद[2] प्रकारान्तर सँ सत्येक उपस्थापन थिक—"दुःखक बात जे हमरालोकनि एहि महान व्यक्तिकैं नहि चीन्हल। हमरालोकनि हिनक कोरा धोती, कोकटी कुर्ता, झरपटही साइकिल आ कठही छत्ता सँ भरिसक हिनक महानता कैं नपबाक चेष्टा करैत रहलहुँ। असल मे हमरालोकनि विद्यापतियो कैं हुनक जीवनकाल मे नहि चीन्हल।

''... ओना जँ मानियो ली जे किरणजीक साहित्य मे पाण्डित्यक प्रकर्ष नहि तऽ से उचिते, कारण हुनका ने तऽ अपन पाण्डित्यक प्रदर्शन काम्य छलनि आ ने पण्डितक लेल ओ लिखलनि। जतयधरि कल्पनाक उत्कर्षक प्रश्न अछि से किरणजी-सन सत्यानुसंधानी, वास्तववादी लोक सँ कपोलकल्पनाक आशाये मूर्खता थिक। मैथिलीक

---

1. परिचायिका
2. नूतन किरण (कर्णामृत, किरण स्मृति अंक, 1989)

आलोचकलोकनि एहने मूर्खताक प्रमाण देलनि किरण-साहित्यक अवहेलना कऽ। आंखि मूनि सूर्यक अस्तित्व कें कतेक दिन अस्वीकारल जा सकैछ ?"

'किरण' पाण्डित्य-प्रदर्शन लेल नहि लिखलनि, पण्डितक लेल नहि लिखलनि— रामलोचन ठाकुरक एहि स्थापना सँ सामान्यतः ककरो मत-भिन्नता नहि होयतैक। हम एहि स्थापना मे एतबा आर जोड़ि देबय चाहैत छी जे ओ अपन अधिकांश रचना पण्डितक मनःस्थिति ओ सोच मे रमि कऽ पण्डितक अन्दाजो मे लिखब स्वीकार नहि कयलनि। ओ अपन कथ्यक प्रकृति सँ परिचित रहथि आ अपन श्रोता-पाठकोक सम्बन्ध मे 'किरण'क मोन मे कोनो भ्रम नहि रहनि। ई बहुत संतोषक विषय थिक जे अपन बात कहबा लेल भाषा एवं भङ्गिमा (वरु ओ अनलंकृते किया ने हो) तथा श्रोता आ पाठकक सम्बन्ध मे जे ओ धारणा बनौने रहथि तकरा मे मूलरूप सँ कोनो संशोधन करब किरण कें कहियो आवश्यक नहि बुझा पड़लनि। तें जाहि व्यक्ति ओ वर्ग कें ई सम्बोधित कयलनि, ओ व्यक्ति आ वर्ग हिनक बात आत्मीयतापूर्वक गुनलक, कारण कहनिहार आ सुननिहारक बीच एकात्मता स्थापित कऽ लेब 'किरण'क सहज विशिष्टता रहनि। ई सिद्धि हासिल भऽ गेलाक बाद एकटा रचनाकार लेल आर की काम्य रहि जाइत छैक ! एहि प्रसंग मे हिन्दीक प्रख्यात छायावादी कवि पंतक कथन उद्धृत करय चाहैत छी जे 'किरण'क साज-सँवार सँ हीन भाषाक जय-जयकार मे हमरा सभक स्वर मे स्वर मिला रहल अछि :—

'तुम वहन कर सको जन-जन मे मेरे विचार'
वाणी मेरी चाहिए तुम्हें क्या अलङ्कार !

स्थापना

उनैसम शताब्दीक अंतिम दू तथा बीसम शताब्दीक प्रथम दू दशक एहि देशक राजनीति ओ साहित्यक लेल बहुत महत्त्वपूर्ण काल रहल अछि। एहि अवधि मे पराधीन भारतक उदास तथा निराश लोक-चेतना मे किछु एहन राजनीतिक स्फुरण भेल जे आगाँ स्वाधीनताक कामनाक रूप लऽ लेल आ ई कामना क्रमशः प्रबलतर होइत गेल जे 15 अगस्त 1947 कैं देशक स्वतंत्रता क रूप मे मूर्त्त भेल। एहि देशक राजनीतिक रङ्गमञ्च पर एही अवधि मे दादा भाइ नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, गोपाल कृष्ण गोखले, डब्ल्यू. सी. बैनर्जी, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पाल, लाला लाजपत राय, महात्मा गांधी आदि-सन समर्थ तथा दृष्टि-सम्पन्न व्यक्तित्वक पदार्पण भेल छल, जिनका लोकनिक प्रयास सँ स्वतंत्रता-संग्रामक गति कैं अपेक्षित वेग एवं उचित दिशा प्राप्त भेलैक। साहित्योक क्षेत्रमे विभिन्न भारतीय भाषाक साहित्यक लेल ई काल सामान्यतः आधुनिक लेखनक सूत्रपातक काल सिद्ध भेल, जखन एहि देशक धन-धान्यक लूट-खसोट मे स्थिर-चित्त लागल अंग्रेजी सत्ताक निरङ्कुश शासनक अधीन बनल लोकक नव उत्पादकता-सम्बन्ध सँ उत्पन्न भेल नव सामाजिक चिन्ता अपन अभिव्यक्ति लेल सर्वथा नव ढंग सँ प्रस्तुत भेल।

आधुनिक मैथिली साहित्यो लेल ई अवधि पर्याप्त मांगलिक रहल। एहि अवधि मे मैथिली साहित्यक कतोक विभूति एहि धरा-धाम मे उत्पन्न भेलाह, जिनका लोकनिक लेखन सँ मैथिली साहित्य मे आधुनिक चेतनाक प्रवाह तेजगर भेल तथा ओकर अभिव्यक्ति मे अपेक्षित दक्षता तथा स्तरीयता आयल। एहन किछु साहित्यकार मे कविवर सीतारामझा, कविशेखर बदरीनाथ झा, प्रो. रमानाथ झा, डा. काञ्चीनाथ झा 'किरण', काशीकान्त मिश्र 'मधुप', भुनेश्वर सिंह 'भुवन', ईशनाथ झा, प्रो. हरिमोहन झा, तंत्रनाथ झा, सुरेन्द्र झा 'सुमन', वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', आरसी प्रसाद सिंह, उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' तथा ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपदम'क नाम प्रमुख थिक। एहि रचनाकारलोकनिक सराहनीय एवं श्लाघनीय अवदान सँ आधुनिक मैथिली साहित्यक भिन्न-भिन्न विधा कैं समयोचित संस्कार तथा युग-सम्मत वाणी प्राप्त भेलैक।

मैथिली साहित्य मे कविकोकिल विद्यापति ठाकुरक गीत-बन्ध परम्पराक धार लगभग पाँच सै वर्ष धरि अवाधित गति सँ प्रवहमान रहल। एहि निर्वाध प्रवाह मे पहिल बाधा अठारहम शताब्दीक मनबोध अपन कथा-काव्य 'कृष्णजन्म' सँ ठाढ़ कयलनि, मुदा ओ प्रवाह कैं मोड़ि नहि सकलाह। अठारह सै एकतीस मे उत्पन्न कविवर चन्द्र झा (प्रसिद्ध चन्दा झा) अपन रामायण, मुक्तक-काव्य तथा विद्यापतिक पुरुष-परीक्षाक मैथिली अनुवाद द्वारा मैथिली कविता तथा गद्यक क्षेत्र मे एकटा सर्वथा नव क्षितिजक उद्घाटन कयलनि, जतऽ सँ मनुक्खक राग-बोध सँ इतर मानवीय तथा सामाजिक बोधोक प्रति दृष्टि-निक्षेप करब साहित्यकार लोकनिकैं आवश्यक प्रतीत होबय लगलनि। जीवनक रमणीय राग-सम्मत तथा आध्यात्मिक संवेदना सँ फराक पड़ल अनुभूतियो सभकैं लेखनक विषय-क्षेत्र मे अनबाक अनिवार्यता-बोधे मे कतौ मैथिली साहित्य मे आधुनिकताक प्रवेश कैं रेखाङ्कित कयल जा सकैछ।

मैथिली कविताक क्षेत्र मे कविवर चन्द्र झाक शुभागमनक कालमे देश ओ समाजक भौतिक स्थिति तथा वैचारिक दृष्टिकोण मे पर्याप्त परिवर्तन भऽ गेल छल। देश मे विदेशी सँ देशी बनल मुसलमानी आधिपत्य कैं समाप्त कऽ बरोबरि लेल विदेशी बनल रहयवला अंग्रेजी शासन पूरा ताम-झामक संग प्रतिष्ठित भऽ गेल छल आ एतुका दीन-हीन जनता सँ छीनल धन आब एहि देशक सामन्त वर्ग कि वणिक् समुदाय कि हिनका लोकनिक चाटुकार वर्गक झोरी मे जयबा ओ हुनका सब लेल अकूत सुख-सुविधा कि निर्वाध रंग-रभसक ओरिआओन करबाक स्थान पर ब्रितानी राजसत्ताक अत्याचार आ लूटक बल पर अशेष बनल राजकोष मे जमा होबय लागल छल, ओतुक्का जन-समुदाय लेल (विशेषतः पैघ-पैघ जमींदार तथा व्यापारी वर्ग लेल) सोनक स्थान पर हीराक ओरिआओन किंवा ओहि समुदायक दस्यु प्रवृत्ति कैं आर प्रबल बनयबा मे सहयोग कऽ रहल छल। भारतक वृहत्तर जन-समुदाय आ जन-मानस घोर उत्पीड़ित तथा असहनीय ढंग सँ संतप्त छल। तैं जखन कविवर चन्द्र अपन पारी खेलाय साहित्यक मैदान मे अयलाह तऽ स्वाभाविक रूप सँ हुनका साहित्यक प्रयोजन किछु बदलल-सन लगलनि। फलतः हुनक काव्य-दृष्टि ओ काव्य-भूमि विद्यापति तथा हुनक चरण-चिह्न पर आँखि मूनि कऽ अगाध श्रद्धासङ्ग चलैत समस्त कविलोकनिक काव्य-दृष्टि एवं काव्य-भूमि सँ पृथक् भऽ गेलनि। कविवर चन्द्र ओ हुनक परवर्ती कविवर सीताराम झाक कविता सँ मैथिली मे कविताक विषय-क्षेत्रक पर्याप्त विस्तार भेल। कविताक विषय-क्षेत्रक विस्तार संग समय तथा समाज कैं देखबाक दृष्टियो मे परिवर्तन भेल, जे पारम्परिक सोच तथा अभिव्यक्ति कैं सर्वथा नव अवगति देल। 'यात्री' धरि अबैत-अबैत मैथिली साहित्यक बगयक संग-संग ओकर वाणी सेहो बदलि गेलैक।

उचित कथा हम कहब सबहिं कैं
धनी रहू कि रङ्क ।

आँच साँच मे लागि सकय नहि
तैं छी हम निश्शङ्क ।।

'सत्य सन्देश'क वर्ष 1944 क एक अङ्क मे प्रकाशित अपन कविता मे उचित कथा कहबाक उल्लिखित खतरनाक उद्घोषणा कयनिहार काञ्चीनाथ झा 'किरण' मैथिली मे एकटा प्रगतिधर्मा साहित्यकार तथा जीवटवला भाषा-संग्रामीक नाम थिक। हुनका कोनो तरहें राजनीतिक नहि कहल जा सकैछ, मुदा मैथिली भाषा तथा साहित्यक उत्थान लेल हुनक सजगता ओ संघर्ष कोनो जागरूक एवं क्रान्तिमना राजनीतिज्ञ सँ अधिक प्रखर रहलनि अछि। मैथिली साहित्यक नाप-जोख वला आलोचक-वर्गक एहि वा ओहि खेमा द्वारा स्वीकृत कविक वृहत्त्रयी मे ओ सम्मिलित नहि कयल गेल छथि, मुदा अपना पीढ़ीक कवि-समुदाय मे 'किरण' अतिशय आदर तथा स्नेहक सङ्ग लेल जाइत एकटा कविक नाम थिक, जिनक दृष्टि प्रगतिकामी रहलनि अछि आ जे परम्पराक विकसित ओ उदार चेतना सङ्ग आत्मीयता राखब तथा कट्टरपंथी मान्यताक डटि कऽ विरोध करब एकटा मनुष्य ओ साहित्यकारक दृष्टिएँ अपन धर्म बुझैत रहलाह। 'किरण' मैथिलीक शीर्षस्थ कथाकार सभमे एक नहि मानल जाइत छथि, तथापि हिनक अद्भुत दाम्पत्य-कथा 'मधुरमनि' मैथिलीक आङुर पर गनबा जोगर किछु कथा मे अप्रतिम थिक। हम अपन स्थापनाक प्रति पूर्ण साकांक्ष रहैत ई कहय चाहैत छी जे हमरा सभक मैथिलीक कथाकार 'किरण' हिन्दी कथाक इतिहास-पुरुष चन्द्रधर शर्मा गुलेरी-सन ऐतिहासिक तऽ नहि मुदा तात्विक महत्त्वक कथाकार छथि। गुलेरीक मात्र तीनटा कथा उपलब्ध ओ प्रकाशित छनि, जाहि मे मात्र एकटा (उसने कहा था) लऽ कऽ ओ अमर भऽ गेल छथि। 'किरण'क सभ तरहक कथा मिला कऽ मात्र पन्द्रह टा कथा अखनधरि उपलब्ध ओ प्रकाशित छनि। गुलेरीक स्थायी यशक श्रेय 'उसने कहा था' कें छैक, 'किरण'क 'मुधर मनि' हुनका मैथिली-कथाक इतिहास मे अमरत्वक अधिकारी बना देने छनि।

चौदहम-पन्द्रहम शताब्दी सँ व्यवस्थित रूपें साहित्य-सर्जन मे लागल मैथिलीक साहित्यकारलोकनि मे 'किरण' सन बहुआयामी व्यक्तित्वक लोक तकलो उत्तर (प्रायः) नहि भेटत। काञ्चीनाथ झा 'किरण' एक सङ्ग कवि-कथाकार-नाटककार-निबंधकार, आलोचक, अध्यापक, समाज-सुधारक, वैद्य तथा भाषा-आन्दोलनक दुर्द्धर्ष सेनानीक भूमिका भक्तक निष्ठा, प्रेमीक राग-वृत्ति ओ संग्रामीक अकूत ऊर्जा सङ्ग आधा शतक सँ अधिक समय धरि निवाहैत रहलाह। स्वाभाविक छैक जे एना खण्ड-खण्ड मे मन तथा मस्तिष्क सँ विभक्त व्यक्ति लेल अपना कार्य मे सर्वाङ्गीण पूर्णता तथा सार्वत्रिक व्यापकता आनब एकटा कठिन कार्य थिक। 'किरण' अपन बहुरंगी व्यस्तताक कारण लेखन लेल यथेष्ठ अवकाश ओ सुविधा प्राप्त नहि कऽ सकलाह आ तैं मात्रा एवं कलाकारिताक दृष्टि सँ एहि दीर्घ-जीवी तथा दीर्घ-कालिक साहित्य सर्जक लेल पर्याप्त

मात्राक सङ्ग --सङ्ग सजाओल—सँवारल साहित्यक सर्जन संभव नहि भेलनि। एहि संदर्भ मे ओ स्वयं व्यथित मन सँ कहने छथि जे "आइ बूझि पड़ैए जेना किओ कोशिकन्हा मे कतराक झाड़ आ झौआ कासक जंगल कटबामे लागल छल, सुगर-हरिन कैं बैलेबा मे लागल छल आ तकरा सँ साँझ खन पूछल गेलैक जे तौं कतेक रोपलैं, कतेक बिआ उपाड़लैं, तकर हिसाब दे, तँ हमर यैह स्थिति भऽ जाइए।" किरणक ई कथन मार्मिक रूप सँ सत्य छनि। पुस्तकाकार रूप मे प्रकाशनक दृष्टि सँ 'किरण' अपन समकक्ष ओ समकालीन रचनाकारलोकनि मे प्रायः सर्वाधिक उपेक्षित रहलाह। मैथिली मे प्रकाशनक दुःस्थिति एहि उपेक्षाक प्रधान कारण कहल जा सकैछ। हिनक प्रकाशित रचना मात्रा मे बहुत नहि होइतो पर्याप्त प्रभावक सृजनमे सफल भेल आ हिनक ईर्ष्य यशोलाभक पृष्ठभूमि मे हिनक विषय-उपस्थापनक दक्षता, अभिव्यक्तिक सहजता-सरलता ओ निश्छल तथा निष्कम्प वैचारिक आग्रह कैं अनायास रेखाङ्कित कयल जा सकैछ। 'किरण'क व्यक्तित्व एवं साहित्यक सम्बन्ध मे हुनक समकालीन कवि—कथाकार एवं विचारक सुरेन्द्र झा 'सुमन'क निम्न टिप्पणी सँ पर्याप्त खुलासा होइछ—

"वाणी मे स्पष्टता, विचार मे प्रौढ़ता, चिन्तन मे मौलिकता, सामाजिक जीवन मे सुधार करबाक दुर्दान्त आग्रह आ तदनुकूल आचरण, दलित, पीड़ितक प्रति सहज-सहानुभूति, क्रान्तिक प्रखरता तथापि शांतिक रम्यता, सिद्धान्त मे कठोर अथच व्यवहार मे कोमल, किरणजीक चरित्रक रूपरेखा थिक।

"...प्रौढ निबन्ध, निर्लेप आलोचना, वास्तविकता ओ कल्पना सँ समन्वित प्रगतिवादी कवित्व, नाट्य एकाङ्कीक रससिद्ध विन्यास, समाज-सुधार पर आधारित सुरुचिपूर्ण उपन्यास, गल्प किरणजीक कलमक जादूक उदाहरण अछि।"

'सुमन'क ई टिप्पणी सेहो ओही छवि-छटा एवं साहित्य-संस्कार सङ्ग लिखल गेल अछि, जाहि छवि-छटा ओ संस्कारक अपन रचनात्मको लेखन मे प्रयोग हेतु ओ चर्चित एवं प्रशंसित होयबाक अतिरिक्त आलोचितो होइत रहलाह अछि। तखन 'किरण'क व्यक्तित्व तथा साहित्यक सम्बन्ध मे 'सुमन'क एहि मान्यताक प्रति हुनको लोकनि कैं विशेष विरोध नहि होयतनि जे 'किरण'क साहित्यक उदार प्रशंसक नहि छथि अथवा 'किरण'क साहित्य मे प्राचीन उदात्तता तथा आधुनिक वस्तु-परकताक बीच समन्वय स्थापित करबा मे जिनका अशौकर्य होइत छनि। सत्य तऽ ई थिक जे हिनक भाषाक आन्दोलनकारीक समर्पित व्यक्तित्व सँ परिचितिक कारण हिनक साहित्यकारक व्यग्र व्यक्तित्वक आकलन मे लोक कैं असुविधा होइत रहलैक अछि, जाहि सँ हिनका क्षति भेलनि अछि।

किछु गोटेकैं 'किरण'क कवि-दृष्टि प्रगतिशील होइतो 'यात्री'क समान स्फीत तथा स्पष्ट नहि लगतनि। ओ कथाकारक रूपमे अपन समकालीन प्रो॰ हरिमोहन झा कि मनमोहन झा-सन सीटल ओ संतुलित कथाकारो नहि मानल गेलाह अछि। ओ प्रो॰ रमानाथ झा-सन प्रथित-प्रशंसित चिंतक, आलोचक कि निबन्धकारो नहि मानल जाइत

छथि, मुदा हिनक साहित्यकार तथा भाषा-संग्रामीक समग्र अवदान कोनो समकालीन साहित्यकाक अवदान सँ हीन कि न्यून नहि कहल जयतनि। मैथिली भाषा ओ साहित्यक सर्वतोमुखी विकासक लेल कयल गेल उद्योग मे 'किरण'क योगदान समर्पित सँ समर्पित साहित्यकारक समतुल्य मानल जायत। व्यक्तित्व एवं विचार मे एहन साम्य रखनिहार रचनाकार मैथिली मे वड़ थोड़ भेटताह।

मैथिली भाषा लेल हिनक आन्तरिक अनुराग तथा एकर विकास लेल कयल गेल निष्काम संघर्षक सम्बन्ध मे डा. भीमनाथ झाक विचार सर्वथा स्वीकारयोग्य लागत— "हिनक हृदय मे मैथिली-प्रेम कूट-कूट कऽ भरल छनि। संगठन-क्षमता सेहो हिनका मे वेजोड़ छनि। अपन क्षेत्रक लोककेँ जमा कऽ ओकरा सभक हृदय मे मिथिला-मैथिलीक ममता भरवा मे, विद्यापतिपर्वक आयोजन करबा मे, ओकर प्रचार करबा मे हिनक प्रेरणा स्तुत्य अछि। अखिल भारतीय मैथिली-साहित्य परिषद्क सचिव सेहो ई रहल छथि। वस्तुतः 50-55 वर्ष मे मैथिली आन्दोलनक जतऽ जे गतिविधि रहल अछि, सभठाम प्रत्यक्ष किंवा परोक्ष रूपमे किरणजी रहलाह अछि।[1]"

कोनो भाषा मे साहित्य-सर्जन कयनिहार तथा ओहि भाषाक विकासक लेल अवसरक जोगाड़ हेतु संघर्ष कयनिहार लोकनिक स्पष्टतः दू वर्ग रहल अछि। साहित्य सर्जना मे गंभीरतापूर्वक लागल व्यक्ति केँ भाषा आन्दोलनक दुर्दम सेनानीक भूमिकाक निर्वाह कठिन लगैत रहलैक अछि। देश तथा विदेशक स्तरो पर एहि दुनू प्रकारक क्षमता सँ सम्पन्न साहित्यकारक संख्या बड़ थोड़ भेटत। यदि सुच्चा सत्य टा कहल जाय तऽ हम ई कहब जे साहित्य-सर्जना मे व्यस्त साहित्यकारलोकनि मे अधिकांश केँ भाषा आन्दोलन-सन 'असाहित्यिक' गतिविधि मे कोनो देखार रुचियो नहि रहैत अयलनि अछि।

साहित्यकार 'किरण'क व्यक्तित्व मे रचनाकार तथा आन्दोलनकारीक प्रकृत गुणक एक-सङ्ग अद्भुत समावेश देखबा मे आओत। ओ अपन भाषा-सेवीक व्यक्तित्वकेँ साहित्य-सर्जकक व्यक्तित्व सँ कहियो हीन वा फराक नहि मानलनि आ इएह कारण थिक जे एहि दुनू क्षेत्र मे ओ समान निष्ठा तथा ऊर्जाक सङ्ग सक्रिय रहलाह। हिनक व्यक्तित्वक ई दुनू पक्ष एक-दोसरा केँ प्रभावित करितो हिनक समग्र व्यक्तित्वकेँ कोनो क्षति नहि पहुँचौलक। 'किरण'क मोन मे ई आस्था बरोबरि दृढ़ बनल रहलनि जे भाषाक सम्यक् विकासक बिना साहित्यक वास्तविक उत्कर्ष संभव नहि थिक, तेँ एकटा साहित्यकार लेल दुनू मोर्चा पर समान नेह तथा निष्ठा सङ्ग संघर्ष करब अनिवार्य थिक।

भाषाक विकास लेल संघर्षशील एवं समर्पित सेनानी तथा साहित्यक समृद्धि लेल सत्प्रयास करैत साहित्यकार 'किरण'क व्यक्तित्वक अविच्छिन्नताक सम्बन्ध मे हिनक काव्य-संकलन 'कतेन दिन बाद' क सम्पादक द्वय (डा. कैलाशनाथ झा एवं शिवशंकर श्रीनिवास) क एहि अभिमत सँ सामान्यतः सहमत भेल जा सकैछ —

---

1. परिचायिका—डा. भीमनाथ झा

"किरण जी जहिया किछु करबाक बात सोचलनि ओ भाषा (सँ सम्बद्ध होइत—विनिबन्धकारक जोड़) छल। तें पहिने ओ लोकक भाषाक प्रति उदास मनःस्थिति के जगेबाक प्रयास कयलन्हि। एहि जगेबामे ओ वैह पारम्परिक सुअदगर-मीठगर गीत कैं अपनौलन्हि।"

उचित कथा कहबाक आग्रही 'किरण' जीवन ओ साहित्य मे समान रूप सँ उचितवक्ता बनल रहलाह, जे हुनक चारित्रिक एकरूपता एवं दृढ़ताक असंदिग्ध परिचायक थिक। ओ एहन उचितवक्ता रहथि जे उचितक पारम्परिकता मे विश्वास नहि करैत रहथि तथा समयानुकूल ओकरो नव-संस्कार आवश्यक बुझैत रहथि।

साहित्य

(i)

मैथिली अकादमी, पटना द्वारा आयोजित एकल काव्य-पाठ प्रारंभ करबा सँ पूर्व 'किरण' अपन लेखनक पृष्ठभूमिक चर्च करैत कहने रहथि जे—"काशी सँ घुरि कऽ गाम अयलहुँ। मैथिली साहित्य परिषद्क मंत्री भेलहुँ। एहि क्रम मे कवि सम्मेलनक आयोजन कयल। मधुपजी आ सुमनजी हमरा संगे रहथि। दुनू गोटे संगी थिकाह। वयसैं आब मधुपजी चारि मास जेठ हमरा सँ साबित भेलाह अछि, लेकिन बीस-पच्चीस-तीस बरख धरि हमर ओ छोट भाइ जकाँ अनुगमन करैत रहलाह। मधुपजी आ समुनजी कवि-सम्मेलन मे कविता पढ़थि। मुधप, सुमन, किरण—हमहुँ देखाउस मे उपनाम राखि लेलहुँ। ओ दुनू गोटे जखन कविता पढ़थिन तँ हमरो (लोक) कहय पढ़ऽ लै, अगत्या हम की करब तँ किछु कविता लिखी। हमरा कवि बनऽ पड़ल हुनके लोकनिक सम्पर्के। यदि मधुपजी-सुमनजी हमर संगी नहि रहितथि आ प्रायः ओ विवशता हमरा संग नहि रहैत जे 'मैथिल सुधाकर' ओ 'मिथिला मोद' क प्रकाशन कालमे छल, तँ हम कवि नहि होइतहुँ—हमरा सैह विश्वास अछि। सुनैत छी जे कवि जन्म लैत छथि, बनैत नहि छथि। हम तँ जन्म लेलहुँ एहन व्यक्ति भऽ कऽ जाहि व्यक्तिक टीपनि मे कोनो विद्या नहि छैक। तरहत्थीक केशवत हमर टीपनि मे विद्या लिखल अछि। गरीब घरक संतान, ताहि संग भलमानुस घरक, जे व्यक्ति बोनि नहि क' सकैए, बड़ अनुकम्पा भऽ गेलनि तँ राज दरभंगा मे भनसिया-तनसियाक काज भेटि गेलै। एहि स्थितिमे कवि बनब हमरा हेतुएँ कल्पनाक बाहरक वस्तु छल। तइयो हम कविता लिखलहुँ।"

अपन कविक निर्माणक सम्बन्ध मे 'किरण'क ई आत्म-स्वीकृति अधिकांश व्यक्ति कैं अजगुत लगतनि। किछु गोटेकैं एहि आत्म-स्वीकृति मे अनपेक्षित विनयशीलतोक भ्रम भऽ सकैत छनि, मुदा ई सत्य थिक जे मात्र कवि बनबाक उद्देश्य संग 'किरण' कविताक क्षेत्र मे प्रवेश नहि कयने रहथि।

117126
9.12.04

मातृभाषाक विकास हेतु आन्दोलन मे, पत्रिकाक प्रकाशन मे रुचि लेनिहार 'किरण' लेल कवि बनब, कथाकार बनब कि आन विधाक रचनाकार बनब आवश्यक भेलनि आ आवश्यकतानुसार ओ कवि-कथाकार-नाटककार बनि गेलाह। अपन लेखकीय जीवनक आरम्भ मे मातृभाषाक प्रति उदासीन जन-मानस मे ओकरा प्रति अनुराग उत्पन्न करबा लेल 'किरण' विधि-व्यवहारक गीत, समदाउन, चैतावर, नचारी, महेशवानी, साँझ, पराती आदि विभिन्न तरहक पारम्परिक ढंगक रचना कयने रहथि। वादमे भाषा-आन्दोलनक क्रममे हिनक अन्तर मे ई बोध जगलनि जे समाजक शोषित-पीड़ितक, जे समाजक बहुसंख्यक होइछ, उत्थान बिना भाषाक काम्य विकास संभव नहि भऽ सकैछ। तैं शोषित-पीड़ित बहुसंख्यकक चिन्ता हिनक रचनाकारक मुख्य चिन्ता बनि गेलनि आ ओ समाजक ओहि सभ संस्कार ओ चालि-चलनक आलोचना कयलनि जे ओहि वर्गक हितक विरुद्ध छल। ओ प्रगतिशील दृष्टि सँ समाजक सभ अङ्ग-उपाङ्ग पर विचार करब आरंभ कयलनि एवं अपन निष्कर्षक अनुसार अपन विषय-वस्तु कैं संस्कार देलनि।

"1930 ई॰ ओ समय छलैक जखन हम मैथिलीक क्षेत्रमे आवि गेलहुँ।" 'किरण'क एहि कथन[1] सँ भाषा एवं साहित्यक क्षेत्र मे हिनक पदार्पणक समय निश्चित होइछ। ई ओ समय छल जखन देश मे स्वाधीनता-संग्रामक सरगर्मी पर्याप्त बढ़ि गेल छल। महात्मा गांधीक नेतृत्व मे एक दिस जतऽ असहयोग आन्दोलन एवं सत्याग्रह चलि रहल छल, ओतहि दोसर दिस क्रान्तिकारी लोकनि पराधीनता सँ मुक्ति हेतु अपना तरहें प्रयासरत रहथि। स्वराज आन्दोलन मे भाग लेबाक कारण 'किरण'क अभिभावक कैं चिन्ता भेलनि आ ओ हिनका काशी पठा देलथिन। मैथिलीक क्षेत्र मे अपन प्रवेशकालक स्थिति ओ मनःस्थितिक चर्च करैत 'किरण' कहने[2] छथि---

"स्वराज आन्दोलन चलि रहल छल। हम ओहिमे प्रवेश क' गेलहुँ तँ हमर जेठ भाइ लोकनि हमरा काशी पठा देलनि। ओतऽ दुनू काज चलैत छलैक। हड़तालो होइक, जुलूसो बहराइक आ अपन-अपन भाषा-साहित्यक काज सेहो होइक। मराठी, मलयालम आदि भाषा-साहित्यक परिषद्क वार्षिक सम्मेलन मे बड़ उल्लास सँ लोक भाग लीअय। हम पता केलियैक तऽ बुझायल जे मैथिलक ने कोनो संस्था अछि एहिठाम आ ने मैथिली स्वीकृत अछि। हमरा हृदय पर एकटा चोट लागल। ओएह अपमान-बोध हमरा मैथिलीक क्षेत्र मे प्रवेश करा देलक।"

हृदय पर लागल ओहि चोटक कारण 'किरण' मैथिल छात्रक संघटन कयलनि तथा हिन्दू विश्वविद्यालय मे मैथिलीक मान्यता हेतु महामना मदनमोहन मालवीय समक्ष

---

1. मैथिली अकादमी, पटना मे एकल काव्यपाठक अवसर पर 'किरण' द्वारा प्रस्तुत आत्म-परिचय मे (मोहन भारद्वाज द्वारा सम्पादित 'हालचाल' मे छपल)
2. तदैव

मैथिली कें हिन्दी सँ स्वतन्त्र भाषा सिद्ध कऽ हुनका राजी कयलनि। नवम्वर, 1933 क सीनेट मे मैथिली हिन्दू विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रम मे स्वीकृत भऽ गेल। मैथिलीक स्वीकृतिक उपरान्त उपलब्ध साहित्यकें पर्याप्त नहि मानैत, 'किरण' साहित्यक अभिवृद्धि लेल चिन्तित भेलाह। 'किरण' आ हुनक संग देनिहार लोकनिक चिन्ताक पहिल परिणाम हस्तलिखित पत्रिका 'मैथिली सुधाकर'क रूपमे प्रकट भेल, जे पं॰ कुलानन्द मिश्रक सम्पादन मे बहरायल। मधुप, यात्री, मोहन आदिक संग 'किरण' कें सेहो एहि पत्रिका तथा 1936 मे फेर सँ बहरायल 'मिथिला मोद' क लेल लिखय पड़नि, रचनाक अभाव भेला पर रिक्त स्थानक पूर्ति करय पड़नि। उल्लेख्य थिक जे 'किरण' क उपन्यास कहि छपल 'चन्द्रग्रहण' 1932 ई॰ मे प्रकाशित भेल छल आ एहि मे देल 'किरण'क परिचय मे हिनका 'पश्चातापक ज्वाला', 'अभिमानिनी सरला', 'गीतमञ्जरी', कुसुम कुञ्ज' आदिक रचयिता कहल गेल अछि। स्पष्ट थिक जे रचनाकारक रूपमे 'किरण'क यात्रा 1932 सँ पूर्वे आरम्भ भऽ गेल छल। निश्चित रूप सँ ई कहब जे 'किरण'क लेखन वस्तुतः कोन रचना सँ आरम्भ भेलनि, हमरा लेल संभव नहि थिक। तखन 1930 ई॰ धीर निश्चित रूपसँ 'किरण' साहित्यक क्षेत्र मे आबि गेल रहथि, जकर पुष्टि ओ स्वयं कयने छथि। हमरा लगैत अछि जे साहित्यक क्षेत्र मे विधिवत् पदार्पणक पूर्वो ओ पारम्परिक ढंगक भक्तिपरक ओ शृंगारपरक किछु रचना कयने रहथि, जे भिन्न-भिन्न लोकक उपयोग लेल एहि उद्देश्य संग लिखल गेल छल जे एहि सँ लोक मे अपन भाषाक प्रति अनुराग ओ सजगता बढ़तैक। भाषा ओ साहित्यक विकासक लेल 'किरण'क मोनक व्यग्रते मे हिनक साहित्यक भागीरथीक उत्स ताकल जा सकैछ।

'किरण'क अठासी टा गीत ओ कविता दू टा संकलन मे संकलित भेल अछि जे 'किरण कवितावली' तथा 'कतेक दिनक बाद' नाम सँ प्रकाशित अछि। एकर अतिरिक्तो हिनक गीत ओ कविता पत्र-पत्रिका मे छपल भऽ सकैछ, मुदा तकरा सम्बन्ध मे कोनो ठोस जानकारी एतय प्रस्तुत करब संभव नहि थिक। मैथिलीक कतोक पुरना लघुजीवी पत्रिका सभ मे हिनक अनुपलब्ध रचनासभकें ताकब एकटा कठिन कार्य थिक। हिनक समस्त प्रकाशित रचना सभक संकलनक बादे हिनक गीत ओ कविताक परिमाणक सम्बन्ध मे साधार किछु कहल जा सकैछ। गीत ओ कविताक अतिरिक्त 'किरण'क एकटा महाकाव्य 'पराशर' नामसँ प्रकाशित छनि, जाहि लेल हिनका मरणोपरान्त वर्ष 1989 मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार सँ सम्मानित कयल गेलनि। 'पराशर'क अतिरिक्त हिनका द्वारा दू टा आर महाकाव्य—'रहब लड़ैत बढ़ैत' ओ 'अभियान'—क प्रणयनक उल्लेख सुनील कुमार ठाकुर द्वारा अपन शोध प्रबन्ध (काञ्चीनाथ झा 'किरण' क रचनाक आलोचनात्मक अध्ययन) मे कयल गेल अछि। यद्यपि 'किरण-कवितावली'क कवि-परिचय मे हिनका द्वारा प्रणीत साहित्य मे पूर्वोक्त दुनू महाकाव्यक उल्लेख नहि भेटैछ। एहि ठाम ई उल्लेख संगत प्रतीत होयत जे सुनील कुमार ठाकुर अपन शोध-प्रबन्ध वर्ष 1989 मे प्रस्तुत कयलनि तथा 'किरण कवितावली'

सेहो फरवरी, 1989 मे प्रकाशित भेल। एतबा धरि निश्चित जे ओ दुनू महाकाव्य अखन धरि प्रकाशित नहि भेल अछि।

'किरण'क कविता ओ गीतक दुनू प्रकाशित संग्रहमे संकलित 88 टा रचना मे आधा सँ किछु कम गीत तथा आधा सँ किछु अधिक कविता थिक। 'किरण' अपन साहित्यकार जीवनक आरंभ प्रायः गीते सँ कयने रहथि आ बादो मे ओ गीत लिखलनि। ई गीत सभ भक्तिपरक तथा शृंगारपरक थिक, जे मालकोष, पराती, कल्याण पराती, कल्याण टोरी, नचारी, आसावरी, देस तिरहुत, समदाउन, मलार, होरी, बिहाग मालकोष, चौमासा, चैतावर आदि विभिन्न पारम्परिक शैली मे पारम्परिक संवेदना संग रचित थिक। उदाहरणक रूपमे हिनक दू टा भक्तिपरक तथा दू टा शृंगारपरक गीतक अंश एतय प्रस्तुत अछि, जाहि सँ 'किरण'क गीतक पारम्परिकताक अवलोकन तथा मूल्यांकन कयल जा सकैछ–

(1) जननी ! लिअ आब सुधि मोर।
पामर दीन विहीन ज्ञान हम जानि न महिमा तोर।।
यौवन मदमे मत्त छलहुँ माँ ! वनिता भोग विभोर।
'काञ्चीनाथ' अगति भै करइत छी मा ! मा ! मा ! शोर।।
(मालकोष)

(2) शङ्कर बिहरथि श्यामा संग।
विश्वम्भर परमेश दिगम्बर बिहरथि श्यामा संग।।
सीस सोभ मुकटाकृति फणिपति जटा विराजित गंग।
कर त्रिशूल नरमाल कण्ठमँह चिता भस्ममय अंग।।
'काञ्चीनाथ' भनथि तसु महिमा निरखि सुबुध हो दंग।।
(गीत)

(3) अहाँ परम चतुरा छी सजनी करब न हम विसवास।
प्रीति करी हमरा सङ सजनी पूरी पर अभिलाष।।
खन मुख चीर हँटाबथि सजनी खन आँचर झिकझोर।
खन कर नीबि हिलाबथि सजनी खन लिअ चाहथि कोर।।
(तिरहुत)

(4) हे सखिया की कहु अपन कुमतिया।
पिसुन वचन धय कान, मान-हठ कयलहुँ हम दुरमतिया।।
कर झमारि सखि फेरि लेल मुख, सुनल न किछु तसु बतिया।
विनय कयल कत चरण धयल मम, तइयो न ताकल अँखिया।।
(मलार)

एहि चारू गीतक अतिरिक्त 'किरण'क लगभग तीस टा आर गीत एहन छनि जकर भास, शिल्प ओ काव्यपर पारम्परिक भक्तिपरकता तथा शृंगारिकताक दुर्दम छाप थिक। प्रायः ई गीत सभ जानि कऽ एहन पारम्परिक भास, शिल्प ओ कथ्य संग प्रणीत भेल कि लोक-कण्ठ ओ लोक-मानसमे सुगमता सँ बसि सकय। अपन मातृभाषाक प्रति लोकक उदासीनता कें दूर कऽ अनुराग जगयबाक सदुद्देश्य संग रचित एहि गीत सभ लेल लोकग्राही होयब आवश्यक छलैक आ से अपारम्परिक शैली मे नितांत नव कथ्य संग लिखित गीतक लेल संभव नहि छलैक। ओना 'किरण-कवितावली' मे 'किरण'क एहनो एकटा गीत अछि जकर स्वर भक्तिपरक तथा भास ओ शिल्प पारम्परिक होइतो कथ्य कतौ सँ पारम्परिक नहि लागत—

जँ करितहुँ मन ! शिव केर ध्यान।
तँ नहि ह्वैतहुँ पेटक कारण सतत विकल हरान।।
धनी जनक लग निन्दित भैकऽ नहि पबितहुँ अपमान।
हीन अवस्था देखि अपन नहि तापित ह्वैत परान।।

परम्पराक सोझ प्रभाव मे रचल भक्तिपरक तथा शृंगारिक गीत सभक अतिरिक्त 'किरण'क किछु एहनो गीत थिक जे समकालीन समय ओ समाजक सत्य ओ सोच कें रेखाङ्कित करैत अछि।

कविक रूपमे 'किरण'क वास्तविक उपलब्धिक मूल्याङ्कन हेतु हिनक गीत बड़ थोड़ आधार प्रस्तुत करैत अछि, कारण एहि कविक प्रकृत यथार्थवादी चेतनाक अभिव्यक्ति हिनक गीतक अपेक्षा हिनक स्फुट कविता सभ मे कतोक अधिक भेल अछि। यथार्थ तऽ प्रायः ई थिक जे 'किरण'क अधिकांश गीत ओ कविता दू टा नितांत भिन्न मनःस्थितिक रचना थिक आ एक-दोसरा पर प्रश्न-चिह्न लगबैत प्रतीत होइछ। हिनक किछुए गीत मे कविताक समानान्तर अनुभूतिक चित्रण भेटैछ।

'किरण'क जन्म एकटा नैष्ठिक मैथिल ब्राह्मणक परिवार मे भेल छल, जकर मिथिलाक तत्कालीन समाजक सभसँ आदरणीय श्रोत्रियवंश सँ सम्बन्ध रहैक। सामाजिक कुलीनता सङ्ग यदि वैभवक पुट हो तऽ परिवारक जीवन सहज ओ व्यवस्थित होइत छैक, अन्यथा परिवारक सदस्यक स्वाभाविक विकास बाधित होइछ। 'किरण' एकटा एहन परिवार मे जन्म लेने रहथि, जे कुलीन तऽ छल, मुदा आर्थिक विपन्नता सँ ग्रस्त छल। एहन परिवार मे पोसायल अतिशय संवेदनशील 'किरण' लेल सामाजिक व्यवस्थाक प्रति विद्रोही बनब स्वाभाविक रहनि। जाहि सामाजिक व्यवस्था मे अर्थाभावक कारण ओ 18 वर्षक अवस्था मे प्रथमा, 22 वर्षक अवस्था मे मैट्रिक पास कयलनि आ आगाँ सेहो कहियो अपन अध्ययन नियमित ढंग सँ जारी नहि राखि सकलाह, तकरा प्रति हुनका मोन मे विक्षोभ होयब स्वाभाविक छल। सामाजिक विषमताक प्रति 'किरण'क मोनक क्षोभ आगाँ आर

बढ़ि गेलनि, जखन मातृभाषाक प्रेमसँ विह्वल तथा आन्दोलित भऽ ओ भाषाक सम्यक् विकास हेतु ओहि वर्गक सहभागिता अनिवार्य बुझलनि, जे समाजक वृहत्तर वर्ग होइतो अशिक्षा तथा अकिञ्चनताक कारण समाज मे उपेक्षित ओ प्रताड़ित होइत छल। ओ वर्ग धर्म तथा जातीय उच्चताक संस्कारोक हाथ अपमानित तथा शोषित होइत आयल छल। मात्र भाषाक उत्थाने टा लेल नहि, अपितु ओहि समय मे चलि रहल स्वाधीनता आन्दोलनक सफलतो लेल ओहि शोषित ओ पीड़ित वर्गक सजग भऽ आगाँ आयब आवश्यक छल। एहने सामाजिक स्थितिक देन छथि व्यक्ति तथा साहित्यकार 'किरण' जे सभ तरहक धार्मिक कट्टरता, अन्धविश्वास तथा सामाजिक विषमताक विरोध मे दृढ़ संकल्पक संग ठाढ़ नजरि अबैत छथि।

'किरण'क कविता-संकलन 'कतेक दिनक बाद'क सम्पादक (डा॰ कैलाशनाथ झा ओ शिवशङ्कर श्रीनिवास) ओहि संकलनक 'जीवन संघर्ष ओ लोक-चेतनाक कवि' शीर्षक भूमिका मे कहने छथि—"आ, से ओ भगवानक पूजा—अर्चना करैत छलाह। चानन करथि, भस्म रमाबथि। आ ताहि समय मे ओहने भगवान-भगवतीक गीत लिखथि जेहन गीत एहिठाम लिखाइ। वैह परम्पराभावक गीत, जाहिमे मनुष्य अपनाकेँ किछु नहि बूझि ईश्वर केँ जग-सिरजनहार बूझैत अछि।" से चानन कयनिहार, भस्म रमौनिहार आ देवी-देवताक स्तुति लेल समर्पित भाव सँ भक्तिपरक गीत लिखनिहार 'किरण' जखन ई लिखलनि—

अञ्जनी अहिल्या केर सतीत्व
कुन्ती केर कौमार केँ
कयलक जे नष्ट
से लम्पट दुष्ट
देवता छल कहबैत, घर-घर मे पूजित होइत।
(सतयुग)

तऽ ओहन लोक केँ अवश्ये अजगुत लागल होयतैक जे हुनक व्यक्तित्व आ कवित्व मे स्वभाव बनि पसरल अन्तर्विरोधक अनिवार्यताक प्रति साकांक्ष नहि छल।

वर्ष 1930 में 'किरण' काशी आबि गेलाह। एतय मराठी ओ मलयालम भाषी छात्र लोकनिक गतिविधि सँ प्रेरित भऽ तथा मैथिली भाषी छात्र लोकनिक कोनो संगठन नहि देखि ई मैथिल छात्र लोकनिक संघटन कयल तथा हिन्दू विश्वविद्यालय मे मैथिलीक मान्यता हेतु संघर्ष कयल। अन्ततः 1933 ई॰ मे हिन्दू विश्वविद्यालय मे मैथिली केँ मान्यता प्राप्त भेलैक। एहि बीच ओ महामना पं॰ मदनमोहन मालवीयक सुपुत्र पं॰ गोविन्द मालवीयक सम्पर्क से अयलाह तथा हुनक 'रणभेरी' नामक हिन्दी पत्रिका मे सहयोग कयलनि। धार्मिक अन्धविश्वासक कारण होइत हानि दिस संकेत करैत 'किरण'क उपन्यास कहि छपल 'चन्द्रग्रहण' 1932 मे प्रकाशित भऽ गेल छल। स्पष्ट थिक जे गाम

सँ काशी अयलाक बाद [एहि सँ पहिने मात्र एक बेर किछु समय लेल ओ गाम सँ बाहर दिनाजपुर जिला (सम्प्रति बंगला देश) क अन्तर्गत रजौर गेल रहथि] व्यक्ति तथा कवि 'किरण'क दृष्टिक विस्तार संग समय ओ समाज सँ हुनक परिचय मे अभिवृद्धि होइछ। सामाजिक जड़ता ओ विषमता दिस ध्यान गेला पर 'किरण' लेल समर्पित भाव सँ भक्तिपरक गीत लिखब कि नायक-नायिकाक रभस मे रस लेब संभव नहि रहलनि।

'किरण'क भक्तिपरक तथा शृंगारिक गीत सभ परम्पराक सर्वविध अनुशासनक अधीन रहि लिखल गेल अछि। एहि गीत सभक भास (राग), शिल्प ओ कथ्य मे कोनो नवीनताक दर्शन नहि होइछ। शब्द-योजना सँ लऽ कऽ भाव-संघटन धरिसभ किछु घोर पारम्परिक थिक। भक्तिपरक तथा शृंगारिक गीत ओ राष्ट्रवादी-छायावादी स्वरक किछु कविता 'किरण' 1940 ई॰ सँ पैहिने लिखने रहथि, ई 'किरण कवितावली'क कवि-परिचय मे कहल गेल अछि। जिनका सभकें 'किरण'क मुक्तक कवितासभ कि महाकाव्य (पराशर)क कला पक्ष झूस लगैत रहलनि अछि किंवा जिनका सभकें 'किरण'क कविताक भाषा ओ भाव-योजना बहुत व्यवस्थित नहि लगैत रहलनि अछि ओ सभ यदि हिनक भक्तिपरक तथा शृंगारिक गीत सभक गंभीरतापूर्वक अवलोकन करथि तऽ हमरा लगैत अछि जे हुनका सभकें अपन विचार मे किछु संशोधन करब आवश्यक प्रतीत होयतनि।

कवि 'किरण'क आरंभिक रचना भक्तिपरक तथा शृंगारिक गीत थिक जे व्यक्ति तथा कविक रूपमे सचेत भेला सँ पूर्वे ओ लिखलनि। एहि गीत सभ मे युवा 'किरण'क परिवेशगत संस्कार ओ मानवीय रागात्मकताक सहज अभिव्यक्ति भेल अछि। सामाजिक विषमता ओ सामाजिक सरोकारक बात स्पष्ट होइते 'किरण' भक्ति तथा शृंगारक दुनिया सँ बाहर आबि जाइत छथि तथा बादमे गीतो लिखैत छथि तऽ भिन्न स्वर ओ भासक—एहन गीत जे सामाजिक विषमता सँ उत्पन्न बहुविध शोषण मे पड़ल श्रमशील मनुक्खक पक्षमे ठाढ़ अछि, ओकर हकक अपहरणक विरोध मे बजैत अछि तथा ओकर सुखी तथा शोषणहीन जीवनक सपना देखैत अछि। भक्तिपरक तथा शृंगारिक गीतक रचनाकार 'किरण'क ई कायाकल्प आश्चर्यजनक लगितो सोड़हो आना यथार्थ थिक।

'किरण'क 'हमर कामना' शीर्षक कविता कहिया लिखल गेल, ई ज्ञात नहि। एहि कविताक एक अशं मे ओ अपन कविताक विषयकें रेखाङ्कित करैत छथि—

नगराजक सिर पर मस्त ठाढ़
जे जरा-गला कऽ अपन हाड़
मानव समाज कें सुखी करय
सं थीक हमर कविताक विषय

श्रमशील मानवक पक्षधरताक उद्घोषक कवि 'किरण' भाग्य ओ विधाता पर प्रश्न चिह्न लगा पौरुषक जयगान करैत छथि—

की थिक भाग्य ! विधाता के थिक ?
सभसँ पौरुष हमर प्रबल अछि।
छल अलंघ्य नगराज हिमालय
रोकि लोक-पथ बनल सुरालय
आइ हमर पदमर्दित से जनि
अपन कपार हँसोथि रहल अछि।
(पौरुष)

भक्ति ओ शृंगारक गलियारी मे टहलैत 'किरण' लेल श्रमशील मानवक पक्षधर बनब अथवा पौरुषक जयगान लेल प्रस्तुत होयब कोनो आकस्मिक घटना सँ कम नहि छलनि। देश ओ समाजक सही ज्ञान होइते 'किरण' भक्ति ओ शृंगारक मुरली पर तान भरब छोड़ि राष्ट्रवादी ओ छायावादी काव्य-बोध सँ क्रमशः परिचित ओ सम्पृक्त होइत छथि। 'किरण'क एहि मानसिकताक प्रतिफल थिक हुनक कविता 'दयिता', सुन्दरि', प्रियतम सौं, 'कुसुमकली', 'कुसुम', 'मुरुझल कुसुम', प्रतीक्षा, स्वाभिमान, 'शान्ति' आदि। देशक भव्य अतीत तथा तहियाक मूल्यबोधक स्मरणो ओ अपन किछु कविता मे करैत छथि। एहि अवधि मे सामाजिक विषमता सँ उत्पन्न मानवीय अधोगतिक गप्पो हुनका मोन कैं व्यथित करैत छनि, युवा वर्गक उद्‌बोधनो ओ करैत छथि, मुदा 'किरण'क कवि अपना लेल सही दिशा ओ रस्ता तखन पबैत अछि जखन ओ शोषित-पीड़ितक पक्षमे खुलेआम ठाढ़ भऽ जाइत अछि।

पारम्परिक भाव-बोध सँ अपनाकैं मुक्त कऽ किरण जखन समकालीन युग-बोध संग अपन आपकता बढ़बैत छथि तऽ 1939 ई॰ मे 'युवक सँ' शीर्षक कविता लिखैत छथि। ई कविता 'किरण'क कवि-जीवन मे ओहि पहिल प्रस्थान-विन्दु दिस संकेत करैत अछि, जाहि लग पहुँचि ओ अपन पारम्परिक काव्य-बोध सँ अपना कैं फराक कऽ लैत छथि।

उठू मैथिल युवक, युग मे कर्मयोगक शंख बाजल
विश्व विजयी संगठन बल पाबि जनता सैन्य साजल
रहि सकल नहि जारसाही मूल सह सुलतान गेला
जनमत क प्रतिकूल चलि इङ्गलैण्ड पति पेरिस पड़ैला
(युवक सँ)

एहि प्रस्थान विन्दु सँ आगाँ बढ़ि 'किरण' राष्ट्रवादी, अतीतक मूल्य सँ प्रभावित तथा छायावादी मनोभावक किछु कविता लिखलनि। 'किरण'क एहन नव भाव-बोधक किछु कविता सँ निम्नाङ्कित उद्धरण कविक नव अभिव्यक्तिक रसास्वाद हेतु प्रस्तुत अछि—

(1) स्मरण मात्र सँ जनिक सरल मुख
पुलकित हो तनु लतिका।
नयन चकोर प्रेम सँ अरपय
अश्रु मनोहर कलिका।।
(दयिता)

(2) निज जीवन कैं राख तुल्य बुझि
कयलक जैह तपस्या।
केवल सैह रसिक अलि जानय
प्रेमक मूल समस्या।।
(कुसुमकली)

(3) तन-मन-यौवन-रूप क्षणिक थिक
क्षणिक शील संसार।
नष्ट रूप तुअ सत्य, किन्तु चिर
जीवन पर उपकार।।
(मुरुझल कुसुम)

(4) देश अछि परतंत्र घर-घर हाहाकार भरल।
भूखल रहि कुहरैत जरैं की होइत कवि किछु काव्य रचल।।
होय साहस आउ झटपट क्रान्तिमय युगगान गाउ।।
जकर स्वर नहि रहय सीमित दरवार ओ रनिवास मे।
होइ स्पन्दित हृदयगति सभ बनिहार सबहिक साँसमे।।
(कवि सँ)

पराधीन देशक रचनाकार मे राष्ट्रियता-बोधक स्फुरण एकटा अत्यन्त स्वाभाविक प्रतिक्रिया छल आ ततबे स्वाभाविक छल वाक्हीन समाजक अन्तसक छायावादी परोक्ष अभिव्यक्ति।

मैथिली-कवितामे प्रगतिवादी डेगक पदचाप लोककैं यात्रीक 'कविक स्वप्न' सँ सुना पड़लैक जे 'मिथिला मोद' मे 1941 ई॰ क जनवरी अङ्क मे प्रकाशित भेल छल। 'मिथिला मोद' क एही अङ्क मे 'किरण'क 'कतय नुकायल छी हे श्याम ?' शीर्षक कवितो प्रकाशित भेल छल। लोक द्वारा एहि कविताकें 'किरण'क प्रगतिशील कविता मे प्रथम होयबाक प्रतिष्ठा प्राप्त छैक। एहि मे कृष्ण कैं जन्मभूमिक कातरता लेल उलहन दैत कवि तकर सुख-समृद्धि लेल, तकरा विषमताहीन बनयबा लेल हुनका सँ अनुरोध करैत छथि।

अहाँक प्राणप्रिय यमुना-तीर
जतय-केर सीकर-सीत समीर

रखै छल जग प्रगतिक प्रतिकूल
सदा मधु-ऋतुमय नीप निकुञ्ज
विरहसँ अहाँक आइ से हाय,
भेल अछि सिकता-मय मरुभूमि

× × ×

सलिल सँ प्लावित हो मरुदेश
शस्य सँ श्याम होय भूगोल
स्वस्थ भै तखन करू नव सृष्टि
जतय नहि रहय विषमता क्रूर

विषमताहीन समाजक सृजनक विनती छोड़ि एहि कविताक भाव ओ अभिव्यक्ति मे कोनो एहन विशिष्ट भंगिमा देखबा मे नहि अबैछ जकरा आधार पर एकर गणना प्रगतिवादी मानि कयल जाय। एहि कविता सँ अधिक प्रगतिशील तत्व हमरा हुनक कविता गामक मधुमास, 'फागुनक पूर्णिमा, 'की गाउ ?', हमर कामना', हमर कामना-2', आदि मे भेटैछ, जकर रचना तिथि अज्ञात अछि। संभव थिक जे ई कविता सभ ओही काल मे लिखल गेल, जखन 'किरण' 'कतय नुकायल छी हे श्याम ?' लिखलनि।

'किरणक' सोच मे जीवन ओ कविताक बीच एकात्म स्थापित भऽ गेल छल तथा वस्तु सत्य सँ आंखि नुकायब हुनका स्वीकार नहि रहनि।

(i)

"हिनक सोच आ जीवन तेना ने मिलल बुझाइ जे लोककेँ अनायास (हिनक कविता सँ—लेखकीय जोड़) प्रभावित होअ पड़ैक, जकर प्रभाव मैथिली कविता पर पड़ल।

('कतेक दिनक बाद'क भूमिका सँ)

(ii)

"किरणजी यथार्थवादी रचनाकार छलाह। वस्तु सत्य सँ आँखि मूनि मने-मन मुङ्गवा खायब हुनका बुते संभव नहि छल।"

मोहन भारद्वाज

('अनवरत' मे संकलित 'काञ्चीनाथ झा 'किरण' : विचार आ कविता' शीर्षक निबन्ध सँ)

प्रवासक जीवन मे भेल साहचर्य ओ अनुभव सँ 'किरण'क वैचारिकताक विस्तार भेल। ओ देश एवं समाजक स्थिति-दुःस्थिति केँ फरीछ आँखियेँ देखि पयबामे समर्थ भेलाह तथा हुनका लगलनि जे मनुष्यक पेट ओकर सम्मानक घाती होइत छैक कि पेटे लेल लोक नाना तरहक अपमान तथा दुर्गतिक भोग करैछ—

जौं संगमे न रहितै सनमानघाती
ई कन्दरा सम अखन्नर पेटभट्ठी।

तौं की सहैत कहियो चुप भै तपस्वी
सम्पत्ति-मत्त-मन पामर वक्र दृष्टि।।
(पेटभट्ठी)

पेटे ओ बन्धन थिक जे मनुक्ख कैं सभ तरहक कष्ट तथा उपहास सहबा लेल विवश करैत अछि आ पेटवलाक विवशता ताधरि अनामति बनल रहत जाधरि समतामूलक समाजक स्थापन नहि होइछ, सामाजिक-धार्मिक-आर्थिक कलुष तथा जातीय वैषम्य समाप्त नहि होइछ, एहन दिन नहि अबैछ जखन—

सभ हो सुखी स्वस्थ निर्भीक
सभ हो कुली सबहि नरपाल
सभकैं भेटै वस्त्र भरि देह
सभकेर भरै अन्न सँ गाल
—(कतय नुकायल छी हे घनश्याम ?)

सामाजिक विषमता सँ क्षुब्ध 'किरण' जखन अपन कविता मे शोषितक पक्ष मे ठाढ़ होइत छथि, हुनक कविता-यात्रा मे दोसर प्रस्थान-विन्दु आबि जाइछ। समकालीन अधोगतिक कारणक अन्वेषण करैत कवि 'किरण'क दृष्टि समाज मे व्याप्त आर्थिक, धार्मिक, जातिगत ओ वंशगत विषमताक संग-संग धार्मिक कट्टरता, पाखण्ड, मिथ्याभिमान, अन्धविश्वास एवं श्रम आ श्रमिकक अवमानना पर जाइछ आ ओ एहि सभक विरोध मे ठाढ़ होयब एकटा व्यक्ति आ एकटा रचनाकारक रूप मे अपन धर्म बुझैत छथि। ओ कामना करैत छथि—

नहि चाहै छी सौख्य सान सम्पत्ति न प्रभुता
नहि वैभव-बलजात ख्याति कीर्त्ति सम्मान महत्ता
उचित सत्य कहबाक चेतना साहस बनल रहय आजीवन
नहि ताकी यश-अपयश
स्वाभिमान रक्षार्थ सन्नद्ध रहय मन सदिखन
पबितहुँ कष्ट अपार बौऐतहुँ रनबन
अत्याचार अन्यायक संग जंग मे बीतय जीवन
रूढ़ि अन्धविश्वासकेर कहाबी कट्टर दुश्मन।
(हमर कामना-2)

एहि शताब्दीक चारिम दशकक मिथिलाक दुःस्थिति देखि किरण कैं क्षोभ होइत छनि आ ओहन दुर्दिन मे पड़ल मिथिला मे, जकर भाषा-काननमे विद्यापति एहन लता लगौने रहथि जकर मंजुलता कैं देखि 'बङ्गीय भ्रमर' लुब्ध भऽ टूटि पड़ल छल—

मिथिला मृदु-भाषा काननमे, अपने जे रोपल काव्य लता।
छल, टूटि पड़ल बङ्गीय भ्रमर, जनि देखि मनोहर मंजुलता।।
(विद्यापति)

किरण कें ओहि विद्यापतिक आह्वान करबामे संकोच होइत छनि—

अछि सूखल नयन नदी हियमे मरुभूमिक घोर बिहाड़ि बहय।
मधु-कानन के सुकुमार सखा कवि कोकिल हाय बजाउ कतय ?
अछि आइ एतय बँसबाड़ि विकट फकस्यार शृगाल बिड़ालालय।
कहु कोकिल कें पुनि पोसत के ? मधुमादक गान सुनयबालय।।
(विद्यापति)

मिथिले टा नहि, 'किरण' समस्त देश मे सामान्य लोकक जीवन-स्थिति आ तकर विवशता कें देखि अन्तर सँ दुःखी भेल रहथि। ओ अभिजात वर्गक अतिमानवीय आचरण तथा सोच सँ सेहो क्षुब्ध रहथि। ई वर्ग जे बैसल खाइत अछि, 'पर अरजल' आ आनेक श्रम सँ जुटाओल साधनक बलपर रास करैत अछि आ संगहि ओहि 'पर' ओ 'आन' लेल आदर ओ स्नेहक स्थानपर घृणाक भाव रखैत अछि। 'किरण'क मोन मे अभिजात ओ आभिजात्यक प्रति असीम क्रोधक भावना रहलनि, ओहि वर्गक लौल पुरयबा लेल ओ कोनो काज करबा हेतु प्रस्तुत नहि रहथि—

हम लिखब कथा नहि रामगिरिक
चटकार ताल अलकाक परिक
अलका छल धनपतिक नगर
हो जकर प्रतिष्ठे शोषण पर।
(हमर कामना)

देश ओ समाजक परिदृश्य 'किरण' कें तेना कऽ व्यथित-मथित कऽ देने रहनि जे हुनक मोनक रागात्मकता जरि कऽ छाउड़ भऽ गेल रहनि। एहना मे हुनका लेल गीत गायब, जे सुखद एवं शान्त मनःस्थितिये मे काम्य होइछ, अनसोहाँत लगैत छनि—

नैनामे लहुक लेश ने छै उपमान हेतैक सरोज कोना
जागल छै छातीक हाड़-हाड़ चकबा बनतैक उरोज कोना।
पेट पीठ सटि एक भेल सोपान मनोजक हैत कोना
बच्चा बिलखै छै दूध बिना बनतै कहु सोमक घैल कोना
(की गाउ)

सामाजिक ओ आर्थिक विषमताक मारल मनुक्खक बीच रहि, ओकर जीवनक यातनाक प्रति उदासीन कि तटस्थ रहब 'किरण'क व्यक्तित्व लेल स्वीकार्य नहि रहनि। तैं ओ ओहन समस्त सामाजिक ओ वैयक्तिक सोच तथा आचरणक विरुद्ध रहथि जे मनुष्य द्वारा मनुष्यक लगातार शोषणक देखार कि अनदेखार समर्थन करैत रहल अछि। 'किरण' अपन गीतक आलाप लेल सम्यक् प्रतीक्षा करब उचित बुझैत छथि ओ नीक दिन अयबाक प्रति आश्वस्तो छथि –

पाखण्डपनी ओ रूढ़िवाद कुलवैभव केर मिथ्याभिमान
जरि हैत जखन ई वसुन्धरा सबतरि वासोचित समान
गैब तखन हम मेघराग धधरा सँ झहरत सलिल धार
कोइल बनि जायत शस्य श्याम संतप्त धरा सुन्दर विहार
(की गाउ)

'किरण'क जन्म एकटा विपन्न ब्राह्मण परिवार मे भेल रहनि, जकर संस्कार तऽ कुलीन लोकनिक रहैक, मुदा जकरा लग संसाधनक अभाव रहैक। एहन सामाजिक ओ आर्थिक स्थितिक परिवार मे उत्पन्न 'किरण'क लेल प्रतिकूल स्थिति सँ बहरयबा लेल संघर्ष करब तथा ओहन स्थितिक सर्जक लोकनिक कर्म ओ कथनक प्रति मोन मे निंदाक भाव राखब एकटा अनिवार्यता भऽ गेल रहनि। यथार्थ मे 'किरण' ओहन सभ मान्यता तथा मूल्यक प्रति विद्रोही भऽ गेल रहथि जे मनुक्खक बीच अन्तर करैछ, जे समाजक छोट-पैघक अवधारणा के कालप्रथित न्याय मानैछ, जे आनक शोषण कऽ अपन सुख-सुविधाक जोगाड़ उचित बुझैछ, जे भाग्यक पैरवी कऽ श्रमक उपहास करैछ। 'किरण'क मोनक ई संघर्ष तथा विद्रोह मूलतः हुनक अपन परिवेशक उपजा रहनि, मुदा ओ समस्त राष्ट्र तथा विश्वक परिवेश सङ्ग तकर साधारणीकरण कयलनि तथा समस्त शोषित-पीड़ित मानवताक पक्ष मे बाजब अपन कर्त्तव्य बुझलनि। हुनका लेल पैघ सँ पैघ मान्यता निरर्थक भऽ गेल यदि ओ सामान्य जनक हितक विरुद्ध जाइछ।

'किरण' लेल हिन्दू-मुसलमान ज्यू-क्रिस्तान, धनिक-गरीब, गोर-कारी, कुलीन-अकुलीन तथा उच्च ओ नीच जातिक लोकक बीच अन्तर करबाक गप्प सुविधाभोगी वर्ग ओ तकर चाटुकार लोकनिक मोन एवं मस्तिष्कक पाखण्ड थिक। एहि तथ्यकेँ हिनक 'अन्तर्ध्वनि' तथा 'मुक्तक' शीर्षक कविता प्रभावशाली ढंग सँ रेखाङ्कित करैत अछि—

भूमि, रौद, बसात, पानिक
कारणेँ उत्पन्न
होइत अछि लाल पीयर
गोर, कारी, श्याम चामक रंग

व्यवसाय कौलिक बनय काले जाति
एहि सँ की ऊँच नीचक भेद-भाव-विचार ?
केवल काज थिक प्रधान

× × ×

पोसाक सभ थिक धर्म
ऐ मे छै न किछुओ मर्म
बौद्ध ज्यू क्रिस्तान
हिन्दू सनातन आर्य ओ इसलाम
सभ थिक एक समान

× × ×

जे रचै अछि राति-दिन पाखण्ड भाग्यक जाल
पूर्व जनमक कर्मफल कहि
झाँपैछ धनिकक पाप
तोपैछ लोकक आँखि
जाहि सँ नर धनक हेतुक पूजैत अछि पाषाण
दैछ दण्ड-प्रणाम।

(अन्तर्ध्वनि)

(1)

एक रंगक सोनित-मासु पर रंग-विरंगक खोल।
खोलेक रंग लेल दुनियामे मचय अनघोल।।

(2)

जाति की ? कूल की ? गुनक करू मान।
सितुआक पूत मोती हो रतन समान।।

(मुक्रक)

'किरण' गीत लिखने छथि—आरंभ मे भक्ति-भाव तथा शृंगार-भाव सँ गुम्फित प्राचीन वगय-बानीक गीत ओ बाद मे समकालीन बोध संग रचल नव ढबक गीत। हिनक पारम्परिक गीतसभक शिल्प ओ कथ्य एहन थिक जे ओहि गीत सभ सँ यदि काञ्चीनाथ हटा देल जाय तऽ ओहि गीत सभकेँ विद्यापति तथा गोविन्द दासक परवर्त्ती कोनो गीतकारक नाम सँ चलाओल जा सकैछ। एहि गीत सभक भाषा मे अलबत्त किछु एहन संस्कार भेटैछ जे बहुत प्राचीन गीत सभक भाषा सँ बादक संस्कार थिक।

'किरण'क नव ढबक गीत मे स्वर सँ लऽ कऽ शिल्प धरि, भाव-योजना सँ लऽ कऽ शब्द-योजना धरि, सभ किछु अपारम्परिक थिक। हिनक एकटा गीतमे एक टा एहन नव यौवनाक मनोव्यथाक चित्रण अछि जकर विआह ओकर सम्मतिक बिना खाहे बेमेल कि अवाञ्छित वर संग कऽ देल गेल छैक—

वयस बढ़ल हिरदय मह उपजल
कते भाव सुकुमार
सभकेँ दलइत सिनूर सूल-सन
बैसल आबि कपार

आ तखने ओकरा अहिल्या ओ कुंतीक स्मरण होइछ, जे सभ ओकर मनोव्यथाक सहभागिनी रहथिन आ परपुरुष-गमन लेल वृत्त भेलि रहथि—

केहन पतिक छल हमर कामना
प्रीतिक कोन आधार
क्यो नहि पुछलक-अछलक, देलक
बोली प्रकृति बेकार
एही चालि केर उपजा कुन्ती
अहिल्याक अभिसार

एहि गीत मे आगाँ ई सेहो कहल गेल अछि जे सावित्री जेँ कि अपन इच्छा सँ वरक वरण कयने रहथि, तेँ अपन अद्‌भुत नारी-सामर्थ्यक आदर्श उपस्थित कऽ सकलीह—

बरय देलक अपना तँ देखलक
सावित्री संसार।

एक गीत मे 'किरण' अगहन आयल देखि एकटा गरीबिन ओ मजूरिन मायक अन्तरक उच्छ्वासक चित्रण कयने छथि जकरा ई प्रतीति छैक जे अगहन अयला सँ ओकरा घर मे भूखक वास नहि होयतैक, ओकर बच्चा केँ बाइस सेहो भेटतैक। निश्चिन्तताक ई बोध की होइत छैक से एकटा एहने माय अनुभव कऽ सकैछ, जकरा घर रह-रहाँ उपासक स्थिति बनल रहैत छैक—

बौआ एलै अगहन मास
उठ उठ पढ़ गऽ बाइस धयल छौ
रह नइ आब उदास
कटनी चलतै सब दिन कटबै
खैहें चारू बेर
उठ उठ पढ़ गऽ इसकुल जैहें
आब ने हेतौ अबेर

एहि गरीबिन मायक विपन्नताक ई स्थिति छैक जे बरखा भेला पर 'बीतो भरि न अबंच' रहैत छैक। एकटा अन्य गीत मे 'किरण' एहि घरक दुःस्थितिक बड़ मार्मिक चित्रण कयने छथि–

सौंसे घर बरेब भेल छल
बीतो भरि न अवंच छलै
तीति रहल छल नेना सब तँ
सीतलपाटी ओढ़ा देलै
कतऽ कथी पर एखन सुतबिऔ
जांघ भरा कऽ लोथ भेल अछि

एहिनो स्थिति मे ओहि पतिव्रता गरीबिन कें ई नहि बिसरैत छैक जे ओकर घरवला भुखले छैक, जकरा अयला पर ओ कहैत छैक–

कोनिया मे लताम रखने छी
सीरा लग सँ आनि लिअ
तकिऔ कोसिया नोन छैक कि नै
कहुना दू टुक चिबा लिअ।

घरक दीनताक एहन सजीव तथा विश्वास योग्य चित्रण बहुत कम रचनामे देखबा मे आओत। एहि वर्गक जीवनक 'किरण' कें प्रामाणिक अवगति रहनि, ई तथ्य एहन रचना सभ सँ नीक जकाँ सम्पुष्ट होइछ।

नव ढबक ई गीत सभ एवं आनो किछु गीत सर्वहारावर्गक प्रति 'किरण'क मोनक करुणा ओ व्यथाकें अभिव्यक्ति दैछ आ ई सेहो स्पष्ट करैछ जे ओहि वर्गक प्रति हुनक ई लगाओ हुनक अन्तरक अनुरागक उपजा थिक, ई कोनो बौद्धिक चिन्ताक प्रदर्शन मात्र नहि थिक।

एकटा गीत मे 'किरण' एक विपन्न मायक ओहि मनःस्थितिक चित्रण कयने छथि जे अपन बेटा कें बाढ़िक समय मे, मेघौन दिन मे भूखल पेट बलानक पार पठयबा मे डेराइत अछि, मुदा घर मे बान्हल महीस कि गायक बच्चा लेल सेहो ओ चिन्तित अछि जकरा लेल घासक जोगाड़ो आवश्यक छैक। एहनामे ओ अपना मोनक आशंका कें दाबि बेटाकें साँझ मे मड़ुआक रोटीक लोभ देखा बलानक पार जयबा लेल प्रेरित करैछ–

मन न होइए ऐ विकालमे
जाय दिऔ हम जाय न दितिऔ
जँ न बलाय ई तोहर नुनुआ
चलि फिरि सकितौ, बजितौ भुकितौ।

× × ×

बाबू लौथुन बोनि कमाक'
नवका मडुआ रखने रहबौ
सौंसे रोटी, ललका टिकड़ी
सत्ते रखबौ, आइ ने ठकबौ

ओ माय अपन बेटा कें ई आश्वासन दैछ जे आइ ओ ओकरा ठकतै नहि, साँझ मे सत्ते मडुआक रोटी देतैक। विपन्न मायक मनोव्यथाक एतेक जीवंत चित्र बिनु सहज आत्मीयता कें क्यो चित्रित नहि कऽ सकैछ।

सामाजिक ओ आर्थिक दुष्चक्र मे पड़ल लोक-समुदाय लेल 'किरण'क मोनक व्यथा असीम रहनि आ तहिना धधकैत रहनि हुनका मोनक रोष जे ओहि वर्गक प्रति छल, जकर षड़यंत्रक मारल वृहत्तर मानव समुदाय काहि काटि रहल अछि। एही वृहत्तर वर्गक एकटा मायक बेहाल ममता एहि गीतमे अभिव्यक्त भेल अछि—

देखही देखही बड़ेरीक लग
भुरकी सँ के हुलकी दै छौ
हम्मर मूनर सूतल की नै
तोहरे चन्ना सेहे तकौ छौ।

× × ×

नै तँ कने चाटि ले दुधुआ
बुच्ची छौ सूतल नै बुझतौ
झट आ आ ने जागि जेतौ तँ
पुनि तोरा नै छूब' देतौ।

जाहि घरक बड़ेरी सँ चन्ना हुलकी दैत छै कि जाहि घरक माय के भुखले अपन बच्चा कें देबा लेल अपन पिहुआ बच्चाक दूध चोरा कऽ देबाक अतिरिक्त आन कोनो उपाय नहि फुराइत छैक, ओहि घरक विपन्नताक आर कतेक फरीछ चित्र चित्रित कयल जा सकैछ।

एक अन्य गीत मे 'किरण' ओहि विपन्न माउगिक दुःखी हृदयक भावना कें अभिव्यक्ति देलनि अछि जकरा पतिकें जड़कालाक अन्हार राति मे बाध जा कऽ धानक रखवारी करय पड़ैत छैक। ओ मोने मोन ओहि दिनक प्रतीक्षा कऽ रहलि अछि, जहिया प्रलय होयतैक ओ नव सृष्टि रचल जयतैक—

कोना एसकरे रहब बाधमे बूलि ओगरबै धान
चोर-चहार करै छै बिन-बिन तेजि विवेक गियान
काटि अहुरिया हम आंगनमे रहब हँसोथि ओछान

एसकर जाड़-ठार मे रहबै अहाँ अड़ोपने जान
कहिया परलय हेतै कहू से बनतै नव जहान

एकटा भिन्न गीत मे वर्षाकाल मे धरती द्वारा नवीन वसन पहिरबा पर 'किरण'क ध्यान जाइत छनि (आ ओ अपन देशक हरीतिमा पर गौरवक अनुभव करैत छथि) तऽ वर्षो मे खेत मे कमैनिहार लोकक कष्टोकेँ ओ नहि बिसरैत छथि। स्वाधीनो भारत मे एहि वर्गक दुःस्थिति देखि हुनका आन्तरिक क्लेश होइत छनि—

मुदित अवनि पुलक भरलि
हरित वसन पहिरि रहल
सरित ललित कहय किलकि
एहन देश ककर रे।।
पवन सितल, वसन तितल
खेतहि माझ दिवस बितल
रीढ़ घाड़ टूटि रहल
दरद देह सगर रे।।

'किरण'क नव ढबक गीत सभक बोध हुनक आरम्भ मे लिखल भक्तिपरक ओ शृंगारिक गीत सभक बोध सँ नितान्त भिन्न थिक। अपन पारम्परिक रूप तथा बोधक गीत सभ मे जतऽ ओ एक समर्पित भक्त तथा नायक-नायिकाक पारस्परिक व्यापारक सहृदय द्रष्टा छथि, अपन नव बोधक गीत सभ मे ओ संतप्त मानवताक अडिग पक्षधर नजरि अबैत छथि, जे व्यवस्थाक असंतुलित आचरण लेल अतिशय रोष सँ भरल अछि। एहि गीत सभक भाषा पर ओहि वर्गक भाषा-संस्कारक गाढ़ रंग छैक, जाहि वर्गक पात्रकेँ निमित्त बना ई गीत सभ रचल गेल छल। 'किरण'क परिवेशगत संस्कार हिनका भक्त कि शृंगारिक कविक रूपमे सुविधापूर्वक निर्माण कऽ सकैत छल। ओहि संस्कारक लोक लेल निःस्वक पक्षधर बनबामे अपन जन्मजात प्रकृति संग कतेक संघर्ष करय पड़ल होयतैक, ई विचारणीय गप्प थिक। शोषित एवं प्रताड़ित मानवताक प्रति 'किरण'क आत्मीयता निश्चित रूप सँ अर्जित रहनि, मुदा एहिमे कृत्रिमताक कोनो गंध नहि थिक। जीवनक अनुभव सँ, सोचक स्तर पर आयल परिवर्तन सँ 'किरण'क रागवृत्ति मे बदलाओ भेल आ से आगाँ स्थायी बनल रहल।

'किरण'क गाम सँ काशी जायब, काशी सँ कलकत्ता जायब ओ फेर कलकत्ता सँ काशी मे आबि कऽ रहब ओ अवधि छल जाहि मे 'किरण'क व्यक्तित्वक कायाकल्प भेल। ओ गामक बान्हल परिवेश सँ बहरा कऽ देशक वृहत्तर परिवेश संग अपना कें जोड़लनि आ तकरा संगे ई अनुभव कयलनि से भक्ति तथा शृंगारक अतिरिक्त जीवनक किछु आर एहन आन सत्य छैक जे उपेक्षित रहलैक अछि आ जकरा संग आत्मीयता स्थापित कयलाक बादे जीवनकेँ सम्पूर्णता मे बूझल जा सकैछ।

वर्ष 1939 मे 'किरण' काव्यक क्षेत्र मे प्रायः पहिल बेर भक्ति ओ शृंगारक ओझरा सँ बहरा कऽ मिथिलाक (आ एहि व्याजेँ देशक) दुःस्थितिक प्रति सजग होइत छथि आ कर्मवीरक भाग्योदयक घोषणाा करैत छथि –

हाय हम मैथिल अभागल
जानि नहि एहि बुद्धिमे अछि कोन रूपक घून लागल
क्रान्तिकेर कल्लोल सँ अछि क्षुब्ध ई भूलोक सागर
देव-दुर्लभ वस्तु नव-नव, नित्य सिरजय चतुर नागर
जतहि देखू विश्व भरिमे, कर्मवीरक भाग्य जागल
एहू युग मे मरै छी हम, हाय दैवक पाँक लागल
(युवक सँ)

'किरण'क नव चेतना पुरना आदर्श तथा मान्यताक प्रति शंका ओ अविश्वास करब आरंभ कऽ देलकनि आ एहने मनःस्थिति मे ओ 'सतयुग' नामक कविताक रचना कयलनि। ओ सतयुगमे बाहर सँ एहि देश मे आयल 'मुष्टि भरि गोर शरीरक लोक' आर्य केँ 'अधम विलासी छली-प्रपञ्ची' कहैत छथि जे –

ईर्ष्या-द्वेष क्रोध मे पागल
अपने स्वार्थ-सिद्धि मे लागल
सुरा-अप्सरा-परवनिता रत
नाना अनाचार पारंगत
देखि बाट मे एक कामिनी
सद्यःस्नाता मुक्त केशिनी
पशुवत भेल अधीर।
सहि न सकै छल आनक जे उत्कर्ष
मनुज तपस्या नाशि मनबै छल जे हर्ष

मनुज तपस्या नाशि हर्ष मनाबयवला देवता सभक पूजन हेतु प्रेरित कयनिहार वेद-ज्ञाता ओ तथाकथित सर्वज्ञक प्रति 'किरण'क मोनमे पर्याप्त रोष रहनि। जाहि युग मे वेदज्ञक शिक्षाक प्रभाव सँ मनुष्य अपने व्रत-उपवास कयलाक उपरान्त 'नाना विध नैवेद्य' तथा 'पीतवस्त्र अनवद्ध' 'देवताक पेशकार' 'पण्डित द्विज' के अर्पित कऽ कृतज्ञ बनैत छल, तकरा 'किरण' 'वञ्चक युग' कहने छथि। जाहि युग मे सत्य बजबा लेल हरिश्चन्द्र केँ अपार दुःखक भोग करय पड़लनि, जाहि युग मे रानी माता शैव्या केँ मृत पुत्र रोहिताश्वक अग्नि संस्कार हेतु बीतो भरि नव वस्त्र उपलब्ध नहि भेलनि, ओकरा सतयुग मानबा लेल 'किरण' प्रस्तुत नहि भेलाह। ओ त्रेता तथा द्वापरक श्रेष्ठतो पर

प्रश्नचिह्न लगबैत छथि जाहि मे 'जन्मभूमि जननी के घातक परशुराम' भेल रहथि, सामाजिक मर्यादाक नाम पर निष्काम तपस्वी पुण्यात्मा शम्बूकक हत्या सदृश कुकर्म जाहि युग मे 'घोषित भेल सनातन धर्म', जाहि युग मे द्रोणाचार्यसन गुरु भेल रहथि जे –

सदाचार-रत मेधावी, विद्याक प्रेम मे पागल
निश्छल बालक एकलव्य कैं देल न शिक्षा

मुदा 'अपन दक्षिणा मे काटि लेल अंगुष्ठ', ओहि युगक गुणगान करब 'किरण' लेल संभव नहि रहनि। ओ ओहि युगसभक यथार्थक अपना तरहेँ व्याख्या कयलनि आ देखलनि जे–

अञ्जनी अहिल्याकेर सतीत्व
कुन्ती केर कौमारकैं
कयलक जे नष्ट
से लम्पट-दुष्ट
देवता छल कहबैत घर-घर मे पूजित होइत

एहन परिज्ञानक बाद ओहि युगसभक आदर्श कि मान्यताक आलोचक बनब 'किरण' लेल स्वाभाविक रहनि। हिनक अवधारणाक अनुसार सतयुग अयबाक बेर आब भेलैक अछि–

हमर गीत सँ उतरि रहल अछि
अस्सल सतयुग आइ
युगक शत्रुता तेजि असुर-सुर
बनि रहलै अछि भाइ

एहि सतयुग मे–

आब अजीगर्त भूखेँ सुत
बेचत (न) बनत कसाइ
मुनि वशिष्ठ केर बाछी मारल
जायत न हयत लड़ाइ
× × ×
पिबइत दूध मायक कोरामे
कर्ण आब घरहि मे रहता
लड़ि अपनामे कौरव-पाण्डव
कय नहि सकता देशक नाश

लय सोलह हजार गोपीकेँ
कृष्णो नहि कय सकता रास

ई कविता 1955 ई॰ मे लिखल गेल छल। नव-नव प्राप्त स्वतंत्रता सँ उत्तेजित कवि मे एहि तरहक आश्वस्ति तथा अपेक्षाक स्वर बहुत संगत छल।

वर्तमान सदीक छठम दशक 'किरण'क कवि-जीवनक महत्त्वपूर्ण दशक थिक, जाहि मे ओ किछु एहन कविता ओ गीतक रचना कयलनि जे हिनक कविक वास्तविक प्रकृति तथा अकृत्रिम शील केँ रेखाङ्कित करैछ। डा॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क मतेँ—

"वस्तुतः किरणजीक काव्य-जीवनक स्वर्णकाल उपस्थित होइत अछि, एहि शताब्दीक छठम दशकक अवधि मे ओ एही काल मे आबि हुनका मे भाषागत प्रौढ़ता, विचारगत दृढ़ता, अभिव्यक्ति-रीतिगत वक्रता आदिक दर्शन होबय लागल ओ एही काल मे आबि हिनक 'मिथिलाक वसन्त', 'अन्तर्ध्वनि', 'ताजमहल', 'माटिक महादेव', 'जयमहादेव' आदि श्रेष्ठ कविता रचल गेल।"

[किरणजीक व्यक्तित्वक विकास यात्रा ओ विलक्षणता'—अर्पण (किरण स्मृति अंक)-1989]

'किरण' प्रगतिशील चेतनाक कवि होइतो ओहि राजनीतिक दर्शनमे प्रकट आस्था नहि रखैत रहथि जे एहि चेतनाक पाछाँ कार्यरत मानल जाइछ। हिनक प्रगतिशीलता, जे मिथिलाक सामाजिक विषमताक आग्रहहीन व्याख्या मे प्रतिविम्बित भेल अछि, वस्तुतः भक्त कविलोकनिक मानवतावाद तथा सामान्य रूप सँ प्रबुद्ध मनुक्खक आदर्शवाद तथा गैर मार्क्सवादीक समाजवादक समस्त विशिष्टता सँ अनुप्राणित थिक, यद्यपि ठाम-ठाम 'किरण' आदर्शवादक प्रकट विरोधो मे ठाढ़ नजरि अबैत छथि। 'किरण'क साहित्यकारक गढ़नि तथा वैचारिकताक सम्बन्धमे योगानन्द झा अपन एक लेख मे अत्यन्त संतुलित टिप्पणी कयने छथि—

"डा॰ काञ्चीनाथ झा 'किरण'क साहित्यमे जाहि सामाजिक जीवन-दर्शनक प्रस्तुति भेल अछि से सम्पूर्णतामे युग-जीवनक प्रतिनिधित्व करैत अछि। मिथिलाक माटि-पानिक ई प्रगतिशील व्याख्याकार अपन साहित्यक माध्यमे निरन्तर जन-चेतनाकेँ उदबुद्ध करैत रहलाह। सामाजिक चेतनाक मुखर अभिव्यक्ति हेतु ई एके संग आदर्शवाद, मानवतावाद, समाजवाद आदि विभिन्न विचारधाराकेँ अन्तर्भुक्त करैत सृजनरत रहलाह। स्वभावतः हिनक रचनामे कोनो खास विचारधाराक एकात्म प्रवाह नहि, अपितु विभिन्न विचारधाराक समेकित स्वरूप दृष्टिगोचर होइछ आ एहि समेकित स्वरूपमे एकटा आदर्श सामाजिक जीवनक परिकल्पना अभिव्यञ्जित भेल अछि।"

['किरणजीक मुक्तक काव्यमे सामाजिक चेतना' अर्पण (किरण स्मृति अंक-1989)]

'किरण'क कविता 'मिथिलाक वसन्त' 1954 ई॰ मे लिखल गेल छल। एहि कविताक प्रसङ्ग ई जनुश्रुति थिक जे ई कविता सरसकवि ईशनाथ झाक एक कविताक

प्रतिक्रियास्वरूप लिखल गेल। एहि बातक पुष्टि स्वयं 'किरण' कऽ सकैत छलाह, जे आब नहि छथि। तखन यथार्थ जे हो, एक विषयक प्रति भिन्न-भिन्न कविक फराक-फराक प्रतिक्रिया एकदम स्वाभाविक थिक आ एहना मे कोनो निरर्थक विवाद कें तूल देब साहित्यक लेल कोनो तरहें उपयोगी बात नहि भऽ सकैछ। कोनो कवि लेल वसन्त सुषमा ओ सौन्दर्यक प्रतीक हो, 'किरण'क लेल से नहि छनि। ओ अपन देश-कोशक वस्तुस्थितिकें वसन्तक स्वागत मे गीत गयबा जोगर नहि बुझैत छथि, कारण जे –

अकटाक कुसुम कमनीय लाल
नीलम सन तीसीकेर सुमन
सरिसव शुभ सुन्दर पोखराज
सुषमा लखि होइ छल मुग्ध नयन
मनोहारिणी से धरती नीरस परती पाषाण बनल

एहि 'नीरस परती पाषाण बनल' धरती मे यथार्थ गप्प ई थिक जे–

झर-झर सन-सन, लंकाक पवन
सम बहय प्रभंजन पछबा सदिखन
आतंक त्रस्त घर-घरमे मानव
जनि आबि रहल दुर्मद दानव
लजबय गुलाब कें जे कपोल
जननी टा जानय जकर मोल
झरि पड़इछ किसलय भय पीयर
जकरा विलोकि से शिशुक अधर

कवि लेल मिथिलाक भूमि, जे विसूचिका ओ श्वसनक ज्वरक मारल अछि, जे नोनचट, उड़ीस ओ मच्छड़ सँ पाटल अछि, वसन्तक स्वागत हेतु उपयुक्त नहि थिक। तैं 'किरण' प्रश्न करैत छथि जे एहन विपरीत स्थितिमे–

के बताह कवि भाङ पीबि स्वागत वसन्त अछि गाबि रहल।
पिबइत दूध पवित्र मधुर मा मिथिला केर कोरमे बैसल।

'किरण'क मोन मे एहि बात लेल क्षोभ रहनि जे देश-कोसक स्थिति सँ अनजान बनि कोना क्यो मात्र रमणीय राग मे रमल रहि सकैत अछि।

'किरण' कें वसन्तक स्वागत अनसोहाँत लगैत छनि, मुदा आषाढ़क लेल हिनका मोन मे पर्याप्त अनुराग छनि। ओ जनैत छथि जे ई मास धरतीक ताप संग खेतिहर लोकनिक संतापोक शमन करैत अछि। 'किरण' आषाढ़ कें 'ऋतुपतिक जनक सुषमा आङन ! मानैत छथि–

ऋतुपतिक जनक सुषमा-आङन !
क्रुद्ध सर्प सन दिनकर छल
अवनी अम्बर अनल भरल
अनल गरल कैं बोकरि रहल
अबितहि अहाँक सब भेल शान्त
श्यामल तमाल तरु राजि-कान्त
घनश्याम आयल घुरि सानुराग
वसुधा-राधा केर लय सोहाग

आषाढ़ मे घनश्यामकैं सानुराग अयलासँ धरतीक कोखि नव ढंगें सृजन हेतु पुनः तत्पर होइछ आ 'किरण' लेल ई तथ्य पर्याप्त उल्लासक सृजन करैछ। हुनक ध्यान खेत मे हर चलबैत कृषक पर जाइत छनि जे 'जनक-यज्ञक' अभिनय मे लागल अछि। ओ कन-कन करैत धरती पर चलैत कोदारिक सन-सन आवाज मे सृष्टिराग अकानैत छथि—

जनक यज्ञ केर करइत अभिनय
पढ़इत गीत-मन्त्र हर चलबय
सावधान अछि केओ आरि पर
जनि यज्ञक ब्रह्मा छथि तत्पर
पैरहुँ सँ एकरा नहि छूबय
जे तकरे घर अन्नैं पूरय
ई धरती तैं करइत कन-कन
क्यो कोदारि चलबै अछि सन-सन

धरतीक कन-कन करबाक कारण कविक दृष्टि मे ई विवशता छनि जे हुनका पैरो सँ नहि छूबयवलाक घर हुनका अन्न सँ भरऽ पड़ैत छनि। 'किरण' अपन रचना मे एहन कोनो अवसर व्यर्थ नहि गमाबय चाहैत रहथि, जे हुनक आस्था तथा सहानुभूतिकैं बोल देबा लेल उपयोगी हो।

'किरण' शोषक वर्ग तथा ओहि सँ सम्बद्ध चाटुकारक कोनो काज आबय नहि चाहैत रहथि, ओहि वर्गक मनोरंजनक ओरिआओनो करब हुनका कबूल नहि रहनि। जे पुरना कवि सभ ओहि वर्गक गुणगान कयलनि कि ओहि वर्गक अथवा ओहि वर्गक लेल कथा लिखलनि, तिनका 'किरण' पराधीन बुझि करुणाक पात्र मानलनि अछि। 'किरण' 'हमर कामना' शीर्षक कविता मे अपन पक्षधरता स्पष्ट रूप सँ अङ्कित कयने छथि। धनपतिक नगर अलका तथा 'अलकाक परिक' कथा कहबा लेल कवि 'किरण' उपहासक स्वर मे कहैत छथि :

पुरना कवि सभ छल पराधीन
जीबै छल नृप लग बनल दीन
विश्व छलै राजाक सभा
आँखि एकोर खुटेसल प्रतिभा

मुदा 'किरण'क कविताक विषय धनपतिक नगर अलका कि अलकाक परी नहि भऽ सकैत छल। हुनक विषय तऽ रहनि ओ मानव जे नगराजक सिर पर मस्त ठाढ़ छल, जे 'जरा-गलाकऽ अपन हाड़' मानव-समाज लेल सुखक ओरिआओन मे लागल छल।

'किरण' कें 'अलकाक परिक' कथा लिखबा सँ परहेज रहनि, मुदा मिथिलाक परिक कथा लिखब हुनका सहर्ष स्वीकार रहनि जे अपन मनक व्यथा पचा जाइत छथि—

मिथिलाक परी छथि कते रास
जनिक जीवने अछि प्रवास
अपने घर तँ प्रिय सुतनिहार
प्रियतम घर तँ अपने बहार
दुहु दुहुक हित खटइत मरैछ
किन्तु ने कहियो ही भरि मिलैछ
कनखीक कला भौंहक विलास
ठोरक बिजुकी घन घन निसास
विहुँसी मुसकी सभ मुरुछि मरय
अउँठा सँ दरद न लिखि सकय
हम तही परीकेर लिखब कथा
जे पचा जाइत अछि मनक व्यथा

एहि शताब्दीक छठम दशक मे 'किरण' महादेवकें विषय बना दू गोट कविता लिखलनि—'माटिक महादेव' ओ 'जय महादेव'। एहि दुनू कविताक स्वर प्रगतिशील होइतो एहि दुनू मे प्रस्तुत महादेव भिन्न-भिन्न गात आ गोत्रक छथि। 'माटिक महादेव'क महादेव बलवान मानवक हाथक बल सँ सराइ पर बैसि पूज्य बनि गेल छथि, धूप-दीप नैवेद्य पबैत छथि, कारण जे 'लोक अछि आन्हर परबुद्धी/जानैत अछि स्थानक टा सम्मान'। आगाँ 'किरण' कहैत छथि—

नहि तँ जकर बले रुचिगर
बनैत छै भोज्य-पदार्थ
तै लोढ़ी-सिलौट कें ओंघड़ाय
मन्दिर मे पड़ल निरर्थक
पाषाण पिण्ड कें क्यो की करत प्रणाम

'किरण'क एहि पाँती सभकेँ पढ़ैत ककरो कबीरदासक स्मरण होयब स्वाभाविक थिक। ओहो पाथरक पूजा पर व्यंग्य करैत कहने छथि –

पाथर पूजे हरि मिले तो मै पुजूँ पहाड़।
ताते ये चाकी भली जो पीस खाय संसार।।

'किरण' देवता मे, देवत्वक प्रतिष्ठा मे मनुष्यक हाथ देखैत छथि आ तैं ओ महादेव सँ सहज भाव सँ कहि पबैत छथि जे 'नहि करह कनेको अहंकार', कारण जे जकर अस्तित्वे आनक आस्था पर निर्भर करैत छैक, ओ उचिते कोन गुण पर अहंकार करत। मुनष्यक अपरिमित बल मे निष्कम्प आस्था रखनिहार 'किरण' देवताक श्रेष्ठत्व पर अपन कविता 'सतयुग' मे सेहो प्रश्नचिह्न लगौने छथि।

'जय महादेव'क महादेव केँ 'किरण' 'जन एकता साकार' कहैत छथि–

भूतप्रेत-अर्द्धनग्न कंकाल सार
मानव केर दल, नर-नारी सभ भावेँ संयुक्त एकाकार
कृषिकर्मक मौलिक प्रतीक बड़द पर भेल सवार
हे ईश अहाँ छी जन-एकता साकार।

एहि महादेवक जन संग एकताक ज्वलन्त दृष्टान्त ई थिक जे ई स्वयं 'घर-घर भीख माङि जीबैत' रहथि। वस्तुतः सभ देवता मे महादेव एकमात्र एहन देवता छथि जिनका मे सामान्य जनकेँ किछु अपन-सन लगैत छैक। बड़दक सवारी प्रतीक रूप मे सृजन ओ जीवन संग हिनका जोड़ैत अछि। तखन कवि हुनक कल्याणकारी रूप संग ई सेहो नहि बिसरैत छथि जे–

छी अहाँ सदाशिव, विश्वम्भर
भय क्रुद्ध बनै छी प्रलयङ्कर
सुन्दर नवयुग निर्माण हेतु
करइत छी जग केँ क्षार-खार

'किरण' केँ एहि बातक अतिरिक्त प्रसन्नता छनि जे महादेव इन्द्र कि विष्णु जकाँ दोसर लोकक वासी नहि छथि आ ई तथ्य महादेव केँ लोक संग आत्मीयताक बन्धन मे बान्हैत अछि :

पीबि सुरा
अप्सरा संग नंदन वन मे विहरथु महेन्द्र
रमथु रमा संग मे उपेन्द्र

धरा परक सर्वोच्च, हिम-निर्मल अवदात स्थान
पर करइत पिनाक टंकार, अहीं छी वास करैत।

महादेवक दाता-रूप 'किरण' कें आकृष्ट करैत छनि, मुदा महादेवक जे गुण हिनका अभिभूत करैत छनि ओ थिक एहि देवता द्वारा कुलमूलक अहंकारक भञ्जन। 'किरण' कें लगैत छनि जे लोक महादेव कें नीलकण्ठ विषपायी बरु कहौन, सत्य तऽ ई थिक जे—

दैत छी जग कें अहीं निज माथ सँ
शशिकला सम रुचिर स्निग्ध प्रकाश
मन्दाकिनी केर विमल शीतल
सलिल धारा सदृश जीवनदान
हे नकुल, कुल मूलक अहङ्कार कें तोड़निहार
छी अहाँ जन-एकता साकार

'किरण' द्वारा रचित 'गामक मधुमास' शीर्षक कविता अपन प्रसादगुण तथा व्यञ्जकता लेल हिनक समस्त मुक्तक कविता मे विशेष स्थान रखैत अछि। एहि कविताक शब्द योजना अत्यन्त सरल, विम्ब योजना जतबे साफ ततबे उपयुक्त ओ विश्वसनीय तथा भाव योजना पूर्णतः हृदयग्राही थिक। एहि मे मधुमासक अयला सँ प्रकृतिक सौरभ मे भेल अभिवृद्धि दिस संकेत करैत कविक नजरि गामक पात खड़रनिहारि बेटी, जे धरतीक वास्तविक धीया छथि आ 'गाछक अङना' साफ कऽ रहलि छथि, पर पड़ैत छनि —

धरतीक धीया
भोर ल' पथिया
गाछक अङना साफ करइ
मधुमास एलइ ! मधुमास एलइ

'किरण'क कान गामक बेटी द्वारा खड़रा लऽ आङन साफ करैत काल होइत खड़राक खर-खर, पातक कर-कर सङ, कङनाक झनझन तथा चूड़ीक झम-झम सेहो सुनैत छनि आ तखन हिनका लगैत छनि जे 'धरा रागिनी गान भरइ'। मधुमासक आगमन सँ लोक कें जोश ओ उत्साहक बढ़ब अत्यन्त स्वाभाविक थिक, परन्तु एहनो मे युवती ओ बूढ़िक स्थिति एक नहि भऽ सकैछ। तखन युवती पर बूढ़िक कोप होयब नितांत संगत—

क्यो हँसैत चलइ
क्यो हकमैत चलइ

चमकि दौड़ि क्यो आगू बढ़इ
लटपट करइत बूढ़ि पुरनियाँ
नवकिक गति पर बाहुर किचइ ?
मधुमास एलइ ! मधुमास एलइ !

गाममे मधुमास अयला पर कविक दृष्टि प्रकृतिक सुषमा सँ अधिक पात खड़रैत आ हँसोथैत गामक धीया पर पड़ैत छनि। अपन असमर्थता लेल दाँत किचैत बूढ़ि पुरनियाँ पर जाइत छनि आ ई तथ्य हिनक वैचारिकता कें पर्याप्त स्पष्टता संग रेखाङ्कित करैत अछि। लोक ई अनुभव करैत अछि जे कोनो स्थिति मे 'किरण' ओहि वर्ग पर सँ अपन नजरि नहि हटबैत छथि जकरा प्रति हिनका अथोड़ आत्मीयता आ असीम सहानुभूति छनि।

ताजमहल एहि देशक रचनाकार लोकनि लेल अत्यन्त आकर्षणक विषय रहल अछि। साहित्यक अनेक विधा मे एहि विश्व-प्रसिद्ध स्मारकक अनेक दृष्टिएँ चित्रण भेल अछि। क्यो एकर अद्‌भुत स्थापत्य सँ अभिभूत भेलाह अछि तऽ ककरो एकर निर्माणक पाछाँ दिव्य प्रेम भावनाक अनुभूति भेलनि अछि। किछु एहनो रचनाकार भेलाह अछि जिनका ताजमहल मे वायवीय प्रेमक सामन्ती प्रदर्शन नजरि अबैछ, जे जनताक शोषणक बल पर संभव भेल अछि। 'किरण'क 'ताजमहल'क मूल अनुभूति कें रामलोचन ठाकुर द्वारा एना प्रस्तुत[1] कयल गेल अछि—"कतेक काव्य बनल अछि ताजमहल पर ? कतेक तथाकथित सहृदय कवि-कलाकार ताजमहल कें देखय जाइत छथि आ शाहजहाँक प्रेमक प्रशंसाक गीत गबैत छथि।

"परन्तु ताजमहल थिक की ? शाहजहाँक प्रेमक प्रतीक, की हुनकर वैभव प्रभुत्वक प्रतीक ? कोन कृतित्व अछि ताजमहल मे शाहजहाँक ? नक्सा वास्तुकला-विद्‌क ! लूरि निर्माणकर्त्ताक ! परिश्रम मजूरक ! आ धन जनताक !"

× × ×

"मुमताजक वाह्य सौन्दर्य छल शाहजहाँक प्रेमक आलम्बन, आ प्रेमो छल वाह्य सुन्दरते (सँ)। तैं ताजमहलक विलक्षणतो तऽ अछि वाह्य सुन्दरते।"

कविगुरु रवीन्द्र कें ताजमहल कालक कपोल तर बाँचल अप्रतिम प्रेमक शुभ्र-समुज्ज्वल प्रतीक लगैत रहनि तऽ साहिर लुधियानवीकें एहिमे एक बादशाह द्वारा अपन वैभवक सहयोग सँ गरीबक उड़ाओल 'मजाक' नजरि अबैत रहनि। 'किरण' अपन 'ताजमहल' मे ने मुमताजक अलौकिक रूपकें स्मरण करैत छथि आ ने शाहजहाँक दिव्य प्रेमकें मान्यता दैत छथि। हिनका ताजमहलक पृष्ठभूमि मे 'हिन्दू जातिक द्वेषी' मुगल शासक औरंगजेबक विध्वंसक रूप, राजनीतिक चौपड़ि खेलनिहार अकबर, कृष्णक प्रिय

1. नूतन किरण (कर्णामृत, किरण स्मृति अंक-1989)

जमुना-तट पर ताजमहलक निर्माण मे मन्दिर पर मस्जिद बनयबाक संकेत तथा हिन्दू जातिक स्वाभिमानहीनताक दर्शन होइत छनि। एहि कविता सँ दू टा उद्धरण हम एतय प्रस्तुत करब, जाहि सँ कविक मूल कथ्यकेँ रेखाङ्कित कयल जा सकैत अछि—

बताह थिक ओ जे कहैत अछि तोरा
साहजहाँ केर मुमताजक प्रति दिव्य प्रेम साकार
जँ साहजहाँ केँ मुमताजक
अतिसय प्रेम छलैक
तँ कोना क' सहलक ओकर मरणक आघात ?
की देखैक निर्मित बूढ़ रहितहुँ
कारा घर मे बन्द
बेटा सबहक मरण देखैत-सुनैत
रहल ओ जीबैत ?

×××

सुन्दरता मे लुबुधल मानव होइत अछि मौगियाह
तञ रे ताजमहल
तोँ थिकेँ
मुगल विदेशी बादसाह साहजहाँ केर
प्रभुता-वैभव-नीति-निपुणता
हिन्दू जातिक पौरुख ओ अभिमानहीनता
नीतिशून्यता, बुद्धि विकलता
परिभवमय इतिहासपूर्णता केर साक्षी साकार।

कवि 'किरण'क दृष्टि ताजमहल केँ देखबाक स्थापित दृष्टि सँ निश्चित रूप सँ भिन्न छनि, मुदा सर्वथा नव नहि छनि। हँ, एहि कवितामे निश्चित रूप सँ एहन किछु बात कहल गेल अछि जे किछु अंश मे आपत्तिजनक होइतो एहि संदर्भ मे कहल गेल बात सभसँ भिन्न आ नव थिक। यद्यपि 'किरण' अपन कथ्य केँ अपेक्षित कुशलता, विश्वसनीयता आ तार्किकता संग प्रस्तुत नहि कऽ सकलाह अछि, तथापि ई हिनक पर्याप्त चर्चित कविता थिक।

गीत तथा मुक्तक कविताक अतिरिक्त 'किरण'क 'पराशर' नामक एकटा और काव्यकृति उपलब्ध अछि, जकरा स्वयं कवि ने तऽ सर्गबंध महाकाव्य कहलनि आ ने छान्दस कविकर्म। ओ एकटा खण्डकाव्य किंवा दीर्घ कवितो कहि अभिहित नहि कयलनि। भिन्न-भिन्न उपशीर्षक मे बाँटल डिमाइ साइजक चौरासी पृष्ठक ई काव्य 'किरण'क अंतिम महत्वपूर्ण काव्य-कृति छनि आ एहि काव्य-रचना लेल 'किरण' केँ मरणोपरान्त

साहित्य अकादेमीक पुरस्कारो प्रदान कयल गेलनि। मैथिलीक कविताक शिखर-पुरुष सुरेन्द्र झा 'सुमन' एहि काव्य कें महाकाव्यक गरिमा सँ मण्डित[1] मानैत छथि। 'परिषद पत्रिका'क किरण-स्मृति-अंक-1990 मे प्रकाशित'किरणजीक पराशर' मे श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश' एकरा प्रबन्ध-काव्य कहैत छथि तऽ मोहन भारद्वाज एकरा कविता अथवा कथा-काव्यक कोनो उपविधा मे खतिअयबा[2] लेल उदारता संग प्रस्तुत छथि। ओ एकर कथ्य सँ एतेक अभिभूत छथि जे एकर रूपक सम्बन्ध मे कोनो चिन्ता अनावश्यक बुझैत छथि।

संस्कृत काव्य-शास्त्र मे प्रतिपादित महाकाव्यक धारणा सँ पूर्णरूप सँ अवगत होइतो कविवर 'सुमन' यदि 'पराशर' कें महाकाव्य मानैत छथि तऽ तकर आधारो ओ स्पष्ट करैत छथि—

"कथावस्तु, नायक, रस ओ उक्ति-विच्छित्ति देखल जाय अथवा देश-काल, व्यक्ति-समाजक ओ आचार-व्यवहारक समुच्चय मानल जाय, प्रकृति-वर्णन ओ मनोभावक विश्लेषण सुनल जाय किंवा कथानकक परिधि, चरित्र ओ उक्तिक उदात्तता गुनल जाय, 'पराशर' अपनामे पूर्ण अछि—महाकाव्यक गरिमा सँ सर्वथा मण्डित अछि।

"स्पष्टतः इतिवृत्तक प्रसङ्ग पुराणेतिहास कें उपजीव्य बनयबाक परम्परा जे प्रचलित रहल, तदनुकूल ई अवश्य पुराण-भारत सँ प्रवर्त्तित अछि। किन्तु से रहितहुँ ई अभिनव कवि-कल्पना सँ समन्वित अछि। ध्वनिकारक उक्ति एतय चरितार्थ होइछ जे—'यथैव रोचते ह्यस्मै तथा विश्वं प्रवर्तते।"

'पराशर' कें महाकाव्य मानैत सुमन एहि काव्य-विधाक सम्बन्ध मे जे धारणा प्रकाशित करैत छथि, ओ संस्कृत काव्य-शास्त्रक मान्यता सँ बहुलांश मे सहमत होइतो एहि काव्य मे 'अभिनव नव-कल्पना'क उपस्थिति दिस संकेत करैछ, अर्थात् (प्रकारान्तरसँ) एकर अपारम्परिकताकें रेखाङ्कित करैछ।

समय, समाज आ साहित्य मे होइत बदलाओक कारण पारम्परिक काव्यशास्त्रीय सोच तथा मान्यता मे संशोधन-परिवर्द्धन एकटा सहज आ स्वाभाविक प्रक्रिया होइछ। तें संस्कृत काव्य-शास्त्रक ऋणी सभ भारतीय भाषा साहित्यक काव्य-शास्त्र कि आलोचना शास्त्र नव समय, समाज आ साहित्यक अनुरूप अपन मान्यताकें नव संस्कार प्रदान करब आवश्यक बुझलक अछि। हिन्दीक पं. रामदहिन मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डा. गुलाब राय, शचीरानी गुर्टू, डा. शम्भूनाथ सिंह आदि काव्यशास्त्री महाकाव्यक सम्बन्ध मे पारम्परिक मान्यताक प्रति अनुराग रखितो पाश्चात्य मान्यता तथा साम्प्रतिक बोधक आंशिक स्वीकृति दिस प्रवृत्त लगैत छथि। महाकाव्य कें 'इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' मे एहि तरहें परिभाषित कयल गेल अछि :—

---

1. पराशर ओ किरण : कृति ओ कृती (पराशर क भूमिका)
2. पराशरक प्रासंगिकता : मोहन भारद्वाज (अनवरत मे संकलित)

"Epic poetry or epic, the name given to the most dignified and elaborate forms of narrative poetry. In this form epic poems were composed not merely dealing with war and personal romance but with didactic religious purposes."

पारम्परिक काव्यशास्त्रीय धारणा तथा पाश्चात्य धारणा मे समन्वय स्थापित करैत महाकाव्यक सम्बन्ध मे अखन जे धारणा भारतीय साहित्य मे प्रचलित अछि, तकर झाँखी शची रानी गुर्टू द्वारा प्रतिपादित मान्यता मे स्पष्ट देखल जा सकैछ। ओ मानैत छथि जे महाकाव्य[1] मे वर्णित विषयक उचित परिपाक, व्यंजनाक प्रधानता एवं छिलकैत रसप्रवाह होयबाक चाही। जाहिमे उत्कृष्ट व्यंजना, वैलक्षण्य एवं महाकवित्व नहि, ओ आकार मे पैघ भेलो पर महाकाव्य कहयबाक अधिकारी नहि अछि। महाकाव्य मे जीवनक समष्टिक अभूतपूर्व झांखी, पार्थिव कर्त्तव्य एवं चेष्टाक अवसान, सत्य-सौंदर्य एवं स्वातन्त्र्यक अनुपम मिश्रण तथा वाह्य एवं अन्तर्जगत कैं परिप्लावित कयनिहारि मंगलमयी निर्मल मन्दाकिनी निर्झरित होइत अछि, जाहि मे अद्भुत श्री, अद्भुत शांति एवं सम्पूर्णता व्याप्त रहैत अछि। निस्सन्देह एहने महाकाव्य मे विश्वात्मा संचरण करैत अछि आओर ओकर प्रभाव ओकर अपन समय, देश, जातिमात्र धरि सीमित नहि होइछ अपितु ओकरा पाछाँ आबऽवला युग, इतर देश, जाति एवं संस्कृति पर सेहो अमिट रूप सँ अंकित होइछ।" मैथिली मे महाकाव्य सम्बन्धी अवधारणा मुख्यतः पारम्परिक मान्यते पर निर्भर रहलि अछि, परन्तु ओहि मे, जेना कि 'सुमन'क मान्यता मे हमसभ देखल अछि, समय सापेक्ष नवताक समावेश कयल गेल अछि। डा॰ शिवशंकर झा 'कान्त' अपन शोध प्रबन्ध 'मैथिली महाकाव्यक उद्भव ओ विकास' मे महाकाव्यक सम्बन्ध मे भिन्न-भिन्न मान्यता पर विचार करैत निम्न निष्कर्ष पर पहुँचैत छथि :—

"तात्पर्य जे महाकाव्य उदात्त शैली मे महान चरित्रक जीवन्त कथानक कैं विविध वर्ण्यवस्तुक सहायता सँ उपस्थित करैत अछि, जे मनोविश्लेषणात्मक होयबाक कारणें सहज सम्बद्ध आ सार्वजनीन होइछ तथा जे तीव्र प्रभान्वितिक कारणें युगक सीमाकैं टपि सार्वकालिक होइछ।"

हम बुझैत छी जे महाकाव्यक पारम्परिक धारणा मे समय-सापेक्ष संशोधन-परिवर्द्धन पर नजरि रखैत 'पराशर' कैं महाकाव्य मानबा मे किनको विशेष आपत्ति नहि होयबाक चाही, कारण जे एहिमे पराशर सन महान ऋषि-चरित्रक जीवन्त कथानक सर्वथा नव संदर्भ मे प्रस्तुत कयल गेल अछि तथा अपन तीव्र प्रभान्वितिक कारण युगक सीमा कैं टपि सार्वकालिक होयबाक क्षमता एकरा मे मौजूद छैक।

---

1. साहित्य दर्शन (प्रथम भाग)—'मैथिली महाकाव्यक उद्भव ओ विकास' नामक शोध प्रबन्ध मे डा॰ शिवशंकर झा 'कान्त' द्वारा यथा उद्धृत

कविवर सुमन कें 'पराशर' मे कविक 'अभिनव नव कल्पना'क साक्षात्कार होइत छनि तऽ डा॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश' कें 'पराशर'क रचना प्रणाली परम्परा सँ सर्वथा मुक्त लगैत छनि। सङ्गहि एहि मे प्रस्तुत विलक्षण समाज दर्शनो कें ओ रेखांकित करैत छथि। 'श्रीश'क अनुसार—

"मैथिली साहित्य जगत मे 'किरण'जीक चिर-अमरत्वक आलोक-स्तम्भक रूप मे हुनक प्रबन्ध-काव्य 'पराशर' सदैव स्मरणीय रहत। 'किरण'जी एहि काव्य-रचनामे गतानुगतिकता सँ अपना कें सर्वथा मुक्त राखि आद्यन्त मुक्त-वृत्तहिटा प्रयोग कएने होथि, एतबहि टा नहि, प्रत्युत हुनक रचना-प्रणाली सेहो परम्परा सँ सर्वथा मुक्त अछि। यदि मुक्त नहि छथि तँ ओ अपन विलक्षण प्रगतिशील समाज-दर्शन सँ। एकर सोद्देश्यता कें सेहो ओ अपन जीवन-दर्शन सँ, अपन व्यक्तित्वक गतिशील अभिनवता सँ अनुरंजित कए देने छथि।[1]

स्पष्ट थिक जे 'पराशर' कें देखबा-परखबा लेल नव दृष्टि आ नव-मानदण्ड आवश्यक थिक, अन्यथा किछु एहन विवाद ठाढ़ भऽ जा सकैछ जाहि सँ काव्योक रूप मे एकर उचित मूल्याङ्कन संभव नहि होयत। एकर कथा-वस्तु, जे संक्षेप मे प्रस्तुत कयल जा रहल अछि, गोत्र-प्रवर्त्तक-ऋषि पराशरक व्यक्तित्वक किछु अपारम्परिक आयामक उद्घाटन करैत अछि—

'पराशर'क कथा सोड़ह उपशीर्षक (जकरा सुविधापूर्वक सर्ग वा अध्याय कहल जा सकैछ) मे बाँटि कऽ कहल गेल अछि। पहिल अध्यायक नाम 'सत्यज्ञान' थिक जाहि मे 'पराशर' कें एहि सत्यक ज्ञान होइत छनि जे भिन्न-भिन्न स्तर ओ जातिक लोकक शोणित स्तर कि धर्मक आधार पर भिन्न-भिन्न नहि होइछ। जाहि घटनासँ हुनका ई आत्मबोध होइछ ओ किछु एना अछि—

प्रगतिशील ऋषि रचित ऋचाकें
मधुर स्वरें गबैत
पराशर निज आश्रम-उपवन मे
बाम हाथ सँ साजीक संगहि
छला नवौने डारि
आ घाड़ उठा कऽ दहिन हाथ सँ
गाछक निश्छल हास सदृश
फलकल-फलकल फूल तोड़ि
साजीमे राखैत।

---

1. किरणजीक पराशर : डा॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश'—परिषद-पत्रिका (किरण-स्मृति अंक 1990)

फूल तोड़बा मे एहि तरहेँ तल्लीन ऋषि पराशर केँ –

तहिखन बुझि पड़लनि जे पैर पर
चिक्कन चाबुक अछि बजरल।
चौंकि छरपि दूर जा
ताकल पाछाँ घूरि
देखल विस्मित होइत
तीर सँ बेधल फण अयोध गहुमन
छल छटपटाइत, शोणित बोकरैत।

ऋषि केँ स्वाभाविक जिज्ञासा होइत छनि–

के सहृदय मानव कयलक अचूक
प्रहार
यमक समान एहि दराध पर ?

आ तखन हुनका ज्ञात होइत छनि जे किछु जंगलवासी नेना सभ मे एक हुनका पैर पर बजरैत साँप केँ तीर सँ बेधि मुनिक प्राण रक्षा कयने छल। मुनि सोचमे पड़ि जाइत छथि जे जकरा आश्रम मे प्रवेशक अनुमति नहि छैक (जखन कि कुकुरो आ गिदरो आश्रम मे ढुकि जाइछ), जकरा –

हम सभ दैत छिऐक दुत्कार, फटकार
कुकुरो गिदर सँ बदतर मानैत छियेक
तखन किया ओ मारि साँपकेँ
बचौलक प्राण हमर
की कोनो धर्म विशेष हमर ओकर शोणितमे
अछि विद्यमान ?
अहंकार वश हमर शोणितक ओ धर्म अछि
मरि गेल ?
अहंकार रहित ओकर सबहक शोणित मे छै
जीवंत ?

पराशरक एहि सत्य ज्ञानक बाद वर्णित अछि हुनक आश्रमक शिष्यलोकनि द्वारा कयल ऋचापाठक हुनका द्वारा श्रवण। 'ऋचापाठ' नामक 'पराशर'क दोसर अध्याय कि सर्गक इयाह विषयवस्तु थिक। एहि ऋचा सभक स्वर नितान्त प्रगतिशील थिक जाहि मे पुरना यथार्थक नव व्याख्या प्रस्तुत कयल गेल अछि। एहि ऋचा सभ मे शोषक-शोषित,

रङ्ग -भेद, क्रान्ति आदि सभ धारणा तथा नारीक प्रति नरक निष्ठुरता, मिथिलाक स्वातंत्र्य बोध आदि सन बिन्दु नव तरहें उपस्थापित कयल गेल अछि।

राति सँ दिन, दिन सँ राति,
दुनू परिवर्तनक काल मे
आकाश दिशा होइत अछि
शोणित समान लाल।
राति-दिन नित्य अछि होइत
तैं नहि जाइत अछि ध्यान
मुदा ई थिक परिवर्त्तन महान
जकरा कहैत छिऐ क्रान्ति।
क्रान्तिक रंग थिक लाल शोणित सन लाल।

ऋृचा मे क्रान्तिक गप्प करब ककरो अजगुत लागि सकैछ, मुदा 'किरण' ई अजगुत एहि लेल करैत छथि जे 'पराशर' मे समस्त पुरना सत्यक नव संदर्भ मे पुनर्व्याख्या प्रस्तुत करब हुनका एकान्त रूप सँ अभिप्रेत छनि।

'बनक बाट' नामक तेसर अध्याय मे पराशर जाहि बनक मध्य सँ जाइत वर्णित भेल छथि, ओहि बनक नाना वनस्पति, पशु-पक्षी आदिक बड़ जीवंत चित्र प्रस्तुत भेल अछि। एहि मे एकटा बन-वासिनी वृद्धाक सामाजिक-विश्लेषण मुनि कैं चमत्कृत कऽ दैत छनि। सामाजिक विद्रूप पर प्रहार करबाक कोनो अवसर 'किरण' व्यर्थ नहि जाय दैत छथि—

डाँट, पात, पत्ती, गतर-गतर मे काँट भरल
अणारि छलि जनु चितंग पड़ल
आ कोरा मे मधुमती मालती फुलैत रहय तरल।
जेना मैथिल ब्राह्मण समाज बीच
जाति-पाँजिक जादुक युग मे बूढ़ विरूप
दुर्दुर वरक कोर मे विवसा गुणमयी कन्या
छलि हँसैत।

थाकल-ठेहिआयल पराशर पाकड़िक झमटगर गाछ तर पड़ि रहैत छथि। एकटा अस्पृश्या वृद्धा दू टा नारिकेर आ सुल्फा दूरहि सँ समर्पित करैत डाभक पानि पीबि क्लान्ति दूर करबाक आग्रह करैत छनि आ ओहि वृद्धाक स्नेह-व्यवहार सँ पराशर कैं तत्काल अपन मायक स्मरण अबैत छनि आ ओ एकरा प्रकट करैत छथि— "आइ हमर माय तोहर तन मे जनि छलि आबि गेलि।"

आ पराशरक एहि उच्छ्वास पर वृद्धाधक प्रतिक्रिया हुनका अप्रतिभ कऽ दैत छनि—

बुढ़िया बाजलि मधुर सुदृढ़ स्वर मे
बाउ मुनिजी
माय एकेटा छै होइत,
जे सब मौगी मे छै बसैत,
कारी रहै कि गोरि
काया टा भिन्न-भिन्न
मुनिजी, दिअ आशीर्वाद
एहि भूखल-पिआसल, थाकल, ठेहिऐल
लोकक सेवा करैत चलि जाइ जगत सँ
हम मनुखेक सेवा कैं मानै छी
सब सँ पैघ धरम
अहाँक माय छली बाभनि
कयने हेवनि सराध अहाँ
दुधगरि गाय, छत्ता, जुत्ता, सोनाक मुरूत
बढ़ियाँ ओछौन उसरगि कऽ देने हेबनि संग
दगलाहा बच्छा पर चढ़ि गेल हेती सरग
ओ सरगक सुख छाड़ि धरती पर किएक घुरि औती ?
सेहो पुनि अछोपक तन मे ?
मुनिजी, हम अपने छी माय।

'पराशर'क चारिम अध्याय कैं 'पराशरक नव अनुभूति'क नाम देल गेल अछि जाहि मे जीवछ मलाहक रूप-यौवन-सम्पन्ना बेटी कैं देखि मुग्ध-मन ऋषिक अन्तर मे नव अनुभूतिक जन्म होइछ, जे विश्वामित्र-मेनकाक लोक-गाथा सुनलाक उपरान्त हुनका हृदयमे प्रकृत अर्थवत्ता संग प्रतिष्ठित होइछः

जीवछक दरवाजा परक गाछतर पराशर
रहथि सुस्ताइत
दहिन हाथ मे दमगर कछार,
बाम कान्ह पर भरिगर बोआर लेने
गाडो रहय धफड़ि अबैत
माछक भारैं लचकइ छलइ डाँड़
जाँघक गतिएं दलकैत रहइ थल-थल सरोज
जनि जउवन नहि छल तन मे अँटैत तैं छल उझकैत
गाछक तर अबितहिं माछ कैं देलक पटकि

माछक रगड़ा सँ आँचर खसलइक ससरि
जेना दुष्ट मित्र छइ घसकि जाइत बेर पर
भ' गेल ओकर छाती उघाड़
गाङो रहलि ठाढ़ि हकमइत निर्विकार
पराशर देखलनि गाङोक तन
अभिधा मूलक अर्थक समान निर्मिमेष।

एहि 'अभिधामूलक अर्थ' कें निर्निमेष देखला पर पराशरक मोन मे जे नव अनुभूति होइत छनि तकरा पराशर द्वारा विश्वामित्रक लोक-कथा सुनला पर अर्थवत्ता प्राप्त होइत छैक—

महामुनि! क्षत-विक्षत होइत रहल कौमार हमर
मुदा सुनि नहि सकलहुँ मधुर माय नामेँ सम्बोधन
पत्नी माताक आदरास्पद पद रहौ दूर
परंच आत्माक प्रवाह जीवंत रहितै हमरो
जँ एकोटा संतान होइत
ईश्वरक देल हमर देहमे कोखि, दूध
व्यर्थ नहि जाइत
मेनका रहलि ठाढ़ि धरती दिस ताकैत
पैरक औंठा सँ किछु आखरहीन पाँती लिखैत
मुनिजी मेनकाक सुनि बात
किछु दम धरि रहि अवाक कहलनि
बेस, एक सन्तानक लेल हमर अहाँ भेलहुँ धर्मसंगिनी
परंच संतानक शैशव वयस धरि पालन
लालनक भार अहीं' पर मायक रूपमे
ओ संतान पहुँचय तेहन स्थान पर
जाहि सँ शिष्ट समाज मे पाबय सम्मान
ब्राह्मण वशिष्ठ बनाबथि यजमान अपन

पाँचम अध्याय, जे 'जीवछक जीवन' क नाम सँ अभिहित अछि, जीवछ मलाहक व्याजेँ श्रमिक वर्गक जीवनक यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत करैत अछि। जीवछक अपन पत्नी संग वार्त्तालाप मे उच्चवर्ग-निम्नवर्ग तथा एहि वर्गसभक नर-नारीक सम्बन्धक यथार्थक संग-संग जीवछक व्यावहारिक बुद्धियो अभिव्यंजित भेल अछि। अपन बेटी गाङोक रूप-यौवनक प्रति पराशरक आसक्ति देखि जीवछ मुनि सङ्ग ओकरा बिआहि देबाक बात सोचैत अछि, मुदा ओकरा मोन मे एकर कचोट छैक जे एहि बिआह सँ भेल संतान कें बाभन बनबाक सौभाग्य नहि होयतैक— "गाङोक बेटा-बेटीकेँ जँ बाभन बना लैत/

तखनी ने आधा काज होइत/से कहाँ करैछ?' तें जीवछ अपना मोन मे एकटा संकल्प करैत अपन पत्नी (जमुना) सँ कहैछ—"जमुना हमरा नहि मानह कचकूह तेहन/ पहिनहि गछा लेबनि ई बात/ गाङोक बेटा कें पढ़ा-लिखा बाभन मुनि पंडित बना लेथिन/ तऽ गाङोक पकड़य देबनि हाथ।"

एहि काव्यक छठम अध्यायक नाम 'जीवछ गाङो' अछि जाहि मे बाप बेटीक बीचक वार्तालाप मे पराशर सङ्ग सम्बन्धक संदर्भ मे ऊंच-नीच बीच व्याप्त विषमता पर चमत्कारपूर्ण टिप्पणी देल गेल अछि। बाप द्वारा बेटीकें मुनिक संग व्यवहारक अभिनयक शिक्षो अत्यन्त रमणीक ढंग सँ प्रस्तुत कयल गेल अछि—

गाङो ! तों जे कहले सेहे ठीक/ बिनु जान अरपने नइ भेटत मान/ हमर आउरक पुरखा जान कें रहलाह बचबैत/ तैं खानदाने सँ चलि गेल मान/ अपनउ मे तँ कटैत-मरैत रहिते छी मुदा सुरूहेमे नइ लिहें झगडि/ संकल्प अडिग, बोली मीठ, नरम/ स्वर लसिगर बेथा-भरल, छइ बड़ काज दैत।"

'पराशर ओ जीवछक नीति खेल' नामक सातम अध्याय मे पराशर आ जीवछक बीच व्यावहारिक दाव-पेंचक कि कूटनीतिक उत्तम प्रस्तुति भेल अछि।

'पराशर-गाङोक परिणय' नामक आठम अध्याय मे पराशर आ गाङोक बिआहक वर्णन थिक। गाङोक उक्ति मे सामाजिक सत्यक दर्शन कऽ पराशर गाङोकें सत्यवतीक नव अभिधा प्रदान करैत छथि — "बाजलि नहुँ नारी रसैं घोरल स्वर मे/ अपनइ रचने छी तेहन विधान जे/ सन्तान रहत विरान/ हमर कोंखि सँ जनमल हैत गोढ़ि-अछोप,/ सेहो हमरे संग रहत रने-बने बौआइत,/ गारि-मारि खाइत, भूखें टटाइत-सुखाइत/ कोना अहाँकें रहबो करत चिन्हार ?/ चिन्हारो रखबै तऽ कोढ़गर बेगारे टा मे काज देत/ मुनिजी। गुँहाड़-गौसारी खेत मे रोपल/ धान, धाने अछि मानल जाइत/ खेतक कारन नइ बनैए मडुआ, गद्दरि, जनेर/ मुदा अहाँ आउरक सन्तान खेतक कारण/ बनि जाइए अछोप-राड़।"

'व्यासक उत्पत्ति' नामक नवम अध्यायमे व्यासक उत्पत्तिक कथा प्रकारान्तर सँ वैचारिक उदारताक बीजक सौन्दर्य भूमि मे अंकुरणक कथा थिक।

'पराशर गाङोक विवाह कथाक व्याहार' नामक दशम अध्याय मे स्वयं पराशर जमुना आ जीवछ तथा ओकर समाजक आगाँ गाङो संग अपन परिणयक तथ्य प्रकाशित करैत छथि। ऋषि पराशर द्वारा मलाहक बेटी गाङोक पत्नी रूप मे कयल गेल स्वीकार सँ ओहि वर्गक मान-बोध संतुष्ट होइछ।

'व्यासक पैतृक गमन' नामक एगारहम अध्याय मे पुत्र व्यासक सङ्ग पिता पराशरक आश्रम प्रत्यावर्तनक वर्णन थिक। बेटाक सङ्ग अयला सँ निःसंग ऋषि पराशरक जीवनक्रम बदलैत अछि। ताहि बीच सत्यवती बनलि गाङोक प्रति शांतनुक घोर आकर्षणक बात पसरैछ तथा शान्तनुक प्रेम-विवाहक संदर्भ मे पराशर द्वारा कन्या-पक्षकें ई परामर्श देल जाइछ जे ओ सभ विवाह लेल ई सर्त राखथि जे शांतनु-सत्यवतीक औरसपुत्रकें राज्यक उत्तराधिकारी बनाओल जयतैक ।

'गाङोक प्रति शांतनुक प्रेम-प्रस्ताव' तथा शांतनुक विरह' नामक बारहम-तेरहम अध्याय मे नामक अनुरूपे वर्णन देल गेल अछि। गाङोक देहक सुगंधिसँ मातल राजा शान्तनु पहुँचि जाइत छथि जीवछक द्वारि पर –

"पुनि कहलनि मोसाहेब, तोँ छैं बड़ भागमान/ हस्तिनापुरक महराज छथुन पहुँचल/ तोहर द्वारि पर/ तोहर ई लड़िकी महाराजकेँ भ' गेल छनि पसिन विदा करह एकरा महराजक संग/ चलह अपनहुँ/ मनवांछित धन/ लाबह उठाय/ करह सुख महारानीक बाप बनि।"

गाङो सँ भेल औरस पुत्र केँ राजा बनयबाक सर्त पर शान्तनु मौन रहि जाइत छथि आ निराश-मन राजधानी घुरि अबैत छथि। मुदा, देहक घुरि अयने की ? मोन तऽ रहि जाइत छनि गाङोक चारूकात चक्कर लगबैत। विरहक व्यथा हुनका संतप्त कयने रहलनि–

"बिति गेल अनेको दिन/ परञ्च गाङोक तन संग बान्हल मन/ शांतनु केँ नहि भेटै छलनि शांति।"

शांतनु लेल ई सर्त मानब कठिन रहनि, कारण जे हुनका गंगा सँ उत्पन्न देवव्रत नामक एकटा सुयोग्य उत्तराधिकारी पहिने सँ उपलब्ध रहथिन। मुदा सर्त्त नहि मानब एक बात आ बिनु गाङो मोनकेँ मनायब नितान्त भिन्न आ कठिन बात छल। द्विविधा मे पड़ल राजा लेल विरह-भोग दारुण छल। हुनक एहि मनःस्थितिक खबरि लोक केँ छलैक आ तेँ बूढ़ मंत्री ओ देवव्रत बीच मंत्रणा होइछ। एहि क्रममे एकटा कवि-गोष्ठीक आयोजन होइछ जाहिमे भेल सोद्देश्य काव्य-पाठ बड़ प्रभावशाली अछि। एहि सभक वर्णन 'बूढ़ा मंत्री ओ भीष्म' नामक चौदहम अध्यायमे भेल अछि।

'गाङोक हस्तिनापुर गमन' तथा 'सिंहासन पर सत्यवती' नामक पन्द्रहम आ सोड़हम अध्यायमे पराशरक योजना सिद्ध होइछ तथा सत्यवती ससर्त हस्तिनापुर अबैत छथि तथा शांतनुक पटरानी बनि प्रकारान्तर सँ हस्तिनापुरक प्रशस्त सिंहासन पर विराजमान होइत छथि। एहि तरहें अन्ततः एकटा अन्त्यजक संतान महाभारतक पूर्वकालीन आर्यावर्तक सभसँ प्रतिष्ठित राजकुलक सिंहासन पर आरूढ़ भऽ राष्ट्रक नीतिक निर्देशिका बनि जाइछ। सासुर अबैत बेटी गाङोक प्रति ओकर माय जमुनाक सीख मे ममता आ कठोरताक अद्भुत संयोग देखबा मे आओत। एहि काव्यक अंत मे मुनि पराशरक गतिशील विचारक सार आ तकर सिद्धि प्रतिपादित कयल गेल अछि–

''अहाँक पुत्ररत्न महामना देवव्रत/ कुरुराज्यक विशाल जनसमूहकेँ/ मनुष्य बना देलनि/ ओ जनसमूह कुरुराज्यक खाम्हक/ करत काज/ महाराज, जेना धरती पर दृश्यजल सँ/ बहुत अधिक जल धरतीक पेट मे छैक/ तहिना मुनष्यक सुन्दरता चामक भितरे मे अछि रहैत/ सत्यवतीक बुद्धि-व्यवहार चातुरी/ सँ हैत ज्ञात/ कोइले मे अछि हीरा रहैत/ नहि चानी सोनक पहाड़ मे/''

'पराशर' क सम्बन्ध मे अपन विचार प्रस्तुत करबासँ पूर्व 'किरण'क समकालीन तथा सहयात्री महाकवि 'सुमन'क अभिमतक उल्लेख करय चाहैत छी— "एहि काव्यक सर्वाधिक विशेषता अछि सर्वहारा ओ उपेक्षित-तिरस्कृत समाजक चेतनाक उद्दीपना। निःसन्देह कविक लक्ष्य बहुत किछु एहि दिशा मे प्रशस्ति पौलक अछि। किरणजीक व्यक्तित्वक छाप हुनक कृति पर, कृतित्व पर 'पदे पदांशे वाक्यऽर्थे' सभ पर अमित रूपेँ अंकित-टंकित अछि।"[1]

'पराशर' क भाषा-प्रयोगक प्रति सेहो 'सुमन' अत्यन्त अनुकूल आ प्रशंसापरक विचार व्यक्त कयने छथि :

"भाषा-प्रयोग मे किरणजी तत्सम-तद्भव सँ बढ़ि ठेठ मैथिलीक शब्द-श्रृंखला सजयबामे, स्थानीय उपमानक योजनामे एवं प्रचलित वाग्धारा प्रवाहित करबा मे सुविदित आवेशी छथि। संस्कृत-प्राकृत-अवहठ्ठहुक शब्दावली केँ चिकनाय, श्रुति-सुखद एवं उच्चारण-सुलभ बनाय तथा लुप्त देशज शब्द सभकेँ प्रचुर रूपेँ प्रयोग कयने छथि। एकर शब्द चयन, वाग्धारा, बिनु विशेष विवरणहु कहि देत जे एकर शिल्पी किरणेंजी छथि, वैह भऽ सकैत छथि।"

इस्वी सन 1988 क आश्विन शुक्ल पंचमी केँ लिखल 'पराशर' क भूमिका मे 'सुमन' एकरा 'किरण'क अद्यतन रचना कहने छथि आ 9 अप्रैल, 1989 कें लगभग तेरासी वर्षक अवस्थामे हुनक देहान्त भऽ गेलनि। स्पष्ट थिक जे 'पराशर' एकटा वयोवृद्ध कविक परिपक्वावस्थाक रचना थिक, जाहिमे कविक जीवनक अंतिम अवधिक आस्था एवं मान्यता अभिव्यंजित भेल अछि, जे अपारम्परिक तथा प्रगतिशील थिक। जीवन आ समाजक प्रति 'किरण'क आस्था आजीवन एकटा अपारम्परिक ढंग सँ सोचनिहार रचनाकारक आस्था रहल अछि, जकरा मे कोनो संशोधन करब अपन रचनाकारक जीवनक अन्तो मे हुनका अपेक्षित नहि बुझा पड़लनि।

पराशर मे 'किरण'क सोच तथा दृष्टिक अपारम्परिकताक सम्बन्ध मे मोहन भारद्वाजक विचार[2] ध्यातव्य थिक—

"साफ अछि जे पराशरक कथा ओहिना नहि कहल गेल अछि। 'महाभारत'क पराशरकथामे किरणजी जोड़-तोड़ कयलनि अछि। किरणजीक दृष्टि से पराशर प्रगतिशील दृष्टिक विचारक ऋृषि छथि। पराशरक प्रगतिशीलता एहिमे छनि जे ओ ब्राह्मण भऽ कऽ मलाहक बेटी सँ बिआह करैत छथि। पराशरक प्रगतिशीलता एहिमे छनि जे ओ गाडो अर्थात् एकटा गोढ़नी सँ उत्पन्न पुत्रकेँ अपना सङ्ग लऽ जयबाक लेल तैयार छथि। पराशरक प्रगतिशीलता एहिमे छनि जे ओ एहन जोगाड़ बैसौलनि जाहिसँ मलाहक बेटी महारानी वनि गेल आ ओकर बेटा केँ राजगद्दी पर बैसबाक अधिकार भेटि गेलैक।

---

1. पराशर ओ किरण : कृति ओ कृती—सुरेन्द्र झा' 'सुमन' (पराशरक भूमिका)
2. पराशरक प्रासंगिकता (अनवरत)

ई कार्य सभ इतिहाससम्मत वा पुराणपोषित हो वा नहि, किरणजीक पराशर ई सभटा काज कयलनि अछि।"

स्पष्ट थिक जे 'पराशर' द्वारा किरण महाकाव्य सम्बन्धी प्राचीन मान्यता मे संशोधन संग पुराण-महाभारतक पराशरक सोच तथा दृष्टिक आधुनिकता संग समन्वय स्थापित करबा लेल नव व्याख्या सेहो प्रस्तुत करैत छथि। वर्ण आ रंग पर आधारित सामाजिक व्यवस्था कैं ओ स्वयुगीन सोचक अनुरूप सर्वथा नकारि मानव-मानवक बीच मौलिक समानताक बहुसम्मत सत्यकैं प्रतिष्ठित करैत छथि।

'महाभारतक पराशर आ 'किरण'क पराशर मे अन्तर अछि जे युगीन सोचक अनुरूप थिक। 'पराशर स्मृति' लिखनिहार पराशर कैं 'किरण' नव व्यक्तित्व प्रदान करैत छथि तथा आधुनिक दृष्टि सँ गाङोक (सत्यवतीक) प्रति पराशरक कामासक्तिकें नव अर्थवत्ता प्रदान करैत हुनका नवयुगमे प्रासंगिक बनयबाक रचनात्मक चेष्टा करैत छथि आ ई संतोषक विषय थिक जे हुनक ई चेष्टा ठोस तर्क तथा अमिश्र आस्था पर आधारित छनि। 'किरण'क जीवन-दृष्टि हुनक रचनाकारक आस्था कैं बरोबरि दिशा-निर्देश दैत रहलनि अछि आ 'किरण'क ई आस्था हुनक (आरंभिक किछु गीतकैं छोड़ि) समस्त साहित्यमे निष्कम्प रहलनि अछि। 'किरण'क प्रगतिशीलता हुनक जीवन शैली, विचार-शैली तथा साहित्यमे समान रूपसँ रूपायित भेल अछि। ओ मानवीय समानताक घोषित पक्षधर रहलाह अछि।

(II)

मैथिली साहित्य मे काञ्चीनाथ झा 'किरण' कविक रूपमे अधिक प्रतिष्ठित छथि, मुदा हुनक कथाकारक स्वरूपो अपन विशिष्ट निजताक कारण बेछप छनि। अपन समकालीन कथाकारसभ मे 'किरण'क स्वर निश्चित रूपसँ अधिक मानवीय, अधिक समतामूलक आ तैं अधिक प्रगतिशील लागत।

'भारती' पत्रिकाक जून-जुलाइ, 37 क अङ्क मे 'किरण'क पहिल कथा (करुणा) प्रकाशित भेल। एहिसँ पूर्व 1932 ई॰ मे काशी हिन्दू विश्वविद्यालयक मैथिली साहित्य समिति द्वारा 'किरण'क एकटा कथा-कृति 'चन्द्रग्रहण' उपन्यास कहि प्रकाशित भेल छल। 'चन्द्रग्रहण' क भूमिका मे 'किरण' एहि कथा-कृतिकैं उपन्यास कहबामे संकोचक अनुभव कयने रहथि। ओ तऽ सहवर्ती भाषा बंगला कि हिन्दी मे उपन्यासक रचना सँ प्रभावित भऽ मैथिली मे एहि खगताक पूर्ति हेतु एकटा विनम्र प्रयास मात्र कयलनि। ओ कहैत छथि— "अपने लेखक नहि। मैथिली भाषामे एहि प्रकारक कोनो पुस्तक नहि जाहिसँ ''मणौ वज्र समुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः चरितार्थ हो।" . . . "अयोग्यक हाथ मे महान काज देखि तत्कार्य कुशल हृदय मे ओहि कार्यके अपनेबाक प्रवृत्ति स्वाभाविक। हमर प्रधान उद्देश्य एतबे। श्रम सार्थक तँ ओही दिन बुझब जहिया मैथिली मैथिली होयतीह।"

'चन्द्रग्रहण' क रचनाक पाछाँ 'किरण' लेल दू टा प्रेरक कारण छल (1) मैथिली मे उपन्यासक नहि होयब। (2) उपन्यास लिखबा लेल समर्थ रचनाकारकैं प्रेरित करब।

उल्लेख्य थिक जे 'किरण' अपन कृति 'चन्द्रग्रहण' सँ पूर्व प्रकाशित तथा उपन्यासक रूप मे चर्चित 'निर्दयी सासु', 'पुनर्विवाह', 'सुमति' तथा 'रामेश्वर' आदि कें अपन्यासक रूपमे स्वीकार करबा लेल प्रस्तुत नहि रहथि। हम ई नहि कहि सकैत छी जे 'किरण'क प्रयाससँ मैथिलीक कोनो समर्थ रचनाकार प्रेरित भेलाह वा नहि, मुदा 38 पृष्ठक (क्राउन साइजक) कथा-कृति 'चन्द्रग्रहण' सँ मैथिली मे उपन्यासक खगताक पूर्ति प्रायः नहि भऽ सकल छल, कारण उपन्यासक कोनो परिभाषा सँ पृथक एकरा प्रति लोकक सामान्य धारणा एहि कथा-कृतिकें उपन्यास मानबाक अनुकूल नहि थिक। ओना मैथिलीमे 'चन्द्रग्रहण'क चर्चा उपन्यासेक रूपमे होइत आयल अछि। तखन एकटा उपन्यासकारक रूपमे डा॰ जयकान्त मिश्र हुनका सफल नहि मानैत छथि —" किरण' आओर 'सरोज' एहि कालक अन्य उपन्यासकार थिकाह, परन्तु हुनकालोकनि कोनो नीक अपन्यासकार नहि भए सकलाह।"[1]

'चन्द्रग्रहण' वास्तवमे 'किरण' कें उपन्यासकारक रूपमे प्रतिष्ठित करबाक पात्रता नहि रखैछ। एकटा उपन्यासक रूपमे एहि पर विचार करैत डा॰ अमेरश पाठक[2] कहैत छथि— "एहि रचनाक स्वाभाविक विकास नहि भेल अछि। सभ स्थल पर संयोगक आश्रय लेल गेल अछि। एहन सन बूझि पड़ैछ जे कोनो निश्चित उद्देश्य धरि पहुँचयबाक हेतु घटना कें साधन मात्र बनाओल गेल अछि। घटनाक स्वाभाविकता यत्र-तत्र नष्ट भेल अछि।"

उपन्यासकारक रूपमे 'किरण' असफल कहल गेल छथि तथा उपन्यासक रूपमे 'चन्द्रग्रहण'क स्वाभाविक विकास स्वीकारल नहि गेल अछि। वास्तवमे 'चन्द्रग्रहण' एकटा एहन कथाकृति थिक जकरा उपन्यासक रूपमे व्यवस्थित स्वीकृति प्राप्त नहि भेलैक तथा कथाक रूपमे ओहि पर विचार नहि कयल गेलैक।

'चन्द्रग्रहण'क रचनाक पाछाँ प्रेरक कारणक उल्लेख 'किरण' एकर भूमिकामे कयने छथि। एकर रचनाक पृष्ठभूमिक सम्बन्ध मे डा॰ रमानन्द झा 'रमण' संग भेल अपन भेट-वार्ता मे ओ तेसर बात कहैत छथि — "ओहि समयतक ब्रिटिश सरकारक 'डिवाइड एण्ड रूल' नीति वेश सफल भय गेल छलैक। मुस्लिम सम्प्रदायकें खूब सनका देने छल। जेना-तेना अपन संख्या वढ़ायब ओ सभ लक्ष्य बना लेने छल। अपहरण कए धर्म-परिवर्तन करबैत छल। स्त्रीगणक अपहरण बेसी होइत छलैक। एहिसँ जनसंख्या तँ बढ़िते छलैक, वासनाक तृप्तिओ होइत छलैक। मेला अथवा भीड़ आदि सँ अपहरण बेसी सुविधगर छलैक। ई समस्या ततेक सामन्य आ दारुण छलैक जे हमरा आकर्षित कयलक। तैं समस्या सँ परिचिति आ प्रतिकार लेल 'चन्द्रग्रहण'क रचना हम 'मैथिली सुधाकर' हेतु कएल।"[3]

---

1. मैथिली साहित्यक इतिहास
2. मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन
3. मिथिला मिहिर 7 अगस्त, 1983

हमरा विचार मे तत्कालीन ब्रिटिश शासनक 'डिवाइड एण्ड रूल'क नीतिसँ उत्पन्न मुसलमानक आक्रामकतासँ परिचिति तथा ओकर प्रतिकारक दिशामे 'चन्द्रग्रहण' सँ लोकक उद्बोधन प्रायः संभव नहि भेलैक, कारण ई रचना अपन समकालीन कि बादक कोना रचनाकारमे एहि सम्बन्ध मे देखार सजगताक कोनो उन्मेष नहि कऽ सकल। वास्तवमे 'चन्द्रगहण' ब्रिटिश शासनक विभाजन आ शासन करबाक नीति सँ उत्पन्न मुसलमान वर्गक आक्रामक सोच पर आधारित अछियो नहि। एहि उपन्यासमे वर्णित तथा स्त्रीगणक अपहरण हेतु चेष्टाशील 'गुण्डा' निश्चित रूपसँ एकटा मुसलमान थिक, मुदा एहि कथाकृतिक ग्रथन सँ ई कतौ स्पष्ट नहि होइछ जे ओ गुण्डा·मुसलमाने भऽ सकैत छल, कोनो हिन्दू नहि। हम तऽ ओहि गुण्डाक मुसलमान होयब नितांत संयोगक बात मानैत छी आ हम बुझैत छी जे हमर एहने मानला सँ 'किरण'क रचनाकारक प्रगतिशील सोच पर प्रश्न चिह्न कें टारल जा सकैत अछि।

'चन्द्रग्रहण' मे मेला घुमबाक लौल पोसनिहारि युवती सभक अविवेकक कथा कहल गेल अछि जे संक्षेप मे एना कहल जा सकैछ—

बहुत दिनक बाद एहन 'चन्द्रग्रहण' लागयवला रहैक जाहि मे सर्वग्रास होयबाक रहैक। भुल्लू बाबूक बेटी रजनी एकटा एहन युवती अछि जे मनमौजी प्रकृतिक थिक। तैं ओकर सासुर मे वास नहि होइछ आ ओकर पति दोसर बिआह कऽ लैछ। अपन उद्दण्ड स्वभावक कारण नैहरो मे ओकर आदर नहि होइछ, तथापि ओकरा लेल धन-सन। ओकर 'गंगाजली' सुषमा देवन बाबूक बेटी अछि, जे जिद्दी होइतो बुधियारि थिक। रजनीक उकसौला पर ओ चन्द्रग्रहणक अवसर पर सिमरिया जयबा लेल जिद्द करैछ आ अपन माय-बापकें एहि लेल मना लैत अछि। सुषमो बिआहलि अछि, जकर पति तरुण एक टा विवेकी युवक अछि, जे मेला-ठेला मे युवती सभक विचरण पसिन्न नहि करैछ। ओ एहि तथ्य सँ अवगत अछि जे मेला-ठेला मे मेलाघुमनीसभक उचक्का-गुण्डा सभक हाथें की दुर्गति होइत छैक।

सिमरिया जयबाक क्रम मे भीड़क कारण रजनी आ सुषमा अपना संगक लोक सभसँ बिछुड़ि जाइछ। संयोग सँ सुषमाक पति तरुणक नजरि एहि पर पड़ि जाइछ। अपना लोक-वेद सँ बिछुड़ल रजनी आ सुषमा दू टा मुसलमान गुण्डाक हाथ पड़ि जाइछ। तरुण ओहि गुण्डा सभ सँ एहि दुनू युवतीक रक्षा करैत आहत भऽ जाइछ। ताबत कांग्रेसक सेवा-दलक आनो लोक जुमि जाइछ। रजनी आ सुषमा अन्ततः सिमरियामे अपन माय-बापक लग पहुँचा देल जाइछ। रजनी आ सुषमा अपन रक्षक युवककें, जे आहत भऽ गेल छल, तखन चीन्हि नहि सकलि छल, मुदा जखन सुषमा कें यथार्थक ज्ञान होइछ तऽ ओ लाज आ दुःख सँ उद्वेलित भऽ जाइछ। आहत तरुणक चिकित्सा होइछ आ ओ ठीक भऽ जाइछ। उपन्यासक अन्त मे सुषमा आ तरुणक मधुर-मिलन होइछ। सुषमाक आत्मग्लानि तखन समाप्त होइछ जखन ओकर पति ओकरा कहैत छैक जे

मेला घुमबाक ई प्रवृत्ति कुत्सित होइतो मादक होइछ। एहि लौल मे तऽ ज्ञानी लोकनि सेहो पड़ि जाइत छथि।

एक तरहें 'चन्द्रग्रहण' लोकक मेला-ठेला घुमाबाक दुष्प्रवृत्तिये पर चोट करबा हेतु लिखल गेल छल, जाहि दुष्प्रवृत्तिक विरुद्ध एहि मे बहुतो बात कहल गेल अछि।

'चन्द्रग्रहण' उपन्यास थिक वा नहि, एहि सम्बन्ध मे प्रो॰ आनन्द मिश्रक कहब[1] छनि– "पहिने उपन्यास तथा कथाक बीचमे कोनो स्पष्ट विभेदक-रेखा नहि छल। तथापि किछु लेखक अपन रचनाक सङ्ग उपन्यास शब्द लिखऽ लगलाह। तखने बहुतो पाठक अथवा कतेको लेखक उपन्यास शब्दक परिचय पाओल।" प्रायः एही विभेदक-रेखाक अभावक कारण 'चन्द्रग्रहण' सँ पूर्वे प्रकाशित जनार्दन झा 'जनसीदन' क 'निर्दयी सासु' आ 'पुनर्विवाह', मुंशी रास बिहारी लाल दासक 'सुमति' तथा पं॰ जीबछ मिश्रक 'रामेश्वर' उपन्यास कहि परिगणित कयल जाइत रहल अछि।

'चन्द्रग्रहण' मे गाम आ शहरक बीच व्याप्त अन्तरकेँ रेखांकित करैत 'किरण' कहैत छथि–"गामे प्रकृतिक वास्तविक निवास-स्थान। गामैक अवलोकन सँ देशक परिस्थितिक यथार्थ ज्ञान प्राप्त होएब संभव। शहर जादूक रंगभूमि मात्र। जकरा एकटा घर नहि, साँझक साँझ उपास पड़ि विदेश नोकरी करै जाइछ, ओहो शहर पहुँचितहि कोट-कमीज आदि सौँ सजि-धजि बाबूसाहेब बनि जाइछ।" 'किरण'क ई कथन आइ साठि वर्षक बादो बहुत प्रासंगिक थिक।

'चन्द्रग्रहण'क अतिरिक्त 'किरण' द्वारा रचित 'किरण' विक्षिप्त' 'अनाथ', 'दीन' आदि उपन्यासक उल्लेख[2] भेटैत अछि, मुदा एहिमे सँ कोनो उपलब्ध नहि थिक। तहिना 'किरण'क एक मात्र कथा-संकलन 'कथा-किरण' मे संकलित हुनक पन्द्रह टा कथाक अतिरिक्तो किछु कथाक उल्लेख भेटैछ, जे उपलब्ध नहि थिक। 'किरण'क एहन अनुपलब्ध कथा सभक नाम थिक–'प्रभात' (1938 ई.), 'रायबहादुर रामचरण' (1938 ई.), 'एक सत्यकथा' (1960 ई.) आ 'कस्मैनमः' (1963 ई.)। 'चन्द्रग्रहण', जे 1932 ई. मे प्रकाशित भेल छल, यदि ई लेखक सँ सहमत होइत उपन्यासे मानल जाइछ, तऽ 'किरण'क पहिल कथा 'करुणा' जून-जुलाइ, 1937 मे प्रकाशित भेल छल। कथा लेखनक एहि छप्पन कि एकावन वर्षक अवधिमे स्पष्ट थिक जे 'किरण' बड़ थोड़ कथा लिखलनि, मुदा रचनात्मक सिद्धि रचनाक परिमाणे टा पर आश्रित नहि होइछ आ तेँ बड़ थोड़ कथा लिखियो कऽ 'किरण' मैथिलीक कथा-साहित्य मे अपना केँ अप्रतिम स्थानक अधिकारी बना लेने छथि।

---

1. मिथिला मिहिर (7-13 अगस्त, 1983 ई.)
2. सुनील कुमार ठाकुरक शोध प्रबन्ध – काञ्चीनाथ झा 'किरण'क रचनाक आलोचनात्मक अध्ययन

'किरण'क लेखनक आरंभिक काल मैथिली मे कथा-लेखनोक आरंभिक काल छल। मैथिली कथा मे अनूदित कि मौलिक आख्यायिकाक युग लगले समाप्त भेल छल। कुमार गंगानन्द सिंह, प्रो॰ हरिमोहन झा, मनमोहन झा, उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास', योगानन्द झा आदि ओही कालमे मैथिली-कथाक न्यो कैं स्थायित्व तथा क्षितिजकैं विस्तार प्रदान कऽ रहल छलाह। अनेक तरहक सामाजिक कुसंस्कार आ कुप्रथा पर प्रहार करैत नव सामाजिक यथार्थ-बोधक कथा सभक सङ्ग -सङ्ग हिन्दी-बंगला-सन समर्थ सहवर्ती भाषाऊ साहित्य सँ ग्रहण कयल प्रेरणा सँ मानस कैं उद्घाटित कयनिहार भाव-प्रधान कथो प्रकाशमे आयल। तखन बंगलाक शरत कि हिन्दीक प्रेमचन्द सँ मैथिलीक ओहि समयक कथाकार प्रायः अपन प्रकृतिगत विशेषताक कारण आत्मीय सम्बन्ध स्थापित नहि कऽ सकलाह। 'किरण' एहि पीढ़ीक प्रतिनिधि कथाकार नहि छथि, मुदा हिनक 'मधुरमनि' एहि पीढ़ी तथा तत्काल बादोक पीढ़ीक कोनो कथाकारक एक कथा सँ खाम नहि कहल जायत। शिल्पगत परिपूर्णता आ भावगत सम्पन्नताक दृष्टि सँ एहि पीढ़ीक शीर्षस्थ रचनाकारलोकनिक कथामे मात्र प्रो॰ हरिमोहन झाक 'पाँच-पत्र' तथा 'व्यास'क 'रूसलजमाय' आ तत्काल बादक पीढ़ीक 'मणिपद्म'क 'बालगोबिन' सन कथाक एहि संदर्भ मे अनायास स्मरण होइछ।

'किरण'क एक मात्र कथा-संग्रह (कथा-किरण) हुनक जीवनक अंतिम बेला (1988 ई॰) मे प्रकाशित भेलनि। एहि संग्रह मे पन्द्रह टा कथा संकलित अछि जाहि मे एगारह टा कथा वर्ष 1937 ई॰ सँ वर्ष 1965 क बीच भिन्न-भिन्न पत्रिका आ कथा संकलनमे प्रकाशित भेल छल आ अंतिम चारि टा कथा, जे अपन रोग-शयूया पर पड़ल-पड़ल अप्रैल, 1988 ई॰ मे ओ डा॰ शिवशङ्कर श्रीनिवास कैं लिखौने रहथि, पहिल बेर एहि संकलनक माध्यम सँ लोकक सम्मुख आयल। 'किरण'क यैह पन्द्रह टा कथा हुनक पाठक वर्ग कैं उपलब्ध छनि। हुनक पन्द्रहो कथाक प्रकाशन-विवरण निम्नवत थिक—

क्र॰	कथाक नाम	प्रकाशन	लेखापित करबाकतिथि	पत्रिका/पुस्तक
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1.	करुणा	जून-जुलाइ, 1937 इ॰	—	भारती
2.	एहिचारि खूनक खोज कैनिहार के ?	शारदीय अंक, 1938 इ॰	—	मिथिला मिहिर
3.	काल ककरो छोड़त ?	1939 इ॰	—	मिथिला मोद
4.	प्रलाप	अगहन-पूस, 1940	—	मिथिला मोद
5.	समाजक चित्र	माघ, 1941 इ॰	—	मिथिला मोद
6.	धर्मरत्नाकर	1941 इ॰	—	मिथिला मोद

7. एक चित्र	1944 इ.	—	सत्य सन्देश
8. मधुरमनि	1962 इ.	—	मिथिला मिहिर
9. कोन महल नाम रखबै एकर	?1964 इ.	—	टटका गप्प
10. धरती कतउ काकबंझा होथि	1964 इ.	—	गल्प सुधा (कथासंग्रह)
11. आँखि मुनने आँखि खोलने	1965 इ.	—	मिथिला मिहिर
12. चनरा	—	5-4-1988 इ.	ई चारि कथा
13. जाति पाँजिक जादू	—	6-4-1988 इ.	बाजि कऽ लिखा-ओल गेल छल, जे
14. अभिनव उत्तरा	—	8-4-1988 इ.	पहिलबेर 'कथा
15. रूपा	—	11-4-1988 इ.	किरण'मे छपल।

'किरण'क कथा-यात्रा 'चन्द्रग्रहण' संग 1932 ई. किंवा 'करुणा' संग 1937 ई. मे आरंभ भेल तथा 1965 इ. धरि तैंतीस कि अठाइस वर्षक मध्य हुनक मात्र बारह कि एगारह टा कथा पत्रिका/ संग्रह मे प्रकाशित भेल। अहू मे अंतिम चारि टा कथा 1944 ई. क बाद अठारह वर्षक मौन तोड़ि ओ वर्ष 1962 सँ 1965 क बीच लिखलनि। तकरा बाद बाइस वर्ष धरि खाहे ओ कोनो कथा नहि लिखलनि, खाहे ओ लोक कें उपलब्ध नहि छैक। पुनः तेइस वर्षक बाद डा. शिवशङ्कर श्रीनिवासक आग्रह पर अपन रोगशय्या पर पड़ल-पड़ल ओ अप्रैल, 1988 ई. मे चारि टा कथा हुनका लेखापित कराओल। 'किरण'क जीवन तथा साहित्यक विश्लेषण सँ स्पष्ट होइछ जे 'किरण' अपन मातृभाषाक विकास लेल सन्नद्ध एकटा समर्पित सेनानी रहथि, तऽ ओ अपन साहित्यक समुन्नति लेल एकटा व्यग्र रचनाकारो रहथि। संगहि सामाजिक विषमता आ लोकक नैतिक जड़ता सँ खिन्न एकटा सजग नागरिकोक आत्मा हुनका मे वास करैत रहनि। हुनक समस्त लेखन पर यदि समग्रता मे विचार कयल जाय तऽ, हमरा लगैत अछि, हुनक लेखन मे स्वतःस्फूर्त रचना सँ कम ओहन रचनाक संख्या नहि थिक जे भाषा-साहित्यक खगताक पूर्ति किंवा भाषा-साहित्यक विकास लेल आयोजित आयोजन सभक तात्कालिक आवश्यकतापूर्तिक उद्देश्य सँ लिखल गेल छल। एहि कोटिक रचना मे ओहनो रचना सभ शामिल थिक जे ओ सामाजिक विषमता तथा नैतिक जड़ता पर समधानल चोट करबाक आकांक्षा संग लिखलनि। मात्र साहित्य लेल रचना करब 'किरण' कहियो स्वीकार नहि कयलनि, हुनक समस्त रचनाक पाछाँ निश्चित उद्देश्य रहैत छलनि, जकर सिद्धि लेल हुनक आत्मा आकुल रहैत छलनि। डा. शिवशङ्कर श्रीनिवास 'कथा किरण'क भूमिका मे उचिते लिखलनि अछि—"कथाकार 'किरण'जी जखन कथा लिखऽ लगलाह तँ ओ अपन समाज, साहित्य ओ भाषा—तीनूक विकासक बात दृष्टि मे रखैत

रचना करय लगलाह।" हमरा लगैत अछि कि यदि किरण मात्र रचनाकार रहितथि तऽ हुनक रचनामे व्यवस्था तथा क्रमबद्धता अधिक पाओल जाइत।

'किरण'क कथा आ कथाकार पर विचार करबाक क्रम मे सभ सँ पहिने हुनक कथासभक कथ्य आ स्वरूपक सम्बन्ध मे किछु विचार उचित होयत। 'किरण'क पन्द्रहो कथा मे चारिये टा कथा (करुणा, धर्मरत्नाकर, मधुरमनि आ कोन महल नाम रखबै एकर ?) लोकक बीच विशेषरूप सँ चर्चित रहल अछि, शेष कथासभ अपन कथ्य आ प्रस्तुति सँ लोकक ध्यान ताहि तरहेँ आकृष्ट नहि कऽ सकल अछि। एहि चारू कथा मे 'मधुरमनि' एक थिक जे सामजिक स्तरपर निम्नवर्ग आ आर्थिक रूपसँ विपन्न वर्गक दम्पतिक कथा थिक आ ई जतबे कोमल रागबोधक कथा थिक ततबे भावनात्मक ऊष्मा संग कहलो गेल अछि।

करुणा

ई 'किरण'क पहिल कथा मानल जाइछ जे वर्ष 1937 ई॰ मे प्रकाशित भेल छल। एहिमे एकटा उच्चवर्गक विधवा-युवती करुणाक व्यथा-कथा थिक, जकरा प्रकारान्तर सँ तत्कालीन मिथिलाक नारीक व्यथा-कथा सेहो कहल जा सकैछ। करुणाक जखन बिआह भेलैक तऽ ओ एहन बालिका छलि जे यौवनक देहरि दिस ड़ेग बढ़ा देने छलि। बिआहलि करुणा जखन "ऐनाक आगाँ ठाढ़ि भेलि कालिन्दीक स्निग्ध वक्षस्थल पर सरस्वतीक सुन्दर प्रवाह जकाँ अपन सीथि मे सिन्दूर देखि संकोच ओ कौतूहल सँ पूर्ण एंक अभिनवे आनन्दमय गुदगुदीक अनुभव कए रहलि छलि।" आ इयाह करुणा जखन छओ मासक पश्चात सासुर अबैछ तऽ नितान्त भिन्न स्थिति मे पड़ि जाइछ—

"छओ मास पश्चात करुणा जखन एतय आयलि तँ सभ नर्वीन देखि पड़ैक। नैहर मे करुणाक हिसाब नेना-मना मे छलैक। रिन्हुका-बेरहट खाइत छलि। नीक-निकुत वस्तु एकरा सभसँ उबरैक तखन चेतन के होइक। कार्यक भार कोनो ने, अपनो आनेक भारक विषय छलि। ओतय स्वतंत्र बेटी जाति छलि।

"एतय आयलि तँ पराधीन पुतुह भै। ताहूमे सुन्दरबाबूक आङन मे हुनक एक अत्यन्त वृद्धा पितामही आओर मातृ-पितृहीन पाँच वर्षक भातिज नरेन्द्र मात्र छलन्हि। ताहि सँ नगनीपीक प्रातहि सँ करुणाकेँ भानस-भात यावन्तो आश्रमी कार्यक भार पड़ि गेलैक। करुणा प्रतिष्ठित स्वामिनीक पद प्राप्त कैलक।"

तथापि एहि परिवर्तन केँ अवधारि करुणा एकटा संयत तथा दक्ष गृहिणी जकाँ घरक कार्यभार सम्हारि लेलक। "सासुक सेवा स्वामीक सत्कार ओ जातुक स्नेह मे मातलि करुणा" पर दुःखक प्रहार लगले आरंभ भऽ जाइछ। पहिले माघ मे पितम्हिया सासु स्वर्गीया भेलथिन आ ओकरा ओ दुःख बिसरलो नहि छलैक कि दू मासक बाद चैत मे ओकर पतियो श्वसन-ज्वर (निमोनिया) सँ आक्रान्त भऽ एक सप्ताहक रुग्णताक बाद

करुणा कें असहाय छोड़ि काल-कवलित भऽ गेलाह। करुणा पर दुःखक पहाड़ टूटि पड़लैक तथापि ओ जीवन सँ समझौता करबा लेल विवश छलि।

आकि तखने अबैछ ओकर वैधव्यक पहिल ग्रीष्म तथा तकरा सँ संघर्ष लेल उद्यत पावस। घरक एक मात्र दोसराति करुणाक जाउत नरेन्द्र मामक संग किछु दिन लेल मातृक गेल छलैक आ ओ घर मे एकसरि रहि गेल अछि। घरक ई एकान्त आ पावसक आगमन ओकरा चित्तकें तखन आन्दोलित ओ भयभीत कऽ दैत छैक जखन कि एक दिन—"ग्रीष्म नगरक नायक आओर पावसक युद्ध करुणा पड़ले-पड़ल खिड़की दने शून्य दृष्टि सँ देखि रहलि छलि कि देवाल मे टाङल करुणाक ससुरक सङिता घड़ी टन-टना उठल। करुणा चौकि नजरि घुमौलक—सात बाजल देखि झटपट उठि आँखि मीड़ैत वड़का अएना लग जाय ठाढ़ि भेलि। देखलक तँ ओकर इच्छाक विरुद्ध यौवन ओकर अङ्ग-अङ्ग पर अधिकार जमा चुकल छलैक।"

करुणा भय सँ आतंकित भऽ जाइछ आ ओ सोचैत अछि जे "लोलुप लोक सँ समाकुल एहि संसार मे एकसरि नारी एहन प्रलोभनीय रत्नक रक्षा कोना कै सकत ?" एहन भयाक्रान्त मनःस्थिति मे ओकरा ओहि दश वर्षक बालिकाक प्रश्न मोन पड़ैछ जे काल्हि पटना मे पढ़ैत भायक आनल सनेश करुणाक जाउत नरेन्द्र कें देबय आयलि छलि। ओ बालिका करुणा सँ प्रश्न कयने रहैक जे एकसरि रहला पर ओकरा भय नहि होइत छैक आ करुणाक ई उत्तर देला पर जे ओकरा भूतक डर नहि होइछ आ चोर ओकरा घर आबि की लेतैक ? एहि पर ओ बालिका कहने रहैक जे—"जैह अछि सैह। अपने जँ चोरा लिए।"ओहि बालिकाक कथनक स्मरण करुणाक मोन मे "किंकर्त्तव्यविमूढ़ताक बिहाड़ि' आनि दैछ। ओ एहने मनःस्थितिक बिहाड़ि मे उधिया रहलि छलि जे पटना मे पढ़निहार पड़ोसी बच्चाबाबू भाउज करुणा सँ भेट करय अबैत छथि। कुशल-क्षेमक पुछारीक क्रम मे करुणाक नजरि बच्चाबाबूक कपारक उज्जर दाग पर पड़ैछ आ ओहि सम्बन्धमे जखन जिज्ञासा करैछ तऽ ओकरा ज्ञात होइछ जे ओ दाग तेजाब पड़ि गेलाक परिणाम छैक। ई जानकारी भेटिते करुणा अपना मोन मे एकटा निश्चय कऽ लैछ। ओकरा मोन पड़ैछ जे ओकरो घरमे तेजाब उपलब्ध छैक जे ओकर पति कांसक पनबट्टी पर मोलम्मा करबा लेल अनने रहथिन।

आ तखन बच्चा बाबूक चल गेलाक बाद करुणा अपन निश्चयक कार्यान्वयन मे लागि गेलि आ आस्ते-आस्ते घर बन्न कऽ ओ तेजाब अपना चेहरा पर ढ़ारि लेलक जाहि सँ ओकर मुख-मण्डल एहन विवर्ण भऽ जाइ जे काँच माउसक लोलुप समाज मे ओ अपन सतीत्व कें, अपन स्वाभिमानकें, आत्माक आस्थाकें सुरक्षित राखि सकय। आ करुणा अपना उद्देश्य मे सफल भेलि। मातृक सँ घुरला पर नरेन्द्र 'ठोर पर शुष्क हँसी लेने' अपना दिस बढ़ैत विवर्ण मुखमण्डलवाली काकीकें हठात् नहि चीन्हि सकल। कथा 'किरण'क एहि पंक्ति संग समाप्त होइछ—'के कहि सकैछ, एहि हँसी मे कतेक वेदना, कतेक धैर्य, कतेक बलिदान अन्तर्निहित छल।"

'करुणा'क सम्बन्ध मे डा॰ शिवशङ्कर श्रीनिवासक कहब[1] छनि जे—'करुणा मे नारीक व्यथा-कथा कहल गेल अछि। पुरुषक अधीन चलैत समाजक परम्परा कोनो नारीक लेल कतेक दुःखद छल, एहि बात केँ कथा बड़ सूक्ष्म ढंगेँ उद्घाटित करैत अछि। करुणाक स्वरूप दूरि करब पुरुष वर्गक वर्चस्वकेँ अन्याय कहैत एकटा आक्रोशक जन्म दैत अछि जे पुरुष ओ नारीक हेतु एक रंग जीवन जीबाक व्यवस्थाक स्थापनाक प्रति प्रेरित करैत अछि।" हम डा॰ श्रीनिवासक एहि निष्कर्ष सँ सहमत होइतो एकटा प्रश्नकेँ मोन सँ टारि नहि पबैत छी। एहि कथा मे 'किरण' पुरुषक वर्चस्वक आगाँ नारीक विवशताकेँ रेखाङ्कित करबाक स्थान पर ओकरा पुरुषक वर्चस्वक विरुद्ध संघर्ष करबा लेल उद्यत किया ने देखा सकलाह ? 'किरण' सन प्रगतिशील चेतनाक रचनाकार लेल प्रायः ओहने करब अधिक स्वाभाविक मानल जाइत। मुदा 'किरण' अपन कथा मे नारी-चेतनाक जागरणक बात तहिया नहि कऽ सकलाह। प्रायः 'किरण'क बोध ताबत ततेक प्रगतिशील नहि भेल रहनि, कांग्रेसी आन्दोलनो सँ ओ बोध प्राप्त नहि भऽ सकल रहनि, प्रायः मिथिलाक समाज ताधरि ततबा जागरूक कि उदारचेता नहि भऽ सकल छल जे पुरुषप्रधान समाज मे नारी-पुरुषक समानताक गप्प करब संभव होइत। आइ स्थिति यद्यपि बहुत बदलि गेल अछि, मुदा पुरुष वर्गक वर्चस्वक बात अखनो अनामति अछि। तैयो नारी-पुरुषक समानताक गप्प करबा मे आब कोनो दिक्कति नहि अछि आ अनेक क्षेत्र मे अनेक स्तरपर सम्वाद जारी थिक।

एहि चारि खूनक खोज कैनिहार के ?

'करुणा'क बाद 'किरण'क ई दोसर प्रकाशित कथा 1938 ई॰ क थिक। ई कथा एकटा एहन विपन्न परिवारक कथा थिक जकर 'साम्राज्य' दस धूर घराड़ी धरि सीमित छैक। एहि परिवारमे 'संतोषक शरीर मे रहनिहार साक्षात् प्रेम' परेमा अछि आ नियतिक आगाँ संतुष्ट भाव सँ माथ नत कयने ओकर विधवा माय आ 'मूर्तिमान तृप्ति-सन' पत्नी सम्पतिया छैक। बाद मे एहि परिवार मे परेमाक बेटाक रूपमे चारिम सदस्यक अवतार होइछ आ एहि बच्चाक अवतरणे संग एहि कथाक वास्तविक कथा आरंभ होइछ।

परेमा विपन्न थिक, मुदा ओ अपन सिद्धान्त पर दृढ़ रहि बोनि-बुत्ता सँ जैह होइक, लोढ़ा-बिच्छा सँ जैह भेटैक, ओही सँ चाहे भरि पेट हौक चाहे आध पेट, संतोष पूर्वक गुजर कै लिअय। "कष्टोक स्थिति मे परेमा अनेरे बाबू जन लेब नहि कैलक।" स्पष्ट थिक जे एहना स्थितिमे घरमे भूखक ताण्डव होयबे करत। मुदा, बच्चाक जन्मक बाद परेमा तथा ओकर मायक संतोष डगमगाय लगलैक—

"ओकर नेना आइ सात दिनक भै गेलैक आर एहि सात दिनमे सात कनमो सुअन्न प्रसूतीक पथ्य लै नहि ओरिया सकल, छठियारी मे प्रसूतीक हेतु नुआ-लहठी, बच्चाक

1. 'कथा किरण'क भूमिका मे

हेतु अंगा-टोपीक कोन कथा, एक बीत नव नूआ धरिक ओरिआओन नहि कै सकल, तँ ओकर मोन चंचल भै उठलैक।" एहि स्थिति मे परेमे टा नहि, ओकर मायोक मोन तेना कऽ खिन्न भऽ गेल रहैक जे ओ अपन संतोषी बेटा केँ ताना देबा सँ अपनाके नहिं रोकि सकलि–

"बौआ, बच्चा तँ दूध बिना फकरि क' मरबे करतै, तँ सम्पतियो नहि बचतैक ! अन्नक टूटल देह छलैके, तै पर सँ आबहु वैह हाल। आइ सात दिन मे सातो कौर अन्न नहि भेटलै।"

आ माइक देल ई ताना परेमा केँ लेसि देलकै। जाबत ओकर माय अपन कथनक गंभीरताक थाह लैत, ताबत 'परेमा विक्षिप्त जकाँ उठि बिदा भेल।' अपन दुर्वस्था सँ व्यथित-मथित परेमा जेठक दुपहरियाक दुस्सह किरण-जाल केँ अनठबैत अन्नक जोगाड़ मे स्टेशन दिस बिदा भेल। दुर्भाग्य सँ स्टेशन पर ओकरा एकोटा एहन यात्री नहि भेटलैक जकर सामान ऊघि ओ किछु द्रव्यक जोगाड़ कऽ सकैत। भूखल-पिआसल आ थाकल परेमा राति भेला पर निराश भऽ घूरल तऽ परन्तु बच्चाक चीत्कारक स्मरण सँ ओकर पैर फेर शहर-बजार दिस मुड़ि गेलैक।

ओहि शहरक एकटा ट्रेडिङ्ग कम्पनी मे डकैती भेल रहैक। आ डकैत पकड़ल गेल छल, मुदा घूसक प्रताप सँ ओ बाँचि जाइछ आ मोकदमा चलैछ परेमा पर, जे भूखसँ बिल-बिलाइत अपन परिवार लेल ओहि ट्रेडिङ्ग कम्पनी सँ सटल हलुआइक बन्न दोकान मे किछु खयबाक सामग्री लेल पैसल छल आ पकड़ा गेल छल। मोकदमा मे पाइक प्रताप सँ ओकरा विरुद्ध गवाही देनिहारक अभाव नहि भेल छलैक आ न्यायालय द्वारा ओकरा सात बरखक जहल भऽ गेल छलैक। जहल काटि जखन ओ घुरल छल ओकर परिवार कालक गाल मे समा गेल छलैक आ ओकर 'घराड़ी पर कांट कूसक अभेद्य जंगल' उपजि गेल रहैक। एहि दृश्य सँ ओकरा मोन पर तेहन आघात लगलैक जे ओकर प्राणान्त भऽ गेलैक।

'किरण' क ई कथा सामाजिक विषमता संग अहू सत्य दिस संकेत करैत अछि जे व्यवस्था बरोबरि सम्पन्नक संग दैत छैक तथा विपन्न केँ अन्यायपूर्वक पेरैत छैक। कथाक प्रस्तुति बहुत व्यवस्थित नहि होइतो एकर कथ्य पाठक पर अपन अभीष्ट प्रभाव छोड़बा मे सफल भेल थिक। एहि मे एकटा एहन सत्यक उद्घाटन भेल अछि जे सार्वकालिक सत्य थिक।

काल ककरो छोड़त ?

'किरण' क ई तेसर कथा वर्ष 1939 मे प्रकाशित भेल छल। एहि कथा मे हमरा कथा-तत्व (स्टोरी एलिमेण्ट) सँ निबन्ध-तत्वक आधिक्य देखबा मे अबैछ। कथा संक्षेप मे एना थिक–

एकटा साम्राज्यक महाराज दीर्घवाहु मरणशय्या पर पड़ल छथि। अपन अंतिम समयमे ओ चिंतित छथि, कारण जे हुनक उत्तराधिकारी मात्र पाँच वर्षक छनि। ओ सोचैत छथि यदि ओ राज्यक भार बेटाकेँ दऽ जाइत छथि तऽ हुनक समर्थ अनुज वीरवाहु कुपित भऽ बालकक अनिष्ट कऽ सकैत छथि। अनुज केँ राज्य द ऽजाइत छथि तऽ धनक लोभवश "ईर्ष्याओ भै जेबाक संभावना।" मरणासन्न महाराज (तथापि) अन्ततः राज्यक संग अपन पुत्रक भार भाइ केँ सौंपि आँखि मूनि लैत छथि जा पाँच वर्ष बीति जाइछ।

आब राजकुमार दश वर्षक भऽ गेलाह। हुनक पित्ती आ स्थानापन्न महाराज वीरबाहु चिंतित होबय लगैत छथि, कारण जे समर्थ होइते राजकुमार हुनका गद्दीक अधिकार सँ वञ्चित कऽ देताह। वीरवाहुक एक मात्र पुत्र शंकर अपन पितिऔत सँ किछु पैघ छथि आ समर्थ भऽ गेल छथि।

राज्यक लोभ मे वीरवाहु एक राति अपन पत्नीक सहयोग सँ राजकुमारकेँ भोजन मे मिला कऽ विष दऽ दैत छथि आ ई बात शंकर सँ नुकायल नहि रहैत अछि। एहि घटना-दुर्घटना सँ प्रेरित भऽ शंकर अपन पिताक खून हुनक मुँह मे कपड़ा कोंचि कऽ दैत अछि। ई शंकरक पत्नी देखि लैछ जेकर शंकर संग तहिया बिआह भेल रहैक जखन ओ (शंकर) बच्चा छल आ ओकर पत्नी वयसेँ पैघ रहैक। शंकरक पत्नी पड़ोसी रमेश संग अनुराग-बन्ध मे बन्हायलि छलि। ओकरा सँ संकेत पाबि रमेश शंकरोक हत्या ओहिना कऽ दैछ जेना शंकर अपन पिताक कयने छल।

एहि कथा मे आधुनिक बोधक नाम पर किछु ताकब निरर्थक प्रयास होयत। तखन एहि कथामे ओहि सत्यक पुनर्स्थापन अवश्य भेल जे भौतिक लोभ मे पड़ि लोक केहनो कुकर्म लेल प्रस्तुत भऽ जाइछ। एहि कथा केँ पढ़ैत काल हमरा जकाँ ककरो राजा भोज आ हुनक पित्ती मुञ्जक कथाक स्मरण भऽ सकैत छैक। संगे बल्लाल सेनक 'भोज प्रबन्ध' कऽ ओ प्रसिद्ध श्लोको मोन पड़ि सकैछ, जाहिमे एहि सत्यकेँ रेखाङ्कित कयल गेल अछि जे पृथ्वी कि एकर सम्पदा ककरो संग नहि जाइछ—

"मान्धाता च महीपतिः कृतयुगालङ्कार भूतो गतः
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशास्यान्तकः।
अन्ये चापि युधिष्ठिर प्रभृतयोः यातादिवं भूतले
नैके नापि समंगता वसुमती नूनं त्वया यास्यति।।"

प्रलाप

वर्ष 1940 ई॰ मे प्रकाशित ई कथा 'किरण'क चारिम प्रकाशित कथा छनि। ई एकटा सामान्य पारिवारक व्यक्ति चन्द्रकिशोरक कथा थिक जकर जमींदारक बेटा चन्द्र किशोर सिंह संग तहिया मित्रता भेल रहैक जहिया ओ सभ हाइ स्कूलक छात्र रहथि। चन्द्र किशोरक मित्रता चन्द्रकान्तो संग छलैक जे एकटा गरीब ब्राह्मणक संतान छल। वास्तवमे

चन्द्र किशोर सिंह सँ अधिक आंतरिक मित्रताक बोध ओकरा चन्द्रकांत संग होइत रहैक—

"कारण ओ छलाह जमींदार। हुनक रहन-सहन मे बड़प्पन रहनि। हमरा ने जाने कियैक हुनक संग मित्रता मे कोनादन लागय। हुनक ओहि ठामक वायुमण्डल कृत्रिमतासँ दूषित बुझि पड़य। बाजब-भूकब, चलब-फिरब सभ मे कृत्रिमता मनुष्यक प्रति मनुष्यक व्यवहार मे देवता आ जानवरक समान भेद देखि हृदय घवड़ा उठै।"

दुहुक जीवन-स्थितिक विराट अन्तर कहियो चन्द्रकिशोर कैं चन्द्र किशार सिंह संग सहज भाव सँ मैत्रीक निर्वाहक लेल तैयार नहि कऽ सकल। ठीक एकर विपरीत चन्द्रकान्तक प्रति ओकर आकर्षण सहज रहैक। चन्द्रकिशोर सिंहक स्नेह भाव मे ओ स्वाभाविक स्नेहक स्थान पर दया भाव कैं प्रतिष्ठित देखैत छल।

ओही चन्द्रकिशोर सिंहक ओहिठाम कोनो उत्सव मे चन्द्रकिशोर आमंत्रित छल। ओकरा जयबाक लेल आंतरिक उछाह नहि रहैक, मुदा पिताक डरें, जिनका लेल जमींदार द्वारा आमंत्रित होयब पैघ बात रहनि, ओ नौत पुरबा लेल जमींदारक गाम बलरामपुर गेल। पहुँचल तऽ शामियाना मे लोकक ठट्ठ लागल रहैक। बाइजी अपन कलाक प्रदर्शन हेतु तैयार आ लोक सभ ओहि प्रदर्शनक आनन्द लेबा लेल व्यग्र, परञ्च कार्यक्रम आरंभ नहि भऽ रहल छल, कारण जे चन्द्रकिशोर सिंह ड्योढ़ी सँ बहरा कऽ अखन शामियाना मे नहि आयल छल। लोकक आँखि उत्सुकता संग ओहि दिस निर्निमेष भेल रहैक, जिम्हर सँ ओकरा अयबाक रहैक।

चन्द्रकिशोर कैं चिन्हनिहार ओतय क्यो नहि। अपन उपेक्षा सँ व्यथित होइतो चन्द्रकिशोर सिंह सँ बिनु भेट कयने घुरि जायब पिताक डरें ओकरा लेल संभव नहि रहैक। ओ प्रतीक्षा मे लगक एकटा गाछ तर बैसि जिराय लागल।

अन्ततः चन्द्रकिशोर सिंह बहराइत अछि आ लोक ओकर अभ्यर्थना मे बेहाल भऽ जाइछ। "सब जनौ आ नारिकेर दैत आशीर्वचनक बाद नमस्कार कऽ हटि जाइत गेलाह। परन्तु चन्द्रकिशोर सिंहक हाथ ककरो लेल नहि उठल। हँ, दू चारि परिचित व्यक्तिकैं एक आध शब्द टोकि देलथिन्ह मात्र।"

"मानवताक एहन अपमान आ मानवताक एहन अभाव देखि सशंक भाव सँ अन्तमे चन्द्रकिशोरो उठल आ अपन जमींदार मित्र कैं नमस्कार कयलक, परञ्च ई देखि ओ छगुन्ता मे पड़ि गेल जे ओकर मित्र ओकरा संग हाथ मिलबैत अयबाक समय आदिक सम्बन्ध मे जिज्ञासा कयलकै। एतबे नहि, नोकर सँ कुर्सी मँगा जलपानोक व्यवस्था मित्र द्वारा कयल गेलैक। चन्द्रकिशोरक आग्रह पर ओकर मित्र ओकरा संग चाहो पीबा लेल प्रस्तुत भेल। ई बात चन्द्रकिशोर संग ओहिठाम उपस्थित सभ व्यक्ति कैं चकित कयलक। चन्द्रकिशोर कैं एहि बात पर संतोष भेलैक जे इज्जति रहि गेलैक।

ई कथा असमान जीवन-स्थिति मे रहनिहार दू मित्रक असहज बन्धुत्वक कथा थिक, जाहिमे 'नृपस्य चित्तम' क रहस्यमयता दिस संकेत कयल गेल अछि। कथाक विषय-वस्तु

सँ लऽ कऽ ओकर प्रस्तुति धरिमे कोनो नवीनता नहि थिक, परन्तु एहि संदर्भ मे ई सेहो स्मरणीय थिक जे एकर प्रकाशन-कालमे मैथिली-कथा अपन आरंभिके चरण मे छल आ अपन दिशा संग स्वरोक संधान कऽ रहल छल।

समाजक चित्र

वर्ष 1941 ई॰ मे प्रकाशित ई कथा 'किरण' क पाँचम कथा थिक। ई एकटा सामान्यतः सम्पन्न परिवारक कथा थिक जकर मुखिया भोलाबाबू अपन पुत्रक भविष्य उज्ज्वल बनयबा लेल अपन सर्वस्व स्वाहा कऽ दैत छथि। ई एकटा बेटीक एहनो बापक कथा थिक जे अपन बेटीक नीक ठाम बिआह करबाक लौल मे अपना कैं कर्जक बोझ सँ लादि लैछ आ अन्त मे निःस्व भऽ जाइछ।

भोला बाबूक बेटा सुधीर जखन मैट्रिकक परीक्षा मे उर्त्तीण होइत अछि तऽ समारोह पूर्वक सत्यनारायणक पूजा कयल जाइछ। सुधीर मुजफफरपुरो मे पढ़ि सकैत छल, मुदा ओकरा पटना मे पढ़बाक इच्छा छैक जतऽ खर्च अधिक होयतैक। भोलाबाबू सुधीरक मोन एहि आशामे रखैत छथि जे चारि वर्षक बाद जखन ओ बी.ए. पास करत तऽ डिप्टी कलक्टर भऽ जायत। भोलाबाबू सुधीरक पटना मे पढ़बाक बात गछि तऽ लेलनि, लेकिन एक वर्षमे खर्च जुटयबाक बात कठिन भऽ गेलनि। तखन ओ सुधीरके लऽ कऽ सभा गाछी पहुँचलाह। सुधीरक बिआह कऽ खर्चक ओरिआओन करब हुनक उद्देश्य रहनि। पटना मे पढ़ैत आ लकदक संग रहैत एहि बर पर रूपन झा, जे कोनो से धनिक नहि रहथि, लट्टू भऽ गेलाह। बिआह भऽ गेलैक परञ्च संगहि खर्चो बढ़ि गैलैक, कारण जे सासुर जयबाक आ पत्नी लेल सनेशक खर्चो आब आवश्यक भऽ गेलैक। बिआहमे लेल काटर लगले समाप्त भऽ गेल आ भोला बाबू पर कर्जक भार बढ़य लागल। सुधीरक बी॰ ए॰ क परीक्षा अबैत-अबैत भोला बाबू परलोक सिधारि गेलाह। भोला बाबूक श्राद्ध नीक जकाँ होइन, एहि लेल सुधीर पर समाजक दबाओ पड़ल जखन कि स्थिति ई छल जे जथाक नाम पर किछु बाँचल नहि रहि गेल छल। सुधीर अन्ततः बी॰ ए॰ पास नहि कऽ सकलाह आ कर्ज मे सभ किछु गमा ओ पत्नी आ बेटा-बेटी संग सासुर जयबाक बिचारे कऽ रहल छलाह कि हुनक ससुर पहुँचि गेलथिन जे बेटीक बिआहमे लेल कर्ज सधयबामे अपन सर्वस्व गमा देने रहथि।

समाज, जेना कि होइत अयलैक अछि, लोकक क्रियाकलापक द्रष्टा तऽ होइत अछि, मुदा ओकरा मे सहभागिता कि सहानुभूतिक सर्वथा अभाव होइत छैक। ओ अहाँक सुखमे तऽ हँसैत अछि, मुदा अहाँक दुःख मे कनबाक फुरसति ओकरा नहि होइत छैक।

धर्मरत्नाकर

'किरण'क ई छठम कथा वर्ष 1941 ई॰ मे प्रकाशित भेल रहनि। ई "सौंसे सराऔत प्रगन्नाक मालिक" बाबू वीरमणि सिंहक कथा थिक। ई हुनक रौद्र प्रताप सँ झरकल

प्रजा आ तकरा मोन मे अपन अस्तित्वक रक्षार्थ सुनगैत आगियोक कथा थिक। एक तरहेँ ई सम्पन्न वर्ग द्वारा विपन्न वर्ग पर कयल जाइत निपट्ट अन्यायक कथा थिक।

बाबू वीरमणि सिंह एकटा पैघ जमींदार छथि। एकबाली तेहन जे हुनक हुकुम तोड़िते कपार फूटि जाइत छलैक। "जातिक तँ बाते की ? छत्तीस वर्णक राजा ब्राह्मण। ताहू मे सभ सँ पैघ। पूजो पाठ बड़ करै छलाह। अपन सर कुटुम्ब, अमला-फैला करुणानिधान धर्मावतारहिक नाम सँ सम्बोधित करैत छलनि।" एहि 'धर्मावतार' क घर मे उपनयनक ओरिआओन कयल जा रहल छनि। हमला-फैला आ बराहिल सभ एहि मे अपस्याँत अछि।

एहि प्रतापी पुरुषक एकटा रैयत रमकिसना अछि जे दू वर्ष सँ एकटा खस्सी पोसने अछि, जकरा ओ शुद्ध अयला पर नीक दाम पर बेचय चाहैत अछि। तेँ बाबू साहेबक बराहिल जखन खस्सी खोलय अबैत छैक तऽ ओ कहैत अछि जे "दू गोटे कहै से दाम दिअ, खस्सी लऽ जाउ। नै तऽ हम खस्सी नहि देब।" ई बराहिलक लेल एकटा अप्रत्याशित बात छल। "रमकिसनाक जबाब बराहिलक देह मे आगि फूकि देलक। आइ बीस वर्ष सँ ओ बराहिली करैत छल। एहि बीचमे कतेक घरसँ वस्तु लऽ गेल होयत परंच क्यो एहन माइक लाल नहि जन्म लेलक जे ओकरा कोनो वस्तु लेबा सँ रोकत। से रमकिसना रोकि देलक ? जकर घर पर खढ़ नहि, भरि देह वस्त्र नहि, पेटमे अन्न नहि, तकर एतेक सेखी ?" आ रमकिसनाक अप्रत्याशित प्रतिरोधक जबाब सँ उत्तेजित बराहिल लाठी सँ ओकर कपार फोड़ि दैछ आ "खस्सी खोलि रुपैयाक स्थान मे महादेवक पूज्य अंग देखा, रसकिसनाक बहु-बेटा केँ गरिअबैत विदा भै गेल।"

आहत रमकिसना भरि राति छटपटाइत रहल, मुदा ओकर खोज पुछारी लेल तखन क्यो नहि आयल– ने गामक समाज आ ने कोनो सरकारी अमला। बाद मे अयलाह राम कृष्ण झा जे जमींदारक दानवी अत्याचारक विरोध मे ठाढ़ होयबाक बात सोचैत रहलाह अछि, मुदा एहि लेल लोकक सङोर करब कहियो संभव नहि भऽ सकलनि। जमींदार के मुफ्त मे खस्सी नहि देबाक मंत्रणा उएह देने रहथिन रमकिसना के। रमकिसना सँ रामकृष्ण झा थाना चलि नालिस करबा लेल कहैत छथिन, परञ्च ओ पहिने ड्योढ़ी जा कऽ फरियाद करय चाहैत अछि। रामकृष्ण झा नालिस करबामे ओकर मोनक भयकेँ अटकारि चलि जाइत छथि।

करीब बारह बजे बाबू साहेब पूजा समाप्त कऽ उठलाह तऽ शोणित सँ रंगायल रमकिसना न्याय लेल फरियाद कयलक। "बाबू साहेब केँ नालिस फरियादक बड़ लौल छल ! परोपट्टाक नालिस प्रायः एतहि भेल करय।" मुदा रमकिसनाक नालिस सुनैत देरी "बाबू साहेबक तापमान 110 डिगरी पहुँचि गेल। रैयत के एतेक साहस जे जमींदारक बराहिलक सिकाइत करत ?" आ तखन रामकिसनाकेँ अपन दुस्साहसक कीमत लात-जूताक मारि सँ सधाबय पड़लैक। तीन दिनक भुखायल भिखारिक अन्न-याचनाक

उत्तर मे बाबू साहेबक बराहिल रमकिसने संग घुड़मुड़िया दैत ओकरो हाता सँ बाहर कऽ देलक।

मुदा खिस्सा एतहि समाप्त नहि भेल। रमकिसना बाबू साहेबक उपर फौजदारी कऽ देलक। परोपट्टाक लोक एहि बात पर चकित छल—

"रैयत भऽ कऽ मालिक पर नालिस करबाक ककरो कल्पना नहि होइत छलै। मालिकक केहनो सँ केहनो काज उचिते बुझै छल। एकबाली मालिकक लक्षणे बल प्रयोग। न्याय-अन्यायक परवाहि नंहि। अपन इच्छाक अनुसार जे सभकेँ चला सकै छल सैह एकबाली कहबै छल।"

आ एहि मत्स्यन्यायक फल भोगबा सँ रमकिसना नहि बाँचि पबैछ, ओकरा संग लऽ अन्याय केँ ललकारा देनिहार रामकृष्ण झा सेहो अपन प्राण दऽ मालिकक एकबाल केँ अक्षुण्ण रखबा लेल विवश होइत छथि।

फौजदारीक बात सुनिते बाबू साहेब आगि भऽ जाइत छथि आ रमकिसनाक माथ काटि लेबा लेल, घर अजाड़ि देबा लेल, ओकर सम्पत्ति लूटि लेबा लेल हुकुम करैत छथि आ "हुकुम सुनैत प्रजाक पैसा सँ पालित परन्तु पराधीनताक प्रभाव सँ पतित पटवारी-बराहिलक झुण्ड रमकिसनाक घर" पहुँचैत अछि। जनता भय सँ त्रस्त चुप्प रहैछ। रामकिसनाक घर उजाड़ि देल जाइछ, आ सुपरिचित सामंती तेवर संग ओकर पत्नीक सतीत्व लूटि लेल जाइछ। रमकिसना घर मे नहि रहलाक कारणेँ बाँचि जाइछ।

रामकिसना जखन सरकारी हाकिम संग घर अबैछ तऽ देखैत अछि जे सभ समाप्त भऽ गेल रहैक। घर उजड़ि गेल रहैक, डीह पर घर कि बासक कोनो निशान बांकी नहि रहि गेल छलैक। गामक क्यो गवाही देबा लेल तैयार नहि। बाबू साहेबक अमला सभक अनुसार ओतय सभ दिन सँ खेती होइत अयलैक अछि। रमकिसनाक लेल बजनिहार एकमात्र रामकृष्ण झाक बात पर क्यो ध्यान देनिहार नहि। न्याय कतऽ सँ भेटितैक, उनटे ओ दफा 211 मे बन्हा जाइछ। ई आघात ओ सहि नहि पबैछ आ डीहे पर ओकर प्राणान्त भऽ जाइछ।

रामकृष्ण झा अपना केँ रमकिसनाक सत्यानाशक उत्तरदायी मानैत छथि, तेँ जमींदार सँ बदला लेबाक आकांक्षा संग मोने मन पजरैत रहैत छथि। रमकिसना पर भेल अत्याचारक प्रकट विरोध तऽ क्यो नहि कऽ सकल, परञ्च आत्मा सभकेँ धिक्कारलकै। एहनामे अवसरक लाभ उठबैत रामकृष्ण झा घरे-घरे जा सभकेँ सलाह देलखिन जे ओ सभ बेगार नहि करय, भेट नहि चढ़ाबय। मंगनी लेबाक हक जमींदार केँ नहि होइत छनि। हुनका मालगुजारी मात्र सँ मतलब। रामकृष्ण झाक परिश्रम रंग धरऽ लगैछ—

"रैयत सभ तऽ भैए गेल छल। रामकृष्ण झाक बात सभक हृदय मे जँचलैक। पेरल तऽ जाइए रहल छी—तखन एक बेर इहो प्रयत्न किये ने करी ? बस, सब रैयतं अड़ि देलक, जन-बेगारं सभ बन्द भऽ गेल, कोनो वस्तु मंगनी देब क्यो स्वीकार नहि केलक।"

शोषित-पीड़ितक लेल सहानुभूति रखबाक, अन्यायक विरोध लेल प्रजा कें जागृत करबाक कीमति रामकृष्ण झा कें लगले चुकाबय पड़लनि। बाबू साहेब अपन एहि विरोधकें जीवन-मरणक प्रश्न मानि अपन बराहिल सभक द्वारा महावीरक मन्दिर मे, जतऽ रामकृष्ण झा सभ राति पूजा लेल जाथि, हुनक हत्या करबा देलनि। "दुर्गाक स्थान मे छागरक बलिदान बहुत दैत अछि, परन्तु महाबीरक स्थान मे ब्राह्मण कें बलिदान देबाक श्रेय सिंहे के भेटैछ।"

आ एकरा बाद लौटल एकबाल। लूट-पाट सँ मारे वस्तु जुटाओल गेल। समारोहपूर्वक उपनयन सम्पन्न भेल। "आध-आध मनक खाजा-मुङबा पचमेर बिखजी मे भेल छल। जे नै गेल तकरो सभक बखरा भेटलैक। आ अन्त मे पंडितक विदाइ आरो विशेष रूपसँ भेल। यश-यश भऽ गेल। विदाइ सँ प्रसन्न-मन पंडितलोकनि एक सभा मे बावू साहेब कें 'धर्मरत्नाकर'क उपाधि दैत गेलथिन्ह।"

. एहि कथाक सम्बन्ध मे डा॰ शिवशंकर श्रीनिवास 'कथा-किरण'क भूमिकामे कहैत छथि जे "समाजक व्यक्तिपर धनीकक अन्यायपूर्ण व्यवहार। विद्वानो सँ विद्वान व्यक्ति कें अर्थ-लोभमे होइत विचारहीनताकें कहैत कथा मे शोषित सँ शोषकक विरुद्ध संघर्ष कराओल अछि। कथाकार किरण तत्कालीन समाजक जिनगीक स्वरूपे टा उपस्थित नहि करऽ चाहैत छलाह, ओ मुख्यरूप सँ व्यवस्था-परिवर्तनक बात कहऽ चाहैत छलाह।" मैथिली अकादमी, पटना द्वारा प्रकाशित 'मैथिलीक प्रसिद्ध कथा'क सम्पादक द्वय (डा॰ वासुकीनाथ झा : मोहन भारद्वाज) क विचारें "जमींदारी शोषणक विरुद्ध उठैत आक्रोश कें ई कथा प्रखरता दैत अछि। उपनयन आ उपाधि टाकाक खेल थिक। धर्माचार आ मानमर्यादा अर्थक अभिव्यक्ति थिक। अर्थपरक सामाजिक व्यवस्था आ ओकर कर्मकाण्डक तहकें खोलैत 1941 ई॰ क ई कथा मैथिली कथा-साहित्यमे ऐतिहासिक महत्त्व रखैत अछि।"

'धर्मरत्नाकर' निश्चित रूप सँ सामंती शोषणक कथा कहैत अछि, मुदा एकरा संगहि ई अत्याचार करैत अयनिहार आ अत्याचार सहैत अयनिहारक मानवीय संवेदन-शून्यतोक कथा एकसंगे कहैत अछि। कथामे लोक-जागृतिक गप्प कयल तऽ गेल अछि, मुदा तकरा कोनो परिणाम धरि नहि पहुँचाओल गेल अछि आ से प्रायः तहिया स्वाभाविको नहि होइत।

एक चित्र

'धर्मरत्नाकर'क तीन वर्ष बाद प्रकाशित 'किरण'क ई सातम कथा वर्ष 1944 ई॰ क थिक। "डेढ़ दू कट्ठा बेलगान घड़ारी आ तीन बिगहा धनहर खेत छल जथा मनोहरक, से किन्तु पैतृके। ताहि सँ आने जकाँ ओहो अपना कें गौरवान्वित मानय।" पैतृक जथा सँ गौरवान्वित मनोहर मैथिली साहित्य परिषदक सहायता लेल भेल सभामे जखन चन्दा देबामे सम्पन्न लोक कें कन्नी कटैत देखलक आ योगेशक मुंह सँ ई सुनलक जे "धन

गौरवक वस्तु नहि। जँ थिक तँ अपने कमायल। बापक धनमे अपन कोन बहादुरी।" तऽ पैतृक जथा ओकरा लेल गौरवक स्थान मे संतोषक वस्तु बनि गेल।

"मनोहर पढ़ल कम रहितहुँ उहिगर बड़ रहय। ओतबे जमीनक उपजा सँ बढिया जकाँ गुजर करय।" किन्तु बाढ़ि सँ ओकर सर्वनाश भऽ गेलैक। पाँच वर्ष सँ उपजा बन्न। अल्पाहार, अनाहार आ कदन्नाहारक क्रम चलय लगलैक। चारि टा संतान भऽ गेल रहैक, जकर पोषण कठिन भऽ गेलैक। मनोहर आ ओकर पत्नी अकाल वार्धक्य सँ ग्रस्त भऽ गेल। पहिने ओकरा अपन अकाल वार्धक्यक तथा कष्टपूर्ण जीवनक कारण अपने बाल-विवाह लगैक। ओ सोचलक जे पत्नी आ बाल-बच्चा लेल ओ किया दुःख भोगत। परञ्च लगले ओ एहि सत्यक अनुभव कयलक जे ओकर दुर्भाग्य लेल ओकर पत्नी कि बच्चा उत्तरदायी नहि छैक, कारण बिआहक समय ओकर पत्नीयो तऽ नावालिगे रहैक। एहि सत्यक उद्घाटन होइते ओकर मनमे हाड़-हाड़ भेलि अपन पत्नी लेल सहानुभूति जगलैक।

अभावक साम्राज्य पसरि गेल रहैक ओकर घरमे। ओहि राति जहिया ओकरा मनमे पत्नी लेल सहानुभूति उपजल रहैक ओ पत्नीकेँ पैर नहि जाँतय देलक आ ओकरा छाती सँ लगा सुति रहल। स्नेहक आलिङ्गन मे दुनूक निद्रा गाढ़ भऽ गेलैक आ फरीछ भेला पर जखन निन्न टुटलैक तऽ देखलक फट्टक खुजल रहैक। ओकर दुधपीवा बच्चा केँ गीदर उठा कऽ लऽ गेल रहैक। ओ घर सँ बच्चाक खोज मे बहरायल छल, मुदा लगले ओकरा दुर्घटनाक ज्ञान भऽ गेल रहैक। जखन ओ घुरि कऽ आयल तऽ देखलक जे जाहि पत्नी केँ सूतल जानि ओ अपन निन्न टुटला पर जगौने नहि छल, ओ वास्तव मे ओकर बाहुपाश मे रातिये ओकरा छोड़ि दुनिया सँ विदा भऽ गेलि छलि।

'किरण'क एहि कथा मे प्रगतिशील चिंतन तऽ भेटैत अछि, मुदा कथाक ताना-बाना अत्यन्त अव्यस्थित थिक। मात्र भावनात्मक उद्गार कथाक निर्माण नहि कऽ सकैछ। घटना सभक बीच तार्किकता आ एकसूत्रताक अभाव सँ एहि कथा मे नाटकीयताक आधिक्य भऽ गेल अछि जे कथाक स्वरूप आ आत्मा-दुनूकेँ आहत कयलक अछि। तखन एहि कथा मे कथाकारक प्रगतिशील सोच केँ बुझबा मे तथापि कोनो भाङठ नहि होइछ ई संतोषक विषय थिक।

मधुरमनि

'किरण'क सातम कथा (एक चित्र) वर्ष 1944 ई॰ मे प्रकाशित भेल छल जकरा अठारह वर्ष बाद 1962 ई॰ मे हुनक ऐतिहासिक तथा तात्विक दृष्टि सँ अत्यन्त महत्वपूर्ण कथा 'मधुरमनि' प्रकाशित भेल। संक्षेपमे 'मधुरमनि' एकटा 'मेहनतिया जंघगरि' बहु आ 'नाङड़ बाम हाथ सुखायल-सन बोनिबुत्ता किछु करबाक सामरथ नहि' रखनिहार लाचार घरबलाक कथा थिक। ई मेहनतिया बहु थिक मधुरमनि आ लाचार पति थिक मोचन।

एहि कथामे मात्र एक-दू घंटाक घटनाक्रम अंकित अछि आ जतबे एकर पात्र सभ, जे संख्या मे मात्र चारि अछि, सोझ मनोभावक लोक थिक, ततबे सोझ आ सहज ढंग सँ ओकर बात राखल गेल छैक। मधुरमनि देरी सँ भानस आरंभ कयने अछि। ओकरा अनका आङनक काज मे विलम्ब भऽ गेल छैक। ओ मोने-मोन एहि विलम्ब सँ मोचनक भोजन मे भेल देरी लेल अपराध-बोध सँ ग्रस्त अछि। तखने मोचन आबि जिज्ञासा करैत छैक—"भानस भेलै ?" आ उत्तर मे मधुरमनि कहैत छैक—"हँ ? भानसे टा ? नौ टा तीमन-सचार लागल राखल ऐ। काज ने धंधा, तीन रोटी बंधा ! दरबज्जा पर बैसल-बैसल बात गढ़ैत रहता - - - भानस भेलै ? भानस भेलै ?" मधुरमनि एहन कटाह जबाब खौंझायल आ दुःखी मोन सँ दैत छैक। एकटा विस्फोटक संग कथा आरंभ होइछ। मधुरमनि बजबा लेल बाजि गेल, मुदा "अप्पन कमाइ खा कऽ नाङड़ लुल्हक तरमे" बसनिहारि मधुरमनि क्षोभ आ व्यग्रता संग दालि कैं लाड़य आ जाँत कैं उसकयबा मे लागि गेलि। संगे लागि गेलि ओ मडुआ पिसबामे। जाँत धरिते जकरा जीहपर लगनी थिरकब शुरु कऽ दैत रहै, से मधुरमनि तखन चुप छलि। सभ किछु बिसरि तखन आ मोचनक भानस मे लागल छलि।

मोचनकैं खौंझायल मधुरमनिक झरकल बोल असहाज भऽ गेलैक। ई ओकरा लेल ततेक अप्रत्याशित रहैक जे सहसा मधुरमनिक आन्तरिक व्यथा पर तखन ध्यान देब मोचन लेल संभव नहि रहैक। ओ भावार्थक सोझ चोट बर्दास्त नहि कऽ सकल। कोनो आन अर्थ ताकब मोचन लेल तखन कठिन रहैक। ओ परदेश जा भीखो मांगि गुजारा करबाक बात विचारि आवेश मे अपन फाटल-पुरानक "मोटरी बान्हि काँख मे लटका लाठी पर दैत विदा भऽ गेल टीसन पर कऽ।" अपन काज मे बाझलि मधुरमनि मोचनक बड़-बड़ायब नहि सुनलक आ ओकर परदेश जयबाक निर्णयो नहि बुझि सकल। तखन मधुरमनि भानस छोड़ि आर किछु नहि सोचि रहलि छलि। ओकरा भुखायल मोचन लेल मात्सर्य भऽ रहल छलैक। साग दालिमे दऽ ओ मडुआ पिसैत अछि। सतना माइ मधुरमनि कैं चुपचाप पिसैत देखि आरोग्यक प्रति शंका प्रकट करैत छैक। ओ सतना माइकैं सहज मुदा उदास स्वरमे मोचन कैं झाड़ि देबाक गप्प कहैत छैक। सतना माइ मौका देखि मधुरमनिक प्रति सहानुभूति देखबैत मोचनक उपहास करैत छैक, मुदा से मधुरमनि सहि नहि पबैछ। एहनो पति कैं आन क्यो किछु कहौ—धुरमनि ई नहि सहत। ओ अपन मोचनक तखन गुणगान करैत सतना माइ पर पलटि कऽ चोट करैछ। ओ पति-स्नेह सँ आकण्ठ आप्यायित भऽ जाइछ। सतना माइ सँ हिसाब बराबर कऽ मधुरमनि रोटी ठोकैत अछि आ ओकरा फुलयबा मे लागि जाइछ।

घर सँ बहरा कऽ मोचन असमंजस मे पड़ि जाइछ। कलकत्ता जा कऽ ओ की करत ? गारि-फज्झति छोड़ि कोनो नीक तरहक जीवनक संभावना ओकरा बाहरो नहि बुझा पड़ैंक। ओ अन्ततः घर घुरबाक मनःस्थिति मे आबि गेल— एकटा एहन यात्रा सँ वापसी जे आरंभे नहि भेल। मधुरमनिक प्रेमलालित जीवन सँ एकाएक पड़ा जायब

मोचन लेल संभव नहि रहैक। ओ एकटा बटोही संग गप्प करैत घुरबाक बहाना ताकय लागल।

रोटी फुला मधुरमनि शोर पाड़लकै तऽ कोनो जबाब नहि अयलै। भानस सँ पहिने आबि कऽ चूल्हि ओगरनिहार मोचनक जबाब नहि पाबि मधुरमनि कैं निश्चय भऽ गेलैक जे ओकरा बात पर रूसि मोचन कतौ विदा भऽ गेल अछि। ओ चोट्टे किछु बिचारि "फटकी लगा देलकैक। अपन दोसर टुक नुआ काँखतर कऽ लेलक आ विदा भेलि।" मोचन कतौ दूर नहि जा सकल छल। रस्ता कात मे बैसि गप्प कऽ रहल छल। मधुरमनि आ मोचनक बीच तखन प्रारंभ होइछ आत्मा सँ आत्मा धीरि पहुँचैत सम्वाद। एहि संवादमे सुलह-सफाइ-अभियोग-आत्म-स्वीकार आ आरो बहुत किछु छैक। एहि संवादमे जीवनक परुष यथार्थ छैक तऽ दाम्पत्यक मधुर संगीतो छैक। सम्वाद एहि परिणाम पर पहुँचैत अछि जे—"मोचनक पाछू लागलि मधुरमनि। नहु-नहु चालि।" आ कथाक अन्त जखन विस्मित बटोहीक एहि पाँती "क्यो जँ कनगुरिया लगा दितैक।" आ मधुरमनिक ठोर पर अबैत हँसी आ पैर झाड़ब संग होइत छैक तऽ पाठक पर जे पहिल प्रतिक्रिया होइत छैक ओ ई जे पाठक कथा समाप्त कऽ किछु देर कथा सँ उत्पन्न रसबोधक उपभोग मात्र करय चाहैत अछि, तकरा संग पहिचान बढ़यबाक पलखति तखन ओकरा लग नहि रहैत छैक। तखन कथा समाप्त करैत जे उदास आ संगहि समर्पित दाम्पत्यक मधुर संगीत अन्तर मे व्याप्त लगैछ से एकटा अद्‌भुत अनुभव होइछ। आ ई लगले साफ भऽ जाइछ जे ई छोट-छिन कथा स्निग्ध दाम्पत्यक एकटा उदात्त महाकाव्य थिक।

'मधुरमनि' पहिल बेर सितम्बर, 1962 ई॰ मे प्रकाशित भेल छल। एहि समय धरि प्रो॰ परिमोहन झा, मनमोहन झा, व्यास आ योगानन्द झाक पीढ़ीक कथाकार व्यवस्थित भऽ पुरान पड़ि गेल रहथि। ललित, राजकमल चौधरी, मायानन्द मिश्र, सोमदेव, धीरेन्द्र, बलराम आदि कतोक कथाकार एहि समय धरि साधिकार एवं सार्थक ढंग सँ प्रतिष्ठित भऽ गेल रहथि। बिचला पीढ़ीक गोविन्द झा, मणिपद्‌म, राधाकृष्ण 'बहेड़' आ सुधांशु शेखर चौधरी सेहो अपन स्थान बना लेने रहथि। मैथिली कथा ताधरि क्षेत्रीय बोध सँ उबरि व्यापक लोक-चेतना दिस उन्मुख भऽ गेलि छलि।

'मधुरमनि'क चर्च किछु गोटेकैं एहि लेल संगत आ आवश्यक लगैत छनि जे मैथिली कथामे सामान्यतः अनस्पृष्ट रहनिहार वर्गक कथाकैं एहिमे अद्‌भुत रूप सँ यथार्थपरक तथापि संगीतमय परिवेशमे राखि प्रस्तुत कयल गेल छैक। एहि कथाक प्रसंग अनेक सही बात मे ईहो एकटा बात थिक, मुदा इयाह बात एकर सम्पूर्ण यथार्थ नहि थिक।

'मधुरमनि' एकटा समर्पित नारीक कथा थिक जकर जीवनक कठोरता ओकर मोनक मृदुता कैं दूरि नहि करैत छैक, अपितु ओकरा मोनकैं एकटा उदात्त संस्कार दैत एकटा एहन ऊँचाइ पर प्रतिष्ठित कऽ दैत छैक जे मधुरमनि लेल अपन अपाहिज आ आश्रित

पतिकेँ सम्पूर्ण स्नेह आ यथोचित आदर देब संभवेटा नहि होइत छैक, ओकरा चरित्रक सहज वृत्ति सेहो बनि जाइत छैक। मधुरमनि अपना वर्गक सीमाक अकस्मात् अतिक्रमण कऽ सामान्य सँ विशिष्ट चरित्र बनि जाइछ। एहि चरित्र मे कोनो गलदश्रुता नहि भेटत, एहि पर शरतचन्द्रोक कोनो चरित्रक प्रभाव तकने नहि भेटत। मधुरमनिक खौंझ मे, अनुरागमे आ मात्सर्य मे एक संग विराट स्तर पर मैथिल मानसक प्रतिविम्ब भेटैत अछि, तऽ एकटा शुद्ध आ सामान्य नारीक मानसिकतो नुकायल नहि रहैछ।

'मधुरमनि' अपन भाव-बोध सँ अधिक अपन शिल्प-वैशिष्ट्यक कारण एकटा सफल आधुनिक कथा थिक। एहिमे एकोटा अनावश्यक पाँती नहि भेटत आ एकर कोनो पाँती एहन नहि लागत जे आनो तरहेँ एहने नीक जकाँ कहल जा सकैत छल। तखन 'मधुरमनि'क मधुरमनि एकटा सहृदय आ स्नेहपरायणा पत्नीक रूपमे अपना वर्गक कतेक दूर धीर स्वाभाविक ढंग सँ प्रतिनिधित्व करैत अछि, ई किछु गोटेकेँ विचारणीय लागि सकैछ। मधुरमनि ओहि वर्गमे नहि होइछ, ई कहब अनर्गल होयत, मुदा 'मधुरमनि' मे मोचनक चरित्र मधुरमनि सँ अधिक चीन्हल लगैछ।

'मधुरमनि' एकटा विपन्न दम्पतिक कथा थिक जे जतबे कोमल राग-बोधक कथा थिक, ततबे आंतरिक ऊष्मा संग कहलो गेल अछि। एकर कथा-तत्वक यथार्थपरकता एहि कथाकेँ अनुपम सौन्दर्य प्रदान करैत छैक। तखन अहाँ मायानन्द मिश्रक 'गाड़ीक पहिया' कि राजकमल चौधरीक 'फुलपरासवाली' आ 'घड़ी' कि राजमोहन झाक 'अनर्गल' आ कि जीवकान्तक 'वस्तु' आ कि किछु आर कथाक दम्पति-प्रसंग मे अन्तर देखबैक आ ई अन्तर युगदृष्टि सँ अनुशासित बोधक रूपमे सुविधापूर्वक देखल जा सकैछ। 'किरण'क मधुरमनि सम्यक् दृष्टिसँ देखला पर किछु पूर्वक नारी प्रतीत होइछ, तथापि ओकर राग-बोध कतौ सँ दमित नहि लगैछ। सोझ मोनक अनगढ़ आ निर्बाध आवेश एहि कथा मे देखिते बनैछ। मधुरमनि कोनो अभिजात नारी चरित्रकेँ झूस करितो अनभिजात बनलि रहैछ।

'किरण'क 'मधुरमनि' अपन भावगत कोमलता एवं अभिव्यक्तिक सहजता आ रागात्मकताक कारण काव्यक सीमाक स्पर्श करैत अछि। कथातत्व केँ बिनु क्षति पहुँचौने ओ काव्यात्मक भंगिमा धारण कऽ लैछ। एहन उदाहरण कम भेटत, जतऽ ई चमत्कार संभव भेलैक अछि। 'मधुरमनि,' पाठकक चेतना केँ स्फीति बनबैत ओकर अन्तरमे काव्यात्मक आनन्दक सृजनमे सहजतापूर्वक सफल होइछ। ई 'किरण'क कथाकारक ककरो लेल स्पृहणीय सिद्धि थिक। मनमोहन झाक कथा सभ मे कोमल तत्वक अभाव नहि, मुदा हुनक कथा-संसारमे मधुरमनिक कोनो चेन्ह नहि भेटत। वास्तव मे एहि पीढ़ीक प्रायः सभ कथाकार तखन मध्यवर्गीय चेतनाक अमिश्र कथा कहबामे लागल रहथि। 'किरण' बड़ सहज ढंग सँ एहि सीमा केँ लाँघि ओतय ठाढ़ भऽ गेलाह जतऽ हुनक स्नेह आ सहानुभूतिक पात्र हुनक कथा गढ़ैत रहनि।

कोन महल नाम रखबै एकर ?

वर्ष 1964 इ॰ मे प्रकाशित ई कथा 'किरण'क नवम कथा थिक। एहि कथाक "हम" हिन्दी-उर्दूक आघात सँ विध्वस्तप्राय मिथिलाक संस्कृति ओ साहित्यक समान बाट पर 'हकासल-पियासल, निछोह साइकिल चलौने' जा रहल छलाह, मैथिली साहित्यकारक समान।' बाट बालुकामय, गाछ-विहीन आ निर्जन छल। छाहरिक खोज मे अपस्याँत हम दूर पर एकटा ऊँच महार पर एकटा गाछ देखैत छथि आ ओहि दिस लपकैत छथि। लग पहुँचला पर देखैत छथि—

"गाछ छल आमक। नवगछुली। डेढ़-दू हाथ मोट। खूब झमटगर। पात सभ टा लाल (चैतक मास रहैक—विनिबन्ध लेखकक जोड़), लालटेस कोमल। लाल साड़ी पहिरने निर्मल वालिका (सभक) बीचमे प्रसन्न-मुख नव दुलहाक समान कलमक बीच-बीच मे मज्जर। अगणित मधुप कोबर गीत गबैत। बुझि पड़ल, समस्त कोशी क्षेत्र सँ विताड़ित वसन्त ओहि गाछ पर निवास करैत छल।"

गाछक चारूकात भरि छाती ऊँच चिक्कनि माटिक चबूतरा रहैक, गोवर सँ नीपल। गाछक जड़ि मे एकटा धूपदानी आ दिवारी राखल। "चबूतराक एक कोन पर चारिटा नवे-नवे घैल, जल सँ भरल रखने एक व्यक्ति वयसँ युवक किन्तु शरीर-स्वास्थ्यँ जीर्ण, हृदये महान परन्तु परिच्छेदें हीन-दीन बैसल छल।" ओहि दीन-हीनक वृत्तान्ते एहि कथाक मूल तत्व थिक। ओहि युवक कँ देखि पहिने 'हम' कँ लगैत छनि जे ओ कोनो लक्ष्मी-पात्रक जन थिक जे एहि मरुभूमि मे थाकल-पिआसल बटोहीक सहायता लेल ओतय नियुक्त थिक, मुदा ओ तखन छगुन्ता मे पड़ि जाइत छथि जखन हुनका ज्ञात होइत छनि जे ओ ओरिआओन ओकर अप्पन छैक।

किछु वर्ष पूर्व ओ दीन-हीन युवक अपन पत्नी संग एकटा अनुरागपूर्ण जीवन जीबैत छल। "स्त्रीक नाम छलै सिनुरी। स्वभाव अत्यन्त कोमल, सरल, पवित्र तथा मुधर। कौशिकीक बाढ़ि अन्न-वस्त्रक कष्ट जेना दुनू व्यक्तिक प्रेमकँ दृढ़ करैत गेलै। ओतबे वयसमे ओ संग-समाजक नायकक स्थान पाबि गेलि छलि। बेर-विपत्ति, रोगीक पथ-पानि सेवा-सुश्रषा, टोलमे ककरो खगय नहि दै। बढ़ मधुर जीवन जा रहल छलैक दुनू वेक्तिक।" एहि जीवन मे अकस्मात् अन्हड़ आबि गेलैक। बड़कीटा बाढ़ि अयलैक आ गामक लोक कँ घर छोड़ऽ पड़लैक। ओ युवको किछु आर लोक संग अपन पत्नीकँ लऽ कऽ महार पर आबि गेल जे एक मात्र एहन स्थान रहैक, जतऽ पानि नहि पहुँचि सकल रहैक—

"नीचाँ जबका। ऊपर सँ बरखा। दुखित पड़ि गेलै सिनुरी। दवा-दारूक कोनो उपाय छलैके नहि। चलि गेलै ओकरा एक्सरे छाड़ि एहि संसार सँ। कतौ दोसर भूमि जागले ने छलै। जारनि अलभ्य। मुखबत्ती लगा कऽ गाड़ि देलक ओ अपन सिनुरी कें ओही ठाम।

"धिया-पुता भेले नै छलै। मेटा जेतै ओकर नाम। तैं ओकर स्मारक, ओकरे सारा पर, मधुर सिनुरिआ आमक गाछ रोपि देलकै। सयह छल ओ गाछ। ओकर विगलित स्वरमे, बड़ डबडबायल आंखि मे असंख्य अज-विलाप काव्य विलीन भय रहल छल।"

बादशाह शाहजहाँ अपन प्रिया-पत्नीक कब्बर पर ताजमहल-सन भव्य महल ठाढ़ कयलनि—"परन्तु ताजमहल थिक की ? शहजहाँक प्रेमक प्रतीक कि हुनक वैभव-प्रभुत्वक प्रतीक ? कोन कृतित्व अछि ताजमहल मे शाहजहाँक ? नक्सा वास्तु-कलाविदक। लूरि निर्माणकर्ताक। परिश्रम मजूरक। आ धन जनताक।" शाहजहाँ द्वारा बनबाओल गेल स्मारक ताजमहलक नाम सँ विश्वविख्यात अछि, परञ्च एहि युवकक बनाओल स्मारकक कोन महल नाम राखत लोक ?

ई कथा समाप्त करैत काल 'किरण'क 'ताजमहल' शीर्षक कविताक अनायासे स्मरण होइछ जे वर्ष 1956 ई॰ मे लिखल गेल छल आ जकर किछु पाँतीक एहू कथा मे उपयोग कयल गेल अछि। ई एकटा भावना प्रधान कथा थिक, जकरामे व्याप्त करुणा अन्तरकेँ अनायास छुबैत अछि आ निःस्वक प्रेमकेँ यथोचित प्रतिष्ठा दैत अछि।

धरती कतउ काक वंझा होथि

'किरण'क ई दशम कथा वर्ष 1964 इ॰ मे एकटा कथा-संकलन मे प्रकाशित भेल छल। एहि कथामे एकटा मैयाँ छथि जे टोल भरिक मैयाँ छथि। सभक काज-प्रयोजन मे हाथ बटयबा लेल, सभक नोर पोछबा लेल आकुल आ सभकेँ उचित-अनुचितक बोध करयबा लेल वृत्त। ओ लोक सभक स्नेहक अधिकारिणी छथि, तऽ लोक सभक आलोचनो सँ ओ बाँचि नहि पबैत छथि। टोल मे एकटा गाछ छैक जकरा बहाड़ि-सोहाड़ि मैयाँ प्रतिदिन ओतय बैसैत छथि, आनो लोक सभ मैयाँ सँ गप्प सुनैत अछि, खिस्सा सुनैत अछि ओतय। ओहि दिन लोक जमल रहय कि प्रकट होइछ एक व्यक्ति "जकर धोती कमीज फाटल, मैल, केस रुच्छ, दुब्बर देह" छैक। ओ पाँच वर्ष पूर्व दहा गेल अपन छोट भायक खोज करैत ओतय पहुँचल छल। चालि-ढालि आ विलाप सँ बताह लगैत छल। भायक प्रति असीम स्नेह आ तकर बिछोह ओकरा एहन स्थितिमे आनि देने रहैक। ओ व्यक्ति अपना भायक दहयबाक खिस्सा सुना ओतय सँ विदा भऽ जाइछ। लोक ओकरा बताह बुझैत छैक, मुदा मैयाँ, जे ओहि व्यक्तिक गप्प अत्यन्त सहृदयतापूर्वक सुनि रहलि छलीह, लोकक मान्यता सँ सहमत नहि होइत छथि—

"चुप रहै जो। धरती काक बंझा नहि होइ छथि जे एकटा रामे टा जनमि कऽ रहि जेताह। हम ओकर आँखि देने भीतर पहुँचि कऽ देखलियै। ओ बताह-ततताह नै, अपन लछुमनक वियोग मे बियाकुल राम छलैए।" आगाँ मैयाँ ईहो जोड़ि दैत छथि—"ओह ! कोखि जुड़ा देलक।"

एहि कथामे मूल बात इयाह थिक जे भ्रातृ-प्रेम सँ बन्हायल राम कोनोकाल मे भेटि सकैत छथि। कथाक आन तथ्य सँ एकर मूल कथ्यक कोनो विशेष सम्बन्ध नहि होइतो मैयाँक चरित्रक आकलन मे सहयोग भेटैत अछि।

आँखि मुनने आँखि खोलने

'किरण'क ई एगारहम कथा वर्ष 1965 इ॰ मे प्रकाशित भेल छल। एहि कथामे एकटा कलाकारक हृदय रखनिहार पात्र मंचन थिक जे प्रकृतिक एकटा मनोरम दृश्य देखि अद्वेलित भऽ जाइछ—

"अपूर्व मनोरम दृश्य बूझि पड़लैक मंचन कें। पूर्व दिशामे चमकैत सूर्य आ पच्छिम भर सुगरकोना सँ भड़ार कोन धरि क्षितिजक अन्तराल सँ उठैत नील पहाड़। उभड़-खाभड़ नहि। आधुनिक राजपथक समान सरियाम, खतल-बनाओल, ड्रेसिंग कयल।"

मंचन ओहि दृश्य कें चित्रित करबा लेल दौड़ि कऽ घर पहुँचैत अछि आ कागज-कलम-मोसि लऽ कऽ खिनहर पर बैसि जाइछ। आँखि मूनि कऽ ओ ओहि दृश्यक स्मरण करय लगैछ, मुदा चित्र बनायब आरंभ करबा सँ पूर्व ओकरा मोन मे द्वन्द्व होइछ जे ओ जतबे-जे देखलक ततबे-से चित्रित करब ठीक रहतैक कि कविलोकनि जकाँ ओहि मे जोड़-तोड़ करबो आवश्यक छैक। मंचन कल्पनाक दुनियामे रमल एहि द्वन्द्व सँ उबरबाक चेष्टा कऽ रहल छल कि जागतिक यथार्थ सँ ओकर सामना होइछ—

"पाँच-छौ वर्षक नेना सरदी सँ सर-सर करैत उघाड़ आङे ठुड़री लताम खाइत आगू मे ठाढ़ रहैक।"

ई ओकर बेटा रहैक जे उघाड़ रहबाक सम्बन्ध मे प्रश्न कयला पर कहैत छैक जे गंजी तऽ ओकरा छैहे नहि। ठुड़री लताम एहि लेल खा रहल अछि जे गाछ मे पाकल लताम नहि छैक आ पनपिआइक कोनो आन ओरिआओन नहि छैक। जागतिक यथार्थ लगले ओकर कल्पनाक वितानकें छिन्न-भिन्न कऽ दैत छैक आ ओ यथार्थक ठोस भूमि पर आबि जाइछ। स्थिति ई जे घरक कोनो कोन निचू नहि।

"अहाँके हम अपन पेट सँ झाँपि दैत छी—कहैत नेना पीठ पर पड़ि रहलैक। मंचनक मनक चित्र गलि कए जेना ओकर आँखि बाटें बहराय लगलैक।"

एहि कथा मे 'किरण' कल्पना आ यथार्थक बीच पसरल अन्तरकें रेखाङ्कित करबाक प्रयास कयलनि अछि।

चनरा

'किरण'क एगारहम कथा 'आँखि मुनने आँखि खोलने' वर्ष 1965 इ॰ मे प्रकाशित भेल छल, जकरा बाद तेइस वर्ष धरि हुनक कोनो कथा प्रकाशित नहि भेलनि। अपन रोगशय्या पर पड़ल-पड़ल अप्रैल, 1988 इ॰ मे चारिटा कथा डा॰ शिवशंकर श्रीनिवास कें ओ लेखापित करौने रहथि, जाहि मे 'चनरा' पहिल कथा थिक। डा॰ श्रीनिवासक

अनुसार एहि चारू कथा मे तीनटा कथा (चनरा, जाति पाँजिक जादू आ अभिनव उत्तरा) मे वर्णित घटना वर्ष 1941 क थिक। 'चनरा' क कथा एहि तरहेँ आरम्भ होइछ—

"चन्द्रकिशोर बाबू इलाकाक कलामी जमिन्दार कहाबथि। हुनका एकटा बेटा आ तिनको बरख सातेक एकटा बेटा रहथिन। हुनक ड्योढ़ीक सटले छहड़देवालीक बाहर मसोमात ठक्कनि ड्योढ़ी मे अछिञ्जल-फूल दऽ कऽ गुजर करैत रहथि। तकरो एकटा बेटा करीब साते बरखक। माय-सङे ड्योढ़ी अबैत-जाइत।"

चन्द्रकिशोरबाबूक पौत्रक नाम चन्द्रकान्त छनि आ संयोग सँ मसोमातक बेटोक नाम चन्द्रकान्ते छैक। ई बात ज्ञात भेला पर चन्द्र किशोर बाबू केँ आगि लेसि दैछ जे एकटा दीन-हीन माउगिक बेटोक नाम उएह छैक जे हुनका सन प्रतापी लोकक पौत्रक नाम छैक। मोसमात हुनक क्रोधक आगाँ सिहरि उठैछ आ हुनका ई कहि शांत करैत अछि जे ओकर बेटाक नाम तँ नानाक देल छैक, "सभ चनरा-चनरा कहतै।"

चन्द्रकिशोरबाबू एक बेर जखन पत्नी संग तीर्थ-यात्रा सँ घुरैत छथि तऽ पौत्र लेल (जिनका लोक बौआजी कहैत छनि) आन सनेश सङ्ग एकटा फुलहत्था लेने अयलाह। बौआजी खेल-खेल मे ओहि फुलहत्था सँ जे सामने पड़ि जाय तकरा मारि बैसैत छथि। एकदिन ओ चनरो के फुलहत्था सँ मारैत छथि आ मौका देखि चनरा हुनका उठा कऽ पटकि दैत अछि। एहि घटना पर चन्द्रकिशोरबाबू हुकुम देलथिन "चनरा केँ पकड़ि ला। दागि दे करची सँ।" मुदा चनरा निपत्ता भऽ गेल, गाम सँ पड़ा गेल।

तकरा बाद बहुतो बरख बितलै। बौआजी शहर मे बढ़य लगलाह। एक बेर अपन मित्र सभक संग गाम अयलाह तऽ हुनका सभक सुख-सुविधाक विशेष प्रबन्ध कयल गेल।

बाढ़ि आयल रहैक। चारू दिस धरती जलमग्न। बौआजी मित्र सभक संग सैर लेल बहराय चाहैत रहथि। हुनक खास नोकर लोचना नाओ खेबैत आबि रहल छल, जाहि मे कतौ भूर भऽ गेलैक। नाओ डूबि गेलैक। बौआजी उदास भऽ गेलाह। तखने अपन नाओ सङ्ग उपस्थित होइछ चनरा, जकरा पहिने तऽ बौआजी नहि चीन्हि सकलथिन, मुदा बादमे स्मरण भेलनि। पुछला पर ज्ञात भेलनि जे ओ चारि दिन पहिने गाम घुरि कऽ आयल छल। चनरा बौआजी आ हुनक मित्रकेँ अपन नाओ मे बैसा घुमाबय लऽ जाइछ। चनरा नाओ लऽ कऽ सैर लेल नहि बहरायल छल, ओ तऽ पानि सँ घेरायल लोक सभ लेल दबा-दारू आ अन्न वस्त्रक उद्योगमे लागल छल। बौआजीक मित्र सभ मे एकटा बंगाली मित्र छनि। ओ चनराक कार्य सँ बहुत प्रभावित होइछ आ ओकरा मे शरतचन्द्रक उपन्यास 'पथेर दावी' क सव्यसाचीक दर्शन करैत अछि।

एहि कथा मे 'किरण' की कहय चाहलनि अछि, ई बहुत स्पष्ट नहि होइतो पाठक एतबा अवश्य अनुभव करैत अछि जे वर्गीय चेतना जीवनकेँ बहुत दूर धरि प्रभावित करैछ।

जाति-पाँजिक जादू

'किरण' द्वारा अप्रैल 1988 मे लेखापित कथा मे ई दोसर कथा थिक जे कुलीनताक भूत खेलाइत मैथिल ब्राह्मण समाजक यथार्थ कें रेखाङ्कित करैछ। एकर कथ्य पूर्वक जकाँ आब प्रासंगिक तऽ नहि रहल, मुदा पूर्वक गर्हित चेतनाक स्मरण अलबत्त करबैछ।

एहि कथा मे भद्रकान्त नामक एकटा युवक अछि जे गरीब होइतो ओहन नहि लगैत अछि। ओ कुलीन घरक थिक—"बाप छलथिन सोति, बड़का सोति कि छोटका से ज्ञात नहि, मुदा ओ युग छलैक, जाति-पाँजिक अन्धकार युग।"

भद्रकान्तक बहिनिक बिआह, एक महाराजक रखैल मेनकाक, जे यत्न सँ अपन फराक जथा-पात बना एकटा ब्राह्मण बबाजी सङ्ग बिआह कऽ लेने छलि, संतान सँ भेल छलैक। बहिनिक सासुर मे भद्रकान्तक पर्याप्त सम्मान होइक, कारण ओ सोतिक संतान छल। भद्रकान्त एकटा साइकिल झंझारपुर बजार घुमबाक नाम पर उपरौलक आ ओकरा बजार मे बेचि नीक वस्त्रादि कीनि रेलगाड़ी धऽ पचगछिया ड्योढ़ी पहुँचि गेल। ड्योढ़ीक बाबूसाहेब राज दरभंगाक पैघ हाकिम रहथि। हुनका अपन कुलक परिचय दऽ ओ एकटा हाथी मंगलक आ बनगामक सभा मे पहुँचि गेल। हाथी पर सवार भऽ कऽ आयल एहि सुन्दर वर पर लोक टूटि पड़ल। एकटा छोट-छिन जमींदार जातिक प्रति मोहक कारण ओकर जाल मे पड़ि गेलाह आ अपन बेटी बिआहि देलनि। विवाहक नवम दिन भद्रकान्त पत्नी संग गाम जयबाक घोषणा कयलक तऽ सासुरक लोक कें आश्चर्य आ हर्ष भेलैक, कारण जे ओहि समय धरि जे सोति वा योग ओहि इलाका मे बिआह कयने छल, ककरो स्त्री सासुर नहि देखने छलैक। भार-दोर आदिक लगले प्रबन्ध भेल आ भद्रकांत पत्नी संग विदा भेल। सहरसा आबि ओ सभ भरिया कें भारे सँ भोजन करा देलक, विदाइ दऽ देलकै आ झंझारपुर सँ सहरसाक घुरती भाड़ा सेहो दऽ देलकै। पत्नी आ बाँचल वस्तु जात संग ओ गाम आयल। किछु दिनक बाद अपना कें झुट्ठे मरणासन्न कहि ओ सार कें तार देलक आ श्राद्धक लेल खर्च लेने अयबाक आग्रह कयलक। ओकर सार हजार टाकाक संग बहिनिक सासुर पहुँचल तऽ ओकरा यथार्थक ज्ञान भेलैक जे ओ सभ सभ तरहें ठकल गेल छल। कथा भद्रकान्तक एहि स्थापना संग, जे वास्तव मे लेखकीय मंतव्य थिक, समाप्त होइछ—"जाबत जाति पाँजिक जादूक मोह मे अहाँ सभ सनक लोक पड़ल रहत, ताबत लोक एहिना ठकाइत रहत। हम अगले शुद्ध मे दोसर बिआह कऽ कऽ देखा दैत छी।" आ से सत्ते, ठीक ओही साल भद्रकान्त एकटा आर बिआह कऽ लेलक।

अभिनव उत्तरा

ई 'किरण' द्वारा अप्रैल, 1988 मे लेखापित कथा मे तेसर आ हुनक समस्त कथा मे चौदहम थिक। कथाक आरंभ एहि प्रकारें होइछ—

"मैलामवाली पुतहु कें अरछि-परछि घर जाइ गेल, ओकर मुँह देखि बाहर आयलि आ ओलतीक बाती पकड़ि अपन स्वामी पराव कें विस्मित-सन स्वर मे कहलकै—"घरदेखी मे कनियाँ कें देखने नै छलै ?"

"पराव चौंकि उठल, कहलकै—'किए कनिया मे कोनो दोख छै ? एहन कनियाँ तँ दस बरखमे टोलक ककरो घर मे नहि आयल छलैए। बाबुओ-भैयाक घर मे नहि। "तै तँ पुछलियै, एहिन गोरि-सुकुमारि कनियाँ हाँसू-खुरपी लऽ कऽ काज करतै से कोना हेतै? हाथ मे फोके-फोका भ'जैतै"—मैलामवाली कहलकै।

मैलामवालीक बेटा कारी रहैक आ तें एहन सुन्नरि संग ओकर बिआह ओकर मातृ-बोध कें कचोट सँ भरि दैत छैक—"ओह, एहन गोरि-सुकुमारि बेटी कें हमर कारी बेटा संग बिआहि देलक।" कचोटक संग मैलामवाली कें एहन नीक पुतहु लेल हर्षो होइ।" मैलामवाली पुतहुक लेल ओकर सुख-शृंगार लेल प्रयत्न मे लागल रहय।" मुदा ई गोरि-नारि सुकुमारि पुतहु ओकर सभ आशंका कें दूर कऽ देलक। सासुकें कोनो काज नहि करऽ देबय।

पराब दुःखित पड़ल। ओकरा टी.वी. भऽ गेलैक आ यथासंभव दवाइ-दारूक बादो ओ बाँचि नहि सकल। मैलामवाली बापक सेवामे लागल बेटा कें दूर राखय चाहैत छलि, मुदा से भेलैक नहि आ बेटो कें इएह रोग धऽ लेलकै। यथार्थक ज्ञान भेला पर मैलामवाली अपन समधिन कें बजा पुतहुक दोसर ठाम बिआह कऽ देबाक अनुरोध कयलक, परञ्च ओकर समधिनियो ओकरे सन पवित्र हृदयक लोक रहैक। समधिन एहि लेल राजी नहि भेलि आ जमायक चिकित्सा लेल अपन तीन पाओक चानीक सूइत मैलामवालीकें देलकै। मैलामवाली सूइत लेलक आ समधिनिक सहृदयता आ उदारता पर मुग्ध भऽ गेलि।

मैलामवालीक पुतहु अपन पतिक जी-जान सँ सेवा कयलक। अपन तरहत्थी पर ओकर थूक-खखार लऽ कऽ फेकि आबय, ई देखि मैलामवालीक आत्मा सिहरि जाइ।

मैलामवाली दुःखक एहन दिन बहुत दिन नहि देखि सकलि आ जाइत रहलि। पुतहुक घोर सेवा सँ ओकर पति नीके तऽ भऽ गेलै, ओकरा एकटा बेटो भेलैक, परञ्च ओ ओकरा शैशवावस्थे मे छोड़ि दुनिया सँ विदा भऽ गेल। पुतहु मैलामवालीक पौत्र के पालि-पोसि चेतन बनौलक—

"आइ परावक पौत्र ओकर नाम उजागर कऽ रहल छैक। मैलामवालीक जँ आत्मा हेतै तऽ अपन गोरि-सुकुमारि पुतहुक श्रम आ साहस देखि पुलकित होइत हेत।"

'किरण' एहि कथाक माध्यम सँ ई स्थापित करबाक चष्टा कयलनि जे पतिपरायणता कि सासु-ससुरक प्रति श्रद्धा-अनुरक्ति पर मात्र पैघे लोक सभक कनियाँ-पुतहुक एकाधिकार नहि होइत अछि। छोटो लोकक घरमे एहन साध्वी पाओल जाइछ।

रूपा

'किरण'क ई अंतिम कथा थिक जे 11 अप्रैल, 1988 इ॰ कें लेखापित भेल छल। एहि कथाक रूपा एकटा एहन बापक बेटी अछि जे गाम मे नहि रहैत छैक—शहर मे फैक्ट्री मे काज करैत छैक, जे कांग्रेस-कम्युनिस्टक गप्प करैत छैक। तैं बेटीक बिआह भेला पर जखन ओ सासुर आबि रहल छैक, ओ कहैत छैक—"मेहनति खूब करिहें, मुदा हवेली-महल मे नौरिन-खबासिनीक काज नहि करिहँ।"

रूपाक बाप ई बुझैत छै जे ओकर सासुरक लोक एहन काज करैत छैक, तैं ओ अपन बेटीकें चेता रहल छल। मुदा रूपा जखन सासुर अबैछ तऽ देखैत अछि जे ओकर बूढ़ि सासु पण्डितजीक घर काज करैत छैक।

ओकर सासु जतऽ काज करैत छलैक से हवेली-महल नहि छलैक। ओ पण्डितक घर रहैक। "पण्डितजीक आङनक कनियाँ बौआसिन 'नहि कहबैत छलथिन। केओ कनियाँ कहलकैन, केओ गिरहतनी आ बड़ आदर भेलै तऽ बहुरिया।" पण्डितजीक घर हवेली-ड्योढ़ी नहि, घरे कहाइत छलनि। हुनका आङन मे एकटा बूढ़ि पण्डिताइन, एक गोट कनियाँ आ एकटा बच्चा मात्र। बाहर मे पण्डितजी एकसरे। पण्डितजीक दू बेटा—जेठ छपरा दिस पण्डिताइ करैत आ दोसर इन्जीनियर जे अपन लोक-बेद संग आने ठाम रहैत छलाह।

बूढ़ी पण्डिताइनक स्वभाव बड़ नीक रहनि। ओ अपन पुतहु संग रूपो कें कनियाँ कहथिन। ओ पण्डिताइनक पुतहु कें हुनका सँ पूछि बहिनदाइ कहय लागलि। एहन घर मे काज करवामे ओकरा अपन बापक आशंकाक भय नहि भेलैक। काज करैत रूपा के तीन-चारि मास बितलैक तऽ इन्जीनियर साहेब अपन लोक वेद संग गाम अयलाह। अविते इन्जीनियर साहेबक पत्नी कें ओहि घर मे दम फुलय लगलनि।

एक दिन इन्जीनियर साहेबक पत्नी स्टोब जरा हलुआ बनौलनि—किसमिस-छोहाड़ा देल। एक प्लेट बर कें देलनि आ दोसर प्लेट अपने लेलनि। लोहियाक बाँचल हलुआ लऽ जयबा लेल देआदिन के कहलखिन। बूढ़ि पण्डिताइनकें अपन पुतहुक ई "उपेक्षात्मक व्यवहार नीक लगलनि कि नहि, से नहि कहि।"

इन्जीनियर साहेब दुनू बेकती प्लेटक किछु हलुआ गीजि-गाजि कऽ खेलनि आ किछु छोड़ि देलथिन। रूपा जखन काज करबा लेल आयलि तऽ छोड़ल हलुआक सम्बन्ध मे पुछलकनि— "ई हलुआ नहि खाइ जेबै ?" रूपाक ई प्रश्न इन्जीनियरक मेम साहब कें नहि सोहयलनि। ओ रूपाकें 'इडीयिट' कहि देलखिन। रूपा हुनक बात सुनलक, मुदा उत्तर नहि देलक। मात्र प्लेटक छोड़ल हलुआ गाय लेल राखल माँड मे उझीलि देलक। 'मेम साहेब' क अनुमान रहनि जे आन नौड़िन-खबासिन जकाँ रूपो ओ अँइठ अढ़ मे लऽ जा कऽ खा लेत। ओ रूपाकें पुछलखिन "एतेक रास हलुआ माँड़ मे।" रूपाक उत्तर छलैक—"अहाँ सभ खइतियै नहि, तखन तऽ कुकुर खाइत वा गाय खाइत, तैं हम गायकें दऽ देलियैक।"

दोसर दिन भिनसर मे मेघौन रहैक। रूपाकेँ काज लेल अयबा मे किछु विलम्ब भऽ गेलैक। जखन ओ पहुँचलि, पण्डिताइन चूल्हि पजारि हाथ सेकैत रहथि। रूपाकेँ देखिते केटली माँजि अनबा लेल कहलथिन।

मेम साहेबक निन्न टूटि गेल रहनि, मुदा बेड 'टी' नहि भेटल रहनि। ओ लोहछि कऽ टिप्पणी कयलनि—"बेड टी एतेक अबेर कऽ होइ छै ?" रूपाक जबाब रहैक—"अबेर भेलै तऽ सोचलहुँ मेम साहेब स्टोव पर चाह बना कऽ पीबि लेने हेतीह।" रूपाक टिप्पणी पर मेम साहब कड़कैत स्वर मे बजलीह—"एहन खराप वेदर मे भोरे उठबाक जोगर छलैए ?" हँसैत रूपा जबाब देलकनि—"मेम साहेब, सौंसे गाम मे एके रंग वेदर छलैए।" आ चाहक केटली बूढ़ी पण्डिताइन लग लऽ गेलि। बूढ़ीकेँ हँसी लागि गेलनि, तखन डरो भेलनि जे कतौ मेम साहेब रूपाकेँ मारि ने बैसथि, मुदा ओ दाँत कीचि कऽ रहि गेलीह। "रूपाक समता भावना मरचाइ जकाँ लगलनि, मुदा नहि जानि किएक गम खा गेलीह।" मानवीय समानता केँ प्रतिष्ठित करैत 'किरण'क ई अंतिम कथा हुनक रचनाकारक स्थायी सोचकेँ रेखाङ्कित करैत अछि।

'किरण'क कथा पर विचार करैत 'कथा किरण'क भूमिका मे डा॰ शिवशङ्कर श्रीनिवास लिखलनि अछि—"किरणजीक आरंभिक कथा कथ्यक स्तर पर जतेक धारदार अछि, ओतेक सुन्दर शिल्पक नहि। तकर कारण जे किरणजी अपन कथाकेँ मानसिक विलासिताकेँ ध्यान मे राखि नहि गढ़लनि।" किरण'क आरंभिके नहि, बादोक कथा (एक मात्र 'मधुरमनि' के छोड़ि) शिल्पक लेहाज सँ सुतरल कथा नहि छनि। 'किरण'क कथासभ मे प्रस्तुत कथ्य मानवीय समानता, सामाजिक विषमता कि लौकिक सहृदयता-असहृदयता केँ व्यक्त तऽ करैत अछि, मुदा अपन कथ्य केँ तरासबाक खाहे ओ कोनो आवश्यकता नहि बुझलनि, खाहे ओकरा लेल हुनका पलखति नहि रहनि। 'मधुरमनि' एहन तरासल कथाक कथाकारक प्रति ई कहब अनर्गल होयत जे शिल्प-चेतनाक हुनकामे अभाव रहनि, मुदा ताहि चेतनाक व्यवस्थित उपयोग ओ अपन आन कोनो कथामे 'मधुरमनि' जकाँ नहि कऽ सकलाह, ई आश्चर्यक विषय अवश्य थिक। कथाकार 'किरण'क सम्बन्ध मे चन्द्रेशक एहि मान्यता[1] सँ हम सहमत छी जे—"ई सत्य जे जाति-पातिक दम्भ, स्वार्थ, मद, मोह आ झूठ-फरेबक दुनियाँ मे सफदेपोश आदमीक मुखौटाकेँ उतारि फेकि दीन-हीन आ कष्ट भोगयवला प्राणीक चीत्कार सँ दुःखी भऽ नव समाजक निर्माण हेतु कथा मध्य सामाजिक यथार्थक नव भाव अङ्कुरित कऽ कथाकेँ ओ सहरजमीन पर अनलनि।"

'किरण' एकटा यथार्थवादी कथाकार छथि, हुनक आन्तरिक चेतना प्रगतिशील रहनि, मुदा हुनक मौलिक संस्कार, जकरा विरुद्ध ओ जीवन-भरि संघर्षरत रहलाह, एक सीमाक

---

1 कथाकार 'किरण'क कथाक समीकरण (कर्णामृत-जुलाइ-सितम्बर, 1989)

बाद हुनका आदर्शवादी बना दैत रहनि। ई हुनक रचनाकारक सीमा थिक, तऽ हुनक वैयक्तिक विशिष्टतो मानल जा सकैछ।

कथाकार रूपमे 'किरण'क उपलब्धि पर विचार करैत काल हुनक वैचारिकता कि कथा संवेदना सँ अधिक हुनक भाषा-संवेदना ध्यान आकर्षित करैत अछि। हुनक अभिव्यक्ति अत्यन्त संक्षिप्त तथा 'डाइरेक्ट' होइछ, जकर प्राणवत्ता हुनक भाषा पर आश्रित होइछ जे ठेठ तऽ होइते अछि, पात्रानुकूलो होइत अछि। कम शब्द मे बहुत बात कहब 'किरण'क अप्रतिम विशेषता थिक जाहि लेल ओ अपन कोनो पूर्ववर्तीक ऋृणी नहि छथि। हुनक भाषा संवेदना हुनक परवर्ती रचनाकार केँ प्रभावित तऽ कयलक, मुदा ककरो लेल अनुकरणक सुविधा उपलब्ध नहि करा सकल।

'किरण'क बाल कथा

अपन रचनाकारक आरंभिक जीवन मे मैथिली मे बाल-साहित्यक खगताक पूर्तिक उद्देश्य सँ 'किरण' किछु बाल-कथा लिखने रहथि। हुनक एहन दू टा कथा 'बीर-प्रसून' नामक 44 पृष्ठक एकटा संकलनमे संकलित अछि जे मैथिली प्रचारक संघ, काशी द्वारा वर्ष 1938 इ॰ मे प्रकाशित कयल गेल छल। 'वीर-प्रसून' मे तीन टा कथा—ध्रुव, अभिमन्यु आ भीष्म—संकलित अछि, जाहि मे पहिल दुनू कथा 'किरण' तथा तेसर कथा आनन्द झा (न्यायाचार्य) द्वारा लिखल गेल छल। 'किरण'क ई दुनू बाल-कथा उपदेशात्मक तथा प्रेरणात्मक अछि। एहि दुनू कथाक अतिरिक्त 'किरण'क आन कोनो बाल-कथा हमरा देखबामे नहि आयल अछि, तकरा सम्बन्ध मे हमरा कतौ उल्लेखो नहि भेटल अछि।

(III)

किरण द्वारा निम्नलिखित नाटक तथा एकाङ्कीक प्रणयनक उल्लेख भेटैत अछि। नाटक : (1) विजेता विद्यापति (2) सीता (3) शकुन्तला (4) भगवान श्रीकृष्ण (5) पलासीक पाशा (6) जय लिच्छवी

एहि पाँचो नाटक मे हमरा मात्र 'विजेता विद्यापति' उपलब्ध भऽ सकल अछि। शेष चारू नाटक प्रायः अप्रकाशिते थिक।

एकाङ्की—(1) जय जन्मभूमि (2) कर्ण (3) शीतलसेनी (4) महाराज शिवसिंह (5) बन्दी राजकुमार (जे 'विजेता विद्यापति'क दोसर अङ्कक सातम दृश्य थिक)।

एहि एकाङ्की सभ मे मात्र 'जय-जन्मभूमि' हमरा उपलब्ध भऽ सकल अछि। 'बन्दी राजकुमार'क कोनो पृथक संस्करण हमरा देखबा मे नहि आयल अछि। 'कर्ण' पर विद्यापति सेवा-संस्थान, दरभंगा द्वारा प्रकाशित 'अर्पण' नामक पत्रिकाक छठम अंक (वर्ष 1989 ई॰) मे प्रो॰ अशोक कुमार झाक एकटा लेख प्रकाशित छनि, जाहि सँ ई प्रतीत होइछ जे ई एकाङ्की प्रकाशित भेल छल। शेष दुनू एकाङ्कीक प्रकाशनक सम्बन्ध मे निश्चित रूपसँ किछु कहब हमरा लेल कठिन थिक।

विजेता विद्यापति (नाटक)

'किरण'क ई नाटक तीन अंक आ उनतीस दृश्य मे प्रस्तुत अछि। एहि नाटकक सम्बन्ध मे आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'क विचार[1] छनि जे—"विद्यापति पर अनेक नाटक-एकाङ्की, गीत नाट्य, फिल्म-चित्र प्रस्तुत होइत आयल अछि। अधिकांश मे हुनक शृंगारी कोमलकान्त पदावलीकार कवि, शास्त्रकार पण्डित, भावुक भक्त, परिणाम-निराश गृहस्थ, महान साधनाक एही सभ रूप मे देखाओल गेल अछि। किन्तु 'पुरुष परीक्षा'क रचयिता, 'मानुस जनम अनूप'क गायक, 'शस्त्रेण रक्षिते राज्ये शास्त्र चिन्ता प्रवर्तते' क उद्घोषक देशभक्त, राजनायकक रूपमे आइ किरणजीक कलमें गढ़ल-मढ़ल एक अपूर्व व्यक्तित्वक रूपमे (ओ) उपस्थित भेल छथि।"

'विजेता विद्यापति' वर्ष 1972 इ॰ मे प्रकाशित भेल छल। एकर घटना कें 'किरण' जनश्रुति पर आधारित ऐतिहासिक कहने छथि। एहिमे विद्यापति अपन संरक्षक नृप शिवसिंहक राज्य पर दिल्लीक तुर्क बादशाह द्वारा चढ़ाइ भेला पर एकटा योद्धा जकाँ रणभूमि मे लड़ैत छथि तथा बन्दी शिवसिंह कें अपन काव्य-प्रतिभा द्वारा बादशाह कें प्रसन्न कऽ छोड़ा लबैत छथि। मिथिला भूमिक गौरवमय इतिहासक, जे सांस्कृतिक तथा राजनीतिक दुनू अछि, एहि नाटक मे विशद गुणगान थिक। एकटा नाटकक रूपमे 'विजेता विद्यापति' कोनो नव प्रतिमान गढ़बा मे सफल नहि भेल अछि। एकर रचना नितांत पारम्परिक ढंगक थिक।

जय जन्मभूमि (एकाङ्की)

'किरण'क ई एकाङ्की वर्ष 1955 ई॰ मे प्रकाशित भेल छल, जकर घटनास्थल देवलोक थिक आ सभ पात्र स्वर्गीय भेल महापुरुष सभ छथि। एहि मे विद्यापति, वाचस्पति, चण्डेश्वर, मुरलीधर झा, शिवसिंह, हरिसिंह, शङ्कराचार्य, गोनू झा, डाक, सुरसेन, लंगटसिंह आ डा॰ सच्चिदानन्द सिंह सन भिन्न-भिन्न कालक लोकके एकत्र देखाओल गेल अछि तथा मिथिला आ मैथिलीक दुरवस्थाक सम्बन्ध मे गप्प करैत चित्रित कयल गेल अछि। ई सभ महापुरुष मिथिलाक प्राचीन गौरव आ दर्पक स्मरण करैत ओकर वर्तमान दुरवस्था पर शोक प्रकट करैत छथि तथा जन्मभूमिक पुनरभ्युदय हेतु पृथ्वीपर पुनः अवतीर्ण होयबाक निश्चय करैत छथि। एहि सभ पात्र मे मात्र शंकराचार्य आ डॉ॰ सिंहक जन्मभूमि मिथिला नहि रहनि, परञ्च ओहो सभ एहि भूमिक तेज सँ सुपरिचित रहथि। ई एकाङ्की पाँच दृश्यमे बाँटल अछि आ अपन प्रस्तुति मे नितांत पारम्परिक अछि।

---

1 'विजेता विद्यापति'क भूमिका

कर्ण (एकांकी)

'किरण'क ई एकांकी हमरा देखल-पढ़ल नहि अछि, परञ्च एहि एकांकी पर प्रकाशित प्रो॰ अशोक कुमार झाक लेख [1] (एकांकी कर्ण : किरणजी) सँ ई विदित होइछ जे ई (प्रायः) सात दृश्य मे बाँटल अछि। ई महाभारत 'पर आधारित होइतो 'किरण'क प्रगतिशील दृष्टि कें रेखाङ्कित करैत अछि। एकरा सम्बन्ध मे उक्त लेख मे प्रो॰ झा लिखलनि अछि जे— "कर्ण शीर्षक एकांकी एकटा ऐतिहासिक एकांकी अछि, जे व्यास मुनिक अमर कृति 'महाभारत'क कथानक सँ उद्धृत कयल गेल अछि। मुदा विषयक साम्यता रहितहुँ वस्तुक भिन्नता एतय प्रत्यक्षतः दृष्टिगोचर होइत अछि, जाहिमे एकांकीकारक द्वारा अपन व्यक्तिगत विचारधारा पर कर्णसदृश प्रतापी महापुरुषक व्यक्तित्वक यथार्थ वर्णन करबामे पड़ऽवला प्रभावक पूर्ण त्याग देखाओल गेल अछि। प्रस्तुत एकांकी विभिन्न दृश्यक माध्यम सँ हमरा लोकनिकें कर्णक जन्म वृतान्त सँ लऽ कऽ पिताक (पालक पिताक-विनिबन्धकारक टिप्पणी) संग अध्ययन करबाक निमित्त एक आध ठाम घुमबाक वर्णन सँ सम्बन्धित अछि। एकांकीक अन्तमे कर्णद्वारा स्वयं आत्मविश्वासक संग पिता सँ आज्ञा लऽ परशुराम ओतय पहुंचि शिक्षाक लेल प्रस्तुत होयबाक क्रममे उपस्थित विभिन्न बाधा कें देखाओल गेल अछि। "वस्तुतः किरणजीक कर्ण महाभारतक कर्ण नहि, महाकवि दिनकर विरचित 'रश्मिरथी'क कर्ण थिक।"

'किरण'क प्रगतिशील दृष्टिक दिग्दर्शन हेतु प्रो॰ झाक पूर्वोल्लिखित लेख मे उद्धृत एहि एकांकीक किछु पाँती अवलोकनार्थ प्रस्तुत अछि—

(1) 'जन्मक कारणें विकास करबाक अवसर सँ केओ वंचित किया होयत गुरुदेव? ब्राह्मण-क्षत्रिय आदि जातिक बेटाकें देखब छोड़ि एक मनुष्यक बेटाक रूपमे देखिऔक तँ धरती स्वर्ग भ' जायत।"

(परशुरामक प्रति कर्णक उक्ति)

(2) राजकुमारीक तरवा सँ कोनो मोती नहि झड़ैत छनि, हुनक शरीर कमलक फूल जकाँ नहि गमकैत छनि, मुनष्ये जकाँ हाड़े-मांसुक देह छैक राजकुमारियोक।"

(द्रौपदीक स्वयंवर मे अपमानित भेला पर कर्णक उक्ति)

शोषित, दलित ओ समाज मे तिरस्कृत वर्ग कि व्यक्ति प्रति सहानुभूति आ मनुष्यक समानताक ओकालति 'किरण'क समस्त रचनामे पाओल जाइछ।

(IV)

'किरण'क निबन्ध आ समालोचनात्मक लेख सभक एकमात्र संकलन 'किरण निबन्धावली भाग-1' कहि अप्रैल 1990 मे किरण मैथिली शोध संस्थान, धर्मपुर (उजान), लोहना रोड, दरभंगा द्वारा प्रकाशित कयल गेल छल, जाहिमे हुनक निम्नांकित एगारह टा निबन्ध/ आलोचनात्मक लेख संकलित थिक—

---

1 विद्यापति संस्थान, दरभंगा द्वारा प्रकाशित 'अर्पण'क छठम अंक (वर्ष 1989)

(1) विद्यापतिक राधाकृष्णक तीन रूप किएक
(2) विद्यापतिक राधाकृष्णक व्यक्तित्व निरूपण
(3) राधाकृष्ण काव्यक प्रचाराभावक कारण
(4) गोविन्द दास शृंगारिक कवि : विद्यापति नहि
(5) भू-परिक्रमणक रचयिता कविकोकिल विद्यापति नहि थिकाह
(6) प्रयोग तथा परम्परा
(7) पूर्वाञ्चलीय गीत साहित्य : मैथिली ओ बंगला गीत
(8) उमापतिक समय
(9) हस्तलिखित पत्रिका (ऐतिहासिक झलक)
(10) मैथिली शब्द समाज
(11) फकड़ा

'किरण' एहि एगारह निबन्धक अतिरिक्तो कतोक निबन्ध लिखने रहथि जे भिन्न-भिन्न पत्रिका आ संग्रह सभमे छिड़िआयल अछि आ संकलित नहि भऽ सकल अछि। उल्लिखित एगारह निबन्धो मे सभ कि अधिकांश संकलन सँ पूर्व पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित भेल छल। 'किरण'क निबन्धक दोसर संकलन अखनो प्रतीक्षित अछि।

'कर्णामृत'क किरण स्मृति अङ्क (जुलाइ-सितम्बर, 89) मे प्रकाशित योगानन्द झाक निबन्ध (डा॰ काञ्चीनाथ झा 'किरण'क निबन्ध साहित्य) मे 'किरण' द्वारा लिखित निबन्ध सभक विवरण एहि रूपेँ देल गेल अछि—

(1) उमापतिक समय — वैदही, जून, 1964
(2) कीर्तनिञा नाच की नाटक — वैदही, अप्रैल, 1964
(3) चन्द्रकला कवि नहि चन्द्र कवि जयदेवक स्त्री सम्बन्धी लेख — मिथिला मिहिर, 10 जनवरी, 65
(4) भुवनजी सामन्तवादी छलाह — माटि-पानि, जनवरी, 84
(5) विद्यापति नहि छलाह — मिथिलामिहिर, 20 नवम्बर, 1977
(6) भू-परिक्रमण कवि कोकिल विद्यापतिक कृति नहि — मिथिलामिहिर, 12 मार्च, 1978
(7) कवि विद्यापतिक अर्जीदावी — स्मारिका, चेतना समिति, पटना, 1977
(8) गोविन्द दास सुच्चा भक्तकवि कोना — मिथिला मिहिर, 11 जुलाई, 1965
(9) विद्यापति गीतकारेटा कोना — मिथिला मिहिर, 25 फरवरी, 1968
(10) गोविन्द दास शृंगारिक कवि, विद्यापति नहि —वैदेही, जनवरी-फरवरी, 1966

(11) हास्य रसक मूल कारण : एक विवेचन – संकलन-मैथिली अकादमी, पटना
(12) मैथिली लिखवाक संकेत – मिथिलामोद, जून, 1938
(13) मैथिली व्याकरण आ शैली – रचना संग्रह-प्रथम भाग, 1956
(14) विद्यापतिक राधाकृष्णक तीन रूप किए – मिथिला मिंहिर, 4 नवम्वर, 1973
(15) मैथिलीक शब्दसमाज – अखिल भारतीय मैथिली साहित्य-परिषद, पत्रिका-शिशिरांक, 1963
(16) आलोचना : एक दृष्टिकोण
(17) विद्यापति गोविन्द रचित राधाकृष्णक प्रचाराभाव – वैदही, अक्तूवर,-नवम्वर, 1964
(18) विद्यापतिक राधाकृष्णक व्यक्तित्व निरूपण – वैदेही, जून, 1964
(19) गामक मंच आ मैथिली नाटक – मैथिली दर्शन, मई-जून, 1977
(20) हस्तलिखित पत्र-पत्रिकाक इतिहास – मिथिला मिहिर, 23 नवम्वर, 1975
(21) फकड़ा – वैदेही, अक्टूबर, 1961
(22) मैथिली साहित्य मे उपलब्धि – मिथिला मिहिर, 22 अगस्त, 1965
(23) हस्तलिखित पत्र-पत्रिका – मिथिला मिहिर, 13 अप्रैल, 1975
(24) मैथिली कँ संविधान मे स्थान लोक-स्वराज्य भेटला पर भेटत – माटिपानि, दिसम्बर, 1983
(25) विद्यापति गीतकँ चिन्हबा लेल मैथिल आँखि चाही – ललित स्मृति ग्रंथ, 1977
(26) कविवर चन्द्र झाक कवित्व-शक्ति – वैदेही, जून, 1964

'किरण'क उल्लिखित छब्बीस निबन्धमे मात्र नौ टा निबन्ध हुनक एक मात्र निबन्ध संकलन (किरण निबन्धाबली-भाग-1) मे संकलित अछि।

'किरण' द्वारा लिखित एहि लेखसँ अतिरिक्तो किछु लेखक उल्लेख[1] हमरा भेटल अछि–

---

1 डा॰ सुनील कुमार ठाकुरक शोध-प्रबन्ध (काञ्चीनाथ झा 'किरण'क रचनाक आलोचनात्मक अध्ययन) मे

(1) महाकवि यात्री, मैथिली आ हम
(2) मैथिली साहित्यक प्रसंग — मिथिला मोद, जून, 1938
(3) भारतीय युद्ध शास्त्र — मिथिला मोद, 1939
(4) स्मरण राखू — मिथिला मोद, 1939
(5) साहित्य-संसार — मिथिला मोद, 1939
(6) मैथिली बन्धु महासभा — मिथिला मोद, 1939
(7) मैथिल साहित्य परिषद्क मंत्रीक उत्तर मे — मिथिला मोद, 1940-41
(8) विद्यापतिक स्मृति दिवसक स्वरूप — मिथिला मिहिर, नवम्वर, 1964
(9) प्राचीन आ नवीन संस्कृति — मिथिला मोद, 1941
(10) डा॰ गंगानाथ झा क लेख मिथिलाक उद्योगपतिक समीक्षा — मिथिला मोद, 1941
(11) सनकल मोद
(12) सामयिक विचारधारा
(13) शरद कविता : एक आलोचना
(14) विद्यापतिक प्रति श्रद्धाञ्जलि साहित्य निर्माण सँ संभव

'किरण'क नाम पर उल्लिखित एहि निबन्ध सभ मे ओही शीर्षक कि किछु बदलल शीर्षक संग मात्र एगारह टा लेख हुनक निबन्धावली मे संकलित अछि। एहिमे सँ अधिकांश लेख हमरा देखबा लेल उपलब्ध नहि भऽ सकल अछि, तैं एकर प्रामाणिकताक सम्बन्ध मे आधिकारिक रूपसँ किछु कहब हमरा लेल उचित नहि होयत। तैं निबन्धकारक रूप मे 'किरण'क परिचय तथा मूल्याङ्कन हेतु हम हुनक निबंधावली मे संकलित एगारह लेख केँ मुख्यतः आधार बनाओल अछि।

'किरण'क निवन्ध कि आलोचनापरक लेख सभक कोनो संकलन वर्ष 1990 सँ पूर्व उपलब्ध नहि छल। एहि वर्ष हुनक मात्र एगारह टा निबंधक एकटा संकलन लोकक सोझाँ आयल। हुनक अधिकांश निवन्ध अखन धरि असंकलित थिक। एहनामे स्पष्ट थिक जे 'किरण'क निबन्धकार कि आलोचकक रूपमे सम्यक मूल्याङ्कन हेतु स्थिति सुविधाप्रद नहि रहलैक अछि।

'किरण'क निबंध-साहित्य पर विचार करैत योगानन्द झा लिखैत[1] छथि— "स्फुट रचनाक रूपमे किरणजीक निवन्ध साहित्य विभिन्न पत्र-पत्रिका मे छिड़िआयल भेटैत अछि। एहि निबंध सभमे किछु तऽ साहित्येतिहास सँ सम्बद्ध अछि आ किछु मैथिलीक

1 डा॰ काञ्चीनाथ झा 'किरण'क निबंध साहित्य-'कर्णामृत'-किरण स्मृति अंक जुलाइ-सितम्बर, 1989

भाषा समस्यासँ। काव्यशास्त्रीय ओ समीक्षाशास्त्रीय दृष्टिकोण सँ सेहो किछु निबन्ध ई लिखने छथि। 'फकड़ा' शीर्षक संकलनात्मक निबंध हिनक अत्यन्त प्रसिद्ध अछि। एकर अतिरिक्त ई अनेक विचारात्मक निबंधक प्रणयन सेहो कयने छथि।

"साहित्येतिहासक विभिन्न गुत्थी केँ सोझरयबाक अवसर जखन-जखन सम्प्राप्त होइत रहल, किरणजी ओहि गुत्थीकेँ सोझरयवामे अपन तर्क-सम्मत विचार लऽ प्रस्तुत भेलाह।"

"एहि तरहेँ श्रीकिरणजीक निबन्ध-रचनाक आधार पर कहल जा सकैछ जे मैथिली साहित्येतिहासक प्रसंग रहौक वा भाषा वैज्ञानिक गुत्थीकेँ सोझरयबाक समस्या, काव्यशास्त्रीय विषय-विवेचनक प्रसंग रहौक वा निर्भीक आलोचनाक प्रसंग, समसामयिक मिथिला-मैथिलीक समस्या पर विचारक बेर होइक वा शैलीक आलोड़न-विलोड़नक पहर, सभ स्थिति मे ई एकटा सिद्धहस्त लेखकक रूपमे विषय ओ काव्यकेँ स्पष्ट करैत अपन विचारधारकेँ उपस्थापित करैत रहलाह आ मैथिली भाषा ओ साहित्य तथा आन्दोलनकेँ गति प्रदान करैत रहलाह।"

निबन्धकार आ आलोचक 'किरण'क सम्बन्ध मे योगानन्द झाक उल्लिखित स्थापना सँ हम सहमत छी, कारण ई यथार्थपरक थिक। साहित्येतिहास, काव्यशास्त्र, समीक्षाशास्त्र आ मैथिलीक भाषा-समस्या सँ सम्बद्ध गुत्थीकेँ सोझरयबाक दृष्टिसँ लिखल निबन्धक अतिरिक्तो 'किरण'क किछु निबन्ध प्रकाशित भेल छनि जे खाहे ओ अपने विशिष्ट चिन्तन कि विचारधारा केँ उपस्थापित करबाक उद्देश्य सँ लिखलनि, खाहे विशिष्ट साहित्यिक समारोह आ आयोजनक आवश्यकता कि पत्र-पत्रिकाक जरूरतिक पूर्त्तिक दृष्टि मे राखि लिखने रहथि। एहन निबन्ध सभमे 'भुवन जी सामंतवादी छलाह', "मैथिलीकेँ संविधान मे स्थान लोक स्वराजय भेटला पर भेटत", 'विद्यापतिक गीतकेँ चिन्हबा लेल मैथिल आँखि चाही', 'महाकवि यात्री, मैथिली आ हम,' 'भारतीयायुद्धशास्त्र', 'विद्यापतिक स्मृति-दिवसक स्वरूप, "प्राचीन ओ नवीन संस्कृति' आ 'विद्यापतिक प्रति श्रद्धाञ्जलि साहित्यक निर्माण सँ संभव' क उल्लेख हमरा संगत लगैत अछि।

'किरण' परम्पराक प्रति आदर रखितो ओकरा सर्वांशतः स्वीकार करबा लेल प्रस्तुत नहि रहथि। ओ बदलैत समय आ समाजक अनुरूप ओहिमे संशोधनक पक्षधर रहथि, आ एहन संशोधन हुनका समाज आ साहित्यक विकास लेल अनिवार्य प्रतीत होइत रहनि। 'किरण' केँ बहुतो स्थापित मान्यता कि धारणाक विरोध मे लिखय पड़लनि आ ओ ई विरोध मात्र विरोधे टा लेल नहि कयलनि, एहि विरोधक लेल हुनका लग तर्कक अभाव नहि रहनि। तखन ईहो सत्य जे हुनक सभ तर्क लोकक लेल मान्य नहि भेलैक।

'किरण निबन्धावली' मे संकलित निबंध सभमे प्रथम तीन निबन्ध विद्यापतिक राधाकृष्णक रूप तथा व्यक्तित्व आ राधाकृष्ण काव्यक प्रचाराभाव सँ सम्बद्ध थिक। एहि तीनू निबन्धमे पहिल थिक-'विद्यापतिक राधाकृष्णक तीन रूप किएक ?' विद्यापतिक राधाकृष्णक तीन रूप मे एक रूप बंगाल मे स्वीकृत भेल जे 'किरण'क अनुसार

'श्रीमद्भागवतोक्त' थिक। दोसर रूप हिन्दीक साहित्यकारलोकनि द्वारा निरूपित थिक जे विद्यापतिकेँ मैथिलीक कवि सिद्ध भेला पर हुनका पर अधिकार जमबैत लोकतंत्रीय दृष्टि सँ समान स्त्री-पुरुषक रूप मे अंकित थिक। विद्यापतिक राधाकृष्णक तेसर रूप मैथिलीक स्वनामधन्य आचार्य रमानाथ झा द्वारा स्थापित कयल गेल अछि आ राधाकृष्णक एहि रूपमे राजा शिवसिंह तथा हुनक रानी लखिमाक दर्शन कयल गेल अछि। 'किरण' बंगाल मे मान्य विद्यापतिक राधाकृष्णक श्रीमद्भागवतोक्त रूप केँ स्वीकार कयलनि आ शेष दुनू रूपकेँ नकारि देलनि। एहि अस्वीकार लेल 'किरण' जे तर्क देलनि से तीख होइतो युक्तिपरक छनि। अपन एहि निबन्धमे ओ लिखैत छथि जे—"हिन्दीक विद्वान सभ साधारणतः ताहि वर्गक थिकाह जे साधारणतः पाठान-मोगल शासनक सहयोगी रहलाह, ओकर शासन-यंत्रक पुर्जाक रूपमे ओकर शासनक क्षेत्रमे पसरल छलाह। मोगल शासनक कालमे उर्दूक संवाहक छलाह, अंगरेजी शासनकेँ सुदृढ़ होइत देखि, नागरी लिपिक झण्डा हाथ मे उठा लेलनि। मोगलक शासन-यंत्रक अंग बनि, जतबा क्षेत्रक मालिक अपनाकेँ मानैत छलाह, ततबा क्षेत्र पर भाषा-साम्राज्यक स्थापना कऽ लेलनि। उर्दू भाषाकेँ मुसलमान किएक छोड़त ? तेँ हिन्दू मात्रक भाषा एक हिन्दी भाषा बनौलनि।

"...ई लोकनि मैथिली क्षेत्रक जनताकेँ पछुआयल अवुद्ध राखऽ चाहैत रहथि। कोना अपने मुँह सकारितथि जे मिथिला चौदहमे शताब्दी सँ हिन्दू धर्म-संस्कृति-सभ्यताक पुनर्गठनक प्रयत्न द्वारा विदेशी तुरुकक प्रतिरोध आरंभ कऽ देने छल ?"

"...तेँ ओ सभ विद्यापतिक राधाकृष्ण केँ साधारण नर-नारी घोषित कयलनि" आ स्थापित करबाक यत्न कयलनि जे मिथिलाक महाकवि विपरीत रतिक वर्णन मे विभोर छलाह।"

"जेँ हेतु हिन्दीक आलोचक अंग्रेजक विरुद्ध स्वाधीनताक भावनासँ युक्त भऽ गेल छलाह, लोकतंत्रक समर्थक बनि गेल छलाह, तेँ राधाकृष्णकेँ सामान्य नर-नारी धरि मानि लेलनि।"

आचार्य रमानाथ झाक मतकेँ गर्हित मानि 'किरण' तकर खण्डन एहि आधार पर करैत छथि "जे मैथिलीक आलोचक तऽ दोहरी गुलामी मे अभ्यस्त छलाह। एक मोगल अंगरेज दोसर ओकर सभक एजेन्ट स्थानीय जमीन्दार। अंग्रेजक विरुद्ध जे स्वाधीनताक संग्राम चलल से स्पर्शो धरि नहि कऽ सकलनि। देश स्वाधीनो भऽ गेल तथापि जमींदार केँ प्रभु मानैत रहलाहे। आत्मा कछमछयबो नहि कयलनि। से पहिल स्वाधीनताक उद्घोष कयनिहार विद्यापतिक राधाकृष्ण केँ लखिमा-शिवसिंह मानथि सैह स्वाभाविक।"

विद्यापतिक राधाकृष्णक स्वरूपक स्वीकार-अस्वीकारक लेल 'किरण' द्वारा प्रस्तुत तर्कमे किछु गोटेकेँ हिन्दीक विचारक लोकनिक प्रति 'किरण'क किञ्चित् पूर्वग्रह आ रमानाथ झाक प्रति हुनक स्थायी विरोधक किछु संस्पर्शक अनुभव भऽ सकैत छनि, परञ्च हुनक तर्क कें सर्वथा निराधार मानब अनर्गल होयत।

विद्यापतिक राधाकृष्ण विषयक अपन दोसर निबंध-'विद्यापतिक राधाकृष्णक व्यक्तित्व-निरूपण'—मे 'किरण' राधाकृष्णक स्वरूपक सम्बन्धमे प्रचलित तीन धारणाक

उल्लेख करैत ई मानैत छथि जे एहि विवादक अंतिम निर्णय संभव नहि थिक, तथापि श्रीमद्भागवतमे निरूपित रूपे कैं ओ विद्यापतिक राधाकृष्णक वास्तविक रूप मानैत छथि तथा शेष दुनू रूपक अस्वीकारमे पुनः निम्न स्थापना करैत छथि—

"विद्यापति सनातनी हिन्दू छलाह-हुनक चरितक माप आजुक लोकतांत्रिक समाजवादी नपना सँ नहि होयत। रानी लखिमा ओ विद्यापतिक बीच वासनात्मक प्रणय (जे विचारक्रममे कतोक व्यक्ति द्वारा बहुधा कहल गेल अछि—विनिबन्धकारक टिप्पणी) समाजवादी नपना सँ भने निर्दुष्ट बुझल जाय, मुदा हुनक युगक नपना सँ गर्हित घृण्य मानल जायत।"

'किरण'क मते "राधाकृष्णक व्यक्तित्वे पर विद्यापतिक गीतक महत्व आश्रित अछि आ गीतक महत्व पर आश्रित छनि हुनक अपन महत्ता।" तें "जँ हुनक कृष्ण (माधव-कान्ह) श्रीमद्भागवतोक्त 'कृष्णस्तु भगवान स्वयम्' थिकथि तँ विद्यापतिक कृष्ण, माधव, कान्ह नामयुक्त गीत भगवानक चरित सिद्ध होयत।"

एहि निबन्धमे 'किरण' अपन उक्त स्थापनाकैं उचित सिद्ध करबा लेल विद्यापतिक कतोक गीतक पाँती सभक विस्तार सँ व्याख्या करैत छथि, अन्य रूपमे राधाकृष्णक रूप कैं स्वीकार कयला सँ विद्यापतिक महत्ता पर लागयबला प्रश्न चिह्न दिस संकेत करैत छथि तथा गाय, गोपाल, कृष्ण आ हिन्दुत्वक अन्तस्सम्बन्ध कैं रेखाङ्कित करैत छथि।

एहि शृंखलाक तेसर निबन्ध थिक—'राधाकृष्ण-काव्यक प्रचाराभावक कारण' जाहिमे विद्यापति आ गोविन्द दासक राधाकृष्ण-काव्यक मिथिलामे प्रचाराभावक सम्बन्धमे विचार कयल गेल अछि। विद्यापतिक आ गोविन्द दासक गीतक बंगाल मे पर्याप्त प्रचार भेल, एतेक धरि जे चैतन्य महाप्रभु आ हुनक शिष्यसभ विद्यापतिक राधाकृष्ण सम्बन्धी गीत गाबि विभोर भऽ जाइत छलाह, मुदा मिथिलामे ओ लोकनि ताहि तरहें अपनाओल नहि गेलाह। एकर कारण सभक विवेचन एहि निबन्धमे कयल गेल अछि। 'राधाकृष्ण सम्बन्धी गीतक प्रति एहन असाधारण अरुचिक' रहस्यमयता पर विचार करैत 'किरण' किछु लोकक एहि मान्यता सँ असहमति देखबैत छथि जे मिथिला पर संस्कृतक विद्वानलोकनि द्वारा भाषामे लिखल काव्य कैं हेय बुझबाक कारणैं विद्यापति आ गोविन्द दासक राधाकृष्ण-काव्यक एतय अपेक्षित प्रचार नहि भेल। अपन असहमतिक पक्षमे 'किरण' ई तर्क प्रस्तुत करैत छथि जे भाषामे रचना करब यदि एतय हेय बुझल जाइत तऽ ज्योतिरीश्वर, उमापति, महाराज महेश, रत्नपाणि, रामदास, गोविन्द दास, भानुनाथ प्रभृति संस्कृतक विद्वान भाषामे रचना नहि कयने रहितथि। ओ किछु लोकक एहनो धारणा सँ सहमत नहि छथि जे मिथिला भूमिक शक्ति-प्रधान होयबाक कारणैं एतय राधाकृष्णक भजनक प्रचार नहि भऽ सकल। एहि धारणा सँ अपन असहमति देखबैत किरण कहैत छथि जे "मिथिला शक्ति-प्रधान भूमि होइतो कोनो धर्मक विरोधी नहि रहल। जहिना सभ प्रकारक उपजा एके माटि सँ होइत अछि, तहिना सभ आस्तिक धर्म एतय

फुलायल-फड़ल। वैष्णवधर्म्मीओक संख्या एतय थोड़ नहि अछि।" मिथिला मे राधाकृष्ण-काव्यक प्रचारक अभाव लेल ईहो तर्क देल गेल जे "विद्यापति राधाकृष्णक भजनक रूपमे गीत लिखलनिहेँ ने। राधाकृष्णक नाम मात्र छलनि। शिवसिंह कारी छला। लखिमा गोरि छली। हुनके दुनू गोटेक प्रणयक वर्णन कयने छला। संग-संग कामशास्त्रक शिक्षाओ हुनक गीतक उद्देश्य छल।" किरण एहि मतकेँ सभसँ दुर्वल मानैत छथि। "कारण शिवसिंह कारी छला तकर 'सपन देखल हम शिवसिंह भूप। बतिस बरस पर सामर रूप'। पद टा प्रमाण अछि। मुदा 'झामर रूप' सेहो पाठ पबैत छी। विचारलासँ झामर रूप अधिक संगत अछि।" अपन असहमति केँ स्पष्ट करैत किरण आगाँ कहैत छथि जे "विद्यापतिक समय मे संस्कृत विद्वानक नैतिक पतन आइ-काल्हि जकाँ कथमपि नहि भेल छल। हमसभ राजा-महाराजाकेँ विश्वनाथ 'धर्मावतार' कहैत छिअनि आ अपने सन विद्यापतिओ केँ मानय लगैत छियनि। तकरे परिणामस्वरूप एहनो अर्थ लागि जाइत अछि।" ई तँ भेल विद्यापतिक राधाकृष्ण विषयक विद्यापतिक गीत प्रचारक अभावक सम्बन्धमे लोकक मत। गोविन्द दास तऽ बहुत बादमे मैथिल मानल गेलाह, तेँ मिथिलामे हुनक एहन गीतक प्रचाराभावक कारण लोकक नजरि मे स्पष्टे अछि।

'किरण'क अनुसार पण्डित वर्गसँ भिन्न मिथिलाक आन पुरुष वर्ग आ समस्त स्त्रीवर्गक निरक्षरता एहि प्रचाराभावक एकटा मुख्य कारण छल। पण्डित वर्ग "जाहि गीतकेँ समाजमे जाय देलनि तकरे प्रचार भेल। गोसाउनिक गीत उचिती आदि व्यवहारक गीत मे कोनो विचारक तारतम्यक अवसरे नहि छलैक। महेशवानी, नचारी अपन रुचिक अनुकूल छलनि, तेँ ओकर प्रचार होबय देलनि आ राधाकृष्णक गीत केँ पोथी सँ बाहर नहि होबय देलनि। "समाज मे राधाकृष्ण विषयक गीतक प्रचार सँ" कन्याक विषयगामिनी होयबाक भय "समाजकेँ होयब स्वाभाविक छल आ से पण्डित अनुशासित समाज चाहैत नहि छल। गौरी-महोदव सम्बन्धी गीतक प्रति समाज मे ओ भय नहि छलैक। तेँ ओकर प्रचार वाधित नहि भेल। 'राधाकृष्णक चरित्र जातिवाद ओ प्रचलित वैवाहिक प्रथाक विरुद्ध विद्रोह थिक। विवाह सम्बन्धी कन्या-वरक अधिकार जे अभिभावक द्वारा अपहृत भय गेल अछि, तकरा पुनः बरजोरी प्राप्त करबाक घोषणा थिक।"

निष्कर्ष रूपमे 'किरण'क स्थापना छनि जे "तेँ ओ लोकनि (पण्डित लोकनि-विनिबन्धकारक टिप्पणी) राधाकृष्णक काव्यकेँ पोथी सँ बाहर नहि होबय देलथिन। हमरा मतेँ मिथिलामे विद्यापति गोविन्द आदिक गीतक प्रचार नहि होयबाक कारण इएह थिक।" आ हम बुझैत छी 'किरण'क मत ठोस आधार पर स्थापित अछि।

'किरण निबन्धावली (भाग-1)' मे संकलित चारिम निबन्धक शीर्षक थिक 'गोविन्द दास शृंगारिक कवि, विद्यापति नहि। 'किरण' ई जनैत रहथि जे हुनक ई मत 'रूढ़िग्रस्त व्यक्तिकेँ अनसोहाँत' लगतनि, तथापि ओ एकर मान्यता लेल अपन तर्क प्रस्तुत कयलनि। ओ कहैत छथि—

"एक व्यक्ति ओल, अरिकोछ, बड़ी, राम सलाम, मासु सभक तीमन रान्हैत अछि। जखन जैह रान्हय लगैछ, तखन तकरे प्रशंसाक पहाड़ बना दैछ।

"दोसर व्यक्ति मासुएटा बनबैछ, ओकरे टा गुन गबैछ—तँ एहि दुनू मे अधिक मांस प्रेमी के मानल जायत ?

"उत्तर झंझटाह नहि अछि। दोसर व्यक्तिक मांसप्रेम एकनिष्ठ छैक। अतएव असल मासंप्रेमी उएह थिक। एकनिष्ठ प्रेमक परीक्षा अनावश्यक मानल जाइछ।

"शृंगार रस ओ प्रेमक सम्बन्धमे विद्यापति ओ गोविन्द दास मे एहि तरहक अन्तर अछि। गोविन्द दास एकनिष्ठ शृंगारिक कवि छथि आ विद्यापति सभ रसक प्रेमी। वस्तुतः विद्यापति मैथिल रसक प्रेमी छथि, मानव रसक प्रेमी छथि।"

'किरण'क अनुसार यद्यपि विद्यापतियो उत्कट शृंगार रसक रचना कयलनि, मुदा हुनक रचनाक ई सीमा नहि छनि। "सुति-उठि भगवान-भगवतीक स्मरण, भजन, नहाइक काल गंगाक वन्दना, विष्णु, शिव-भगवती पूजा, कोनो पुराणक पाठ, भोजनोत्तर विश्राम-विनोद-शृंगारिकता-सभ समयक सभ रसक जीवन, चिन्तन।

"उपनयन विवाह आदिक रूप संगीत समारोहक सभा मनोहर। यैह थिक मैथिल समाजक साधारण जीवनक चित्र किने ?

"विद्यापतिक पदावली सँ ई चित्र उपस्थित होइछ कि नहि ?" अर्थात् मात्र शृंगार रसात्मक काव्यक रचना विद्यापतिक साध्य नहि छल, जे गोविन्द दासक छल।''

विद्यापतिक समान भारतीयता मे रङल विद्वान जे 'कत चतुरानन मरि-मरि जायत न तोहर आदि अवसाने' आ 'हरि विरंचि महेश शेखर चुम्बमान पदे' क रचयिता शृंगारक सीमा मे बान्हि कऽ नहि राखल जा सकैत छथि, एहि तथ्य केँ 'किरण' सुस्थापित कयलनि अछि। जेँ युवक लोकनि देशक प्राण होइत छथि, तेँ विद्यापति प्रेमरसमे सानल उपदेश हुनका लोकनि केँ देलनि जाहि सँ ओ लोकनि हुनक उपदेश स्वाभाविक आ सहज रूप सँ ग्रहण कऽ सकथि, "परञ्च गोविन्द दासक काव्य शुद्ध शृंगारिक थिक। एहिमे स्वादे टा छैक-भीतर मे दोसर कोनो वस्तु नहि। राधाकृष्णक नाम जाहिमे छैक तकरा पढ़लासँ भक्तिक भावमे वृद्धि होइक तँ बात भिन्न थिक। मुदा राधाकृष्णहुक जे चित्र हृदय मे उपस्थित होयतैक से शृंगार रसाविष्टे चित्र। अतः गोविन्द दास एकनिष्ठ शृंगारक प्रेमी छलाह, विद्यापति नहि।" स्पष्ट थिक जे 'किरण' गोविन्द दासक भक्तिकेँ शृंगार पर मोलम्मा मात्र मानैत रहथि। विद्यापति केँ शृंगारक सीमामे बान्हबा लेल 'किरण' एहि आधार पर प्रस्तुत नहि छथि जे हुनक पदावली व्यापक मैथिल-जीवनक चित्र उपस्थित करैत अछि।

"न थिर जीवन न थिर जौवन न थिर एह संसार।
गेले अवसर पलट न आइअ किरति अमर सार।।"

जीवन यौवन आ संसारक नश्वरता तथा कीर्त्तिक अमरत्वक एहन फरीछ ज्ञान रखनिहार विद्यापतिकेँ 'किरण' मात्र शृंगार रसक कवि नहि मानैत छथि तऽ ई तर्कहीन

कोना मानल जासकैछ ? विद्यापतिक रचनाक कतोक आयाम थिक, कारण जे "विद्यापति पण्डित छलाह। अपन देश, समाज, संस्कृति, सभ्यताक रक्षामे संलग्न रहथि। हुनक काव्यमे ई विलक्षणता नहि रहबे अस्वाभाविक। ओ प्रतिक्षण अपन समाज कैं समयानुकूल बनेबाक हेतु सजग रहैत छला।" 'किरण'क अनुसार गोविन्द दासक काव्य-चिन्ता विद्यापति-सन बहु-आयामी नहि छलनि। वास्तव मे गोविन्द दासक रचना-संसार विद्यापति-सन व्यापक छन्हिओ नहि। 'गोविन्द दास कह निकरुण विधि से जे करू ई रसबोध' सन पाँती लिखि ब्रह्मोक फज्झति कयनिहार गोविन्द दासकैं श्रृंगारिके टा मानल जा सकैछ।

किरण निबन्धावली (भाग-1) क पाँचम निबंध थिक-'भू परिक्रमणक रचयिता कविकोकिल विद्यापति नहि थिकाह।" 'भू-परिक्रमण' विद्यापतिक रचना मानल जाइत रहल अछि। मुदा ई मान्यता 'किरण' स्वीकार नहि कयलनि। एहि अस्वीकारक पाछाँ हुनक तर्क छनि जे–

(1) "पोथीमे जतेक कथा अछि ताहिमे सँ अधिकांश 'पुरुष-परीक्षा' क कथा थिक।" आ 'किरण' क मान्य तर्कक अनुसार ताल-पत्र पर लिखऽबला काल मे अपना कैं एना दोहरायब विद्यापतिक लेल असंगत बात मानल जयबाक चाही।

(2) 'पुरुष परीक्षा' आ भू-परिक्रमण'क श्रोता पुरुष एके व्यक्ति (देव सिंह) रहथि आ ओ एहन अबोध नहि रहथि जे विद्यापतिकैं एहि पुनरुक्ति लेल नहि टोकितथि।

(3) पोथीक आरंभे मे धौम्य मुनिकैं त्रिकालज्ञ कहल गेल अछि आ विद्यापति से पहिने कतहु नहि कहने छथि।

(4) कृष्णक अग्रज बलदेवक बाटक थाकनि उतारबा लेल धौम्य खिस्सा कहलथिन ई 'भू परिक्रमण' क रचनाकार कहैत छथि जखन कि स्वयं धौम्य एहि पोथी मे बलदेवक ज्ञान वर्द्धनार्थ खिस्सा कहैत छथि। वाक्यक अन्तर ई स्पष्ट करैछ जे विद्यापति सँ एहन चूक संभव नहि छल।

(5) 'भू परिक्रमण' मे आयल एक श्लोक सँ ई सिद्ध होइछ जे 'पुरुष परीक्षा' पूर्वे लिखल जा चुकल छल आ तें कथासभक दोहराओल जायब शंका उत्पन्न करैछ।

(6) बलदेव आ धौम्य द्वापरक लोक छथि, जखन कि कथा सभ प्रौढ़ कलियुगक थिक। विद्यापति-सन सिद्ध रचनाकारक रचना मे एहन विसंगति असंगत लगैछ। धौम्य कैं कलियुगक घटनाक पूर्वाभास होयब संभव नहि छल।

(7) पोथीक सभटा कथा कलियुगक थिक जखन एहिमे कहल ई गेल अछि जे ई सभ वृहत ब्रह्मपुराणक बाहरक काव्यक रीति सँ कहल गेल अछि।

(8) पोथीमे विद्यापतिक संदर्भ मे लिट् लकारक प्रयोग अछि, जाहि सम्बन्ध मे 'किरण'क कहब छनि जे "परोक्षमे भेल घटना मे लिट् लकारक प्रयोग होइछ। अपन द्वारा कयल काज मे लिट् लकारक प्रयोग होइक ?"

(9) पुरुष परीक्षोक्त कथा सँ भिन्न जे कथा सभ एहि पोथी मे अछि से सभ अनुष्टुप छन्द मे अछि आ एकोटा श्लोक रोचक नहि। छन्द भंग आ व्याकरणक अशुद्धियो पोथी कें अपाठ्य बनबैछ। एके व्यक्ति द्वारा लिखल दू पोथी मे सँ एकमे एहन अशुद्धि मानबाक बात नहि थिक।

'भू-परिक्रमण' क सम्पादक डा॰ मुनीश्वर झा यद्यपि 'किरण'क तर्क सँ सहमत नहि छथि, मुदा हमरा सभ हुनक तर्ककें असंगत कहि खारिज नहि कऽ सकैत छी। 'भू-परिक्रमण'क रचयिता विद्यापतिकें नहि मानबाक पाछाँ 'किरण'क ईहो मान्यता अछि जे देवसिंहक नैमिषारण्य गमनक, जतऽ ई कथा सभ कहल गेल, कालमे शिवसिंह सोड़ह वर्षक रहथि आ विद्यापति, जे शिवसिंह सँ दू वर्ष पैघ रहथि, मात्र अठारह वर्षक रहथि आ एहन अल्पावस्थामे पढ़ब-लिखब छोड़ि ओ देवसिंहक संग गेल होयताह आ एहि लेल विद्यापतिक माता-पिता राजी भेल होइथिन ई शंकास्पद् थिक। भू-परिक्रमणक रचियता यदि विद्यापति नामधारिए छथि तऽ 'किरण'क अनुसार ओ कवि कोकिल विद्यापति सँ भिन्न व्यक्ति छथि। हम सभ कतोक कालिदासक आविर्भावक बात जनैत छी आ तैं कविकोकिल विद्यापति सँ भिन्न विद्यापतियोक संभावना कें नकारि नहि सकैत छी।

'किरण निबन्धावली' (भाग-1) क छठम निबंध 'प्रयोग आ परम्परा' मे 'किरण' प्रयोग आ परम्पराक सम्बन्धमे अपन अभिमत सूत्रात्मक शैली मे प्रस्तुत कयलनि अछि, यथा—

"प्रयोगवादी यदि नव बाटक निर्देश करैत अछि तँ परम्परावादी बाटकें चिक्कन बना दैत अछि। सभ जँ प्रयोग करय लागय तँ बाट बनबे नहि करत।"

× × ×

"यदि परम्पारावादी कें नव प्रयोग करबाक साहस नहि रहैत छै तँ प्रयोगवादी कें प्रयोग पर स्थिर रहबाक धैर्य नहि रहैत छै।"

× × ×

"वैदिक छन्दक बाद पौराणिक छन्द बनल। नव प्रयोग भेल। नव आनन्द भेटल लोककें से प्रयोगवादीएक कारणें। आ पौराणिक छन्द अयलो पर वैदिक छन्द लुप्त नहि भेल से ककर प्रसादात ? परम्परावादीएक प्रसादात किने ?

× × ×

"यदि प्रयोगवादी नहि रहैत तँ नव-वस्तु बनबे नहि करैत आ परम्परावादी नहि रहैत तँ पुरना वस्तु लुप्त भय जाइत।"

अपन एहि निबन्धक अंत मे निष्कर्ष रूप मे 'किरण' कहैत छथि—"हमर मतें प्रत्येक व्यक्ति यदि प्रयोगवादी बनय आ प्रयोगक नीक परिणामक संरक्षण बेर मे परम्परावादीक प्रवृत्ति राखय तँ समाजक लेल कल्याणकर हयत।" भावार्थ ई जे 'किरण' परम्परा आ प्रयोगक सह-अस्तित्वक आकांक्षी रहथि। तखन ई भिन्न बात थिक जे हुनक परम्परा आ प्रयोगक सम्बन्ध मे जे धारणा रहनि, ताहि सँ किरणोत्तर पीढ़ीक साहित्यकारलोकनिक परम्परा आ प्रयोग सम्बन्धी मान्यता तत्वतः भिन्न छनि। वैदिक छन्द कि पौराणिक छन्दमे भेल प्रयोग एवं 'प्रयोगवाद' कि प्रयोगवादीक बीच कोनो अन्तस्सम्बन्ध नहि अछि।

किरण निबन्धावलीक सातम निबन्ध पूर्वाञ्चलीय गीत साहित्य : मैथिली ओ बंगाली गीत' मे 'किरण' मैथिली आ बंगाली लोकगीत पर विचार कयलनि अछि। प्रसङ्गवश् एहि क्षेत्रमे विद्यापतिक अवदान तथा महत्वकेँ रेखाङ्कित कयल गेल अछि।

'किरण निबन्धावली' क आठम निबन्ध 'उमापतिक समय' मे 'पारिजातहरण' नाटकक ख्यात रचनाकार उमापतिक समय-निर्धारणक प्रसंग उठल विवाद पर 'किरण' क अभिमत प्रस्तुत अछि। 'पारिजात-हरण' क प्रथम सम्पादक डा॰ ग्रियर्सन 'पारिजात-हरण' मे चर्चित हरिहरदेव केँ हरिसिंह देव मानि उमापतिक काल तेरहम शताब्दीक उत्तरार्द्ध आ चौदहम शताब्दीक प्रारम्भ स्थिर कयलनि। 'पारिजात-हरण' क दोसर सम्पादक पं॰ चेतनाथ झा मिथिलामे पसरल जनश्रुतिक (जे उमापति गोकुलनाथक गुरु रहथि) आधार पर उमापतिक समय सत्रहम शताब्दीक अंतिम भाग ओ अठारहम शताब्दीक आदि भाग निर्धारित कयलनि। मैथिली साहित्यक इतिहासकार डॉ॰ जयकान्त मिश्र यद्यपि पं॰ चेतनाथ झाक समय-निर्धारण सँ सहमत छथि, परञ्च ओ हरिहरदेव केँ बुन्देल खण्डक राजा छत्रसालक वृद्धप्रपौत्र हिन्दूपतिसिंह सँ अभिन्न मानैत छथि। 'किरण' डा॰ मिश्रक 'हिन्दूपति सिंह' बला मान्यता सँ सहमत नहि छथि। उमापतिक काल-निर्धारण प्रसंग म॰ म॰ डा॰ उमेश मिश्र ग्रियर्सनेक मतक समर्थन कयने छथि।

'किरण' मिथिलाक उक्त जनश्रुतिक आधार पर उमापतिक काल-निर्धारण उचित नहि बुझैत छथि। संगहि हुनक ईहो कहब छनि जे 'पारिजात हरण'क नाटककार आ गोकुलनाथक गुरु एके उमापति छथि, तकर प्रमाण नहि भेटैछ। 'किरण'क अनुसार उमापतिक काल-निर्धारण लेल हरिहरदेवक वास्तविक परिचय आवश्यक थिक। एहि परिचयकेँ फरीछ करबा लेल 'किरण' 'पारिजात हरण' क विवेचन करैत छथि। एहि नाटक मे संस्कृत नाटकक परम्परा सँ भिन्न संस्कृत आ प्राकृत संग मैथिलीक सेहो प्रयोग भेल अछि। एहि आधार पर 'किरण'क मत छनि जे "जाहि देशक एक वर्ग संस्कृत भाषाकें छोड़य नहि चाहैत हो आ संगहि लोक भाषा मैथिली रहय, ततहि टा पारिजात हरण-नाटक सन ग्रंथक रचना भय सकैछ।" अर्थात् उमापति कि हरिहरदेवक बुन्देल खण्ड कि हिन्दूपति सिंह सँ सम्बन्ध मानब उचित नहि।

उमापतिक काल-निर्धारण प्रसंग अपन विवेचन मे 'किरण' कहैत छथि जे "एहि नाटकमे जे मैथिली गीत अछि ताहिमे एकोटा अरबी-फारसीक शब्द नहि अछि। संगहि चूअ, भौ, जन्ही, तन्ही, पाऊ, आऊ, नित्र आदि शब्दक प्रयोग अछि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषासँ नवीन नहि थिक। बरु प्राचीन थिक"। एहि स्थापना द्वारा 'किरण' उमापतिक सत्रहम-अठारहम शताब्दी मे होयब सम्बन्धी मतक खण्डन करैत छथि।

एहि नाटकमे विष्णु स्वरूप नायक कृष्ण आ हुनक दू पटरानी रुक्मिणी आ सत्यभामा छथि तऽ धरती पर हुनक 'अवतार' हरिहरदेवोक दू टा स्त्री छथिन-माहेसरी आ जगमाता। एहि नाटक कैं जखन हरिहरदेव अपन दुनू रानी संग देखैत रहल होयताह तऽ ओहि मे हुनका सभकें अपन स्वरूपक झलक भेटैत रहल होयतनि। हरिहरदेव 'मैथिलेश' छलाह, ई सिद्ध करबा लेल 'किरण' उक्त नाटकक तीन टा वाक्य अपन निबंधमे प्रस्तुत करैत छथि—

(1) श्री धरणीधरेण हरिणा हिन्दूपतिः पाल्यताम्।

(2) पारावारो गुणनामयमतुल गुणः पातु वो मैथिलेशः

(3) सकल नृपतिपति हिन्दुपति प्रतिपालथु धरा।

(अर्थात् भगवान हिन्दूपतिकपालन करथु। मैथिलेश अहाँ लोकनिकैं पालथु आ धरतीक पालन हिन्दूपति करथु।)

एहि तीन वाक्य मे सम्बन्ध स्थापित करबा लेल 'किरण' हिन्दूपति-मैथिलेशकैं एक व्यक्ति मानब आवश्यक बुझैत छथि आ डा॰ ग्रियर्सनक अभिमतक समर्थन करैत बुंदेलखण्डक राजा हिन्दूपति सिंह सँ हरिहरदेव कैं भिन्न मानैत छथि। हुनका मराठाक अधीन रहनिहार 'छोटछीन राजा' (हिन्दूपतिसिंह) मे उमापति द्वारा विष्णुक अवतारक दर्शन संगत नहि लगैत छनि। संगहि उमापति द्वारा हरिहरदेव कैं दशम अवतार कहब 'किरण' कें विद्यापति द्वारा शिवसिंहकें एगारहम अवतार कहबाक सदृश्ये लगैत छनि।

अपन विवेचन मे 'किरण' अंकित करैत छथि जे "ऐतिहासिक युगमे तीनिए कुलक राज मैथिलेश कहाओल--महेशकुलक, कामेश्वरक कुलक आ नान्यदेवक कुलक। एहिमे महेशक कुल सदा मुसलमान आ ओकर स्थानापन्न अंगरेजक अधीन रहल। तऽ सकल यवन-वन-दावानल भैए नहि सकैत छथि। कामेश्वरोक कुलक राजामे एक शिवसिंह स्वाधीनताक घोषणाकय यवनक संग लड़लाह।" नान्यदेव कुलक संतान यद्यपि मुसलमानक अधीनता मानि लेने रहथि, मुदा एहि कुलक अंतिम राजा हरिसिंहदेव गयासुद्दीन तुगलक संग युद्ध कयने रहथि, एकर प्रमाण भेटैत अछि। एहि हरिसिंहदेवक नाम मे 'सिंह' जुटल नहि छल, मुदा एहि कुलक बादक राजाक नाममे सिंह जुटि गेल छल—यथा रामसिंह देव, शक्रसिंहदेव, हरिसिंहदेव। इयाह हरिसिंहदेव 'किरण'क मतें हरिहर देव छथि आ संभव थिक जे उमापति विष्णुक दशम अवतार हरिहर देव मे सिंह जोड़ब संगत नहि मानि हरिसिंहदेव के हरिहर देव बना देने होथि। एहि तरहें हरिहर

देव आ हरिसिंहदेव मे एकत्व सिद्ध करैत 'किरण' ग्रियर्सनक मतक समर्थन करैत छथि तथा उमापितक काल तेरहम शताब्दीक उत्तरार्द्ध तथा चौदहम शताब्दीक पूर्वार्द्ध मानैत छथि। उमापतिक काल-निर्धारण लेल 'किरण' द्वारा प्रस्तुत आधार कतौ सँ काल्पनिक नहि भऽ लोकसम्मत, इतिहाससम्मत तथा साहित्य-सम्मत थिक आ कसौटी पर ठोकि-बजा कऽ परखल थिक।

'किरण निबन्धावली' क नवम निबंध हस्तलिखित पत्रिका (ऐतिहासिक झलक) थिक। 'किरण' द्वारा लिखित 'हस्तलिखित पत्र पत्रिका' (मिथिलामिहिर 13 अप्रैल, 1975) आ 'हस्तलिखित पत्र-पत्रिकाक इतिहास' (मिथिलामिहिर, 23 नवम्बर, 1975) दू टा निबन्धक उल्लेख हमरा योगानन्द झाक निबन्ध[1] 'डा. काञ्चीनाथ झा 'किरण क निबन्ध साहित्य' मे भेटल अछि। जँ कि ई दुनू मिथिला मिहिर मे दू तिथि कैं दू अङ्क मे प्रकाशित भेल छल, हम बुझैत छी जे एहि दुनूक विषय-वस्तु एक नहि होयत। निबन्धावली मे संकलित 'हस्तलिखित पत्रिका (ऐतिहासिक झलक) 'प्रायः' मिथिला मिहिर' क 23 नवम्बर, 1975 क अङ्क मे छपल 'हस्तलिखित पत्र-पत्रिकाक इतिहास' सैह थिक। अपन एहि निबन्धमे 'किरण' हस्तलिखित पत्रिकाक इतिहास-संदर्भक संग ओहि पत्रिकामे योगदान कयनिहार किछु प्रमुख रचनाकार आ हुनक रचना तथा ओहि पत्रिका सभक माध्यम सँ प्रकाश मे आयल किछु बादक स्थापित रचनाकारक विवरण प्रस्तुत कयलनि अछि एहि। निबन्धमे जाहि हस्तलिखित पत्र-पत्रिकाक उल्लेख भेल अछि ओहि मे प्रथम थिक मैथिली साहित्य समिति, काशी द्वारा बहार कयल 'मैथिली सुधाकर' (पाक्षिक) जे फरवरी, 1931 सँ आरंभ भेल आ दोसर थिक मैथिल छात्र संघ द्वारा बहार कयल 'मिथिलोदय', जकर प्रारंभ होयबाक तिथि एहि निबन्धमे यद्यपि नहि देल गेल अछि तथापि एतबा विदित होइछ जे ओ फरवरी, 1931 मे बहरायल 'मैथिली सुधाकर' क लगले बाद आरंभ भेल छल। 'मैथिली सुधाकर'क पहिल सम्पादक पं. कुलानन्द मिश्र (दार्शनिक) रहथि। एहि निबन्धमे उल्लिखित अन्य हस्तलिखित पत्रिकाक विवरण एहि प्रकार अछि–

(1) भारती–काशी–वैद्यनाथ मिश्र 'वैदेह'–अखनुक यात्री द्वारा,
(2) वैदेही–काशी–हरिकान्त झा बक्सी द्वारा
(3) हितैषी–दरभंगा राज सँ
(4) अयाची–लालगंज सँ
(5) गोविन्द–लोहना सँ
(6) अक्षत–पाही सँ
(7) किरण–कथवाड़ सँ

---

1 'कर्णामृत'–किरण स्मृति अंक जुलाइ-सितम्बर, 1989

(8) लोचन—रैयाम सँ

(9) मिथिला मानस—घोघरडीहा सँ

(10) मित्रवाणी—ठाढ़ी सँ

एकर अतिरिक्त कोइलख सँ प्रभात, नवानी सँ मन्दार, उजान सँ जानकी आ पूर्णियाक एक गाम सँ 'कौशिकी' नामक हस्तलिखित पत्रिका बहरायल छल, जकर उल्लेख एहि निबंध मे तऽ नहि भेल अछि, मुदा किरण'क एक निबन्धमे एहि सभक चर्च अछि। सभंव थिक किछु आर हस्तलिखित पत्रिका बहरायल हो जे एहि निबंध मे चर्चित नहि अछि।

एहि हस्तलिखित पत्रिका सभक अवदान आ उपादेयताक सम्बन्ध मे 'किरण'क मत छनि जे "एहि पत्र सभक अंक यदि एकत्रित कयल जाइत तँ विषय-वस्तुक दृष्टिएँ 'मिथिला मोद' आदिक अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध होइत। कतेको युवक साहित्यकारक हृदय मे अहुरिया कटैत भाषा-संस्कृतिक प्रेमक पता समाजकेँ लगैत।"

एहि निबन्धक अनुसार मैथिलीक पहिल हस्तलिखित पत्रिका 'मैथिली सुधाकर' थिक जे काशी सँ फरवरी, 1931 मे बहरायल छल। 'किरण'क तथाकथित उपन्यास 'चन्द्रग्रहण' 1932 मे मुद्रित होयबा सँ पूर्व एही पत्रिकाक माध्यम सँ लोकक सम्मुख आयल छल। 'मैथिली सुधाकर' सँ पूर्व कोनो हस्तलिखित पत्रिका कोनो ठाम सँ बहरायल छल वा नहि, एहि सम्बन्ध मे हम निश्चित रूप सँ किछु नहि कहि सकैत छी। अपन मैथिली पत्रकारिताक इतिहास मे चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' हस्तलिखित पत्रिकाक सम्बन्धमे विवरण देब अनावश्यक बुझलनि अछि।

'किरण निबन्धावली'क दशम निबन्ध-'मैथिलीक शब्द समाज'—मे 'किरण' एहि तथ्यक प्रति घोर रोष प्रकट कयलनि अछि जे मैथिली केँ संस्कृत पर अधिक सँ अधिक निर्भर बनयबाक कुचेष्टा होइत रहल अछि आ मात्र मैथिल ब्राह्मण आ मैथिल कायस्थ द्वारा प्रयुक्त भाषा मानक मैथिलीक रूपमे स्वीकृत होइत रहल अछि। मैथिलीक व्याकरण संस्कृत-व्याकरणक अनुगामी बनल रहय, ई बातो हुनका लेल अप्रिय रहनि। मिथिलाक समाज एकर मूलवासीक संग-संग समय-समय पर बाहर सँ आबि एतय बसल लोको सँ बनल अछि, एहनामे मैथिली पर संस्कृतक वर्चस्व हुनका कबूल नहि भेलनि आ एहि प्रसंग मे कोनो तरहक कठमुल्लापनक ओ विरोध कयलनि। हुनक मान्यता छनि जे—

"आइ तँ संश्लेषणक युग आयल अछि। हिन्दू-मुसलमान-ब्राह्मण-शूद्रक मध्य वैवाहिक सम्बन्धकेँ प्रोत्साहन देल जा रहल अछि। एकर प्रभाव भाषाओ पर पड़तैक आ वस्तुतः देखलेँ भाषा पर संश्लेषणक प्रभाव बहुत पहिने सँ पड़ि रहल अछि।" आगाँ ओ अपन मत निष्कर्ष रूपमे स्थापित करैत कहैत छथि—

"कहबाक अभिप्राय जे जहिना मिथिलामे स्थायी रूपेँ बसनिहार बाह्मण, भूमिहार, राजपूत, गोप, चमार, मुसलमान समान भावें शुद्ध मैथिल थिक, तहिना मैथिल समाज

मे व्यवहृत संस्कृत, देशज, फारसी, अरबी सभ शब्द समान रूपें शुद्ध मैथिल थिक। शव्दक पंजियारी (भाषा विज्ञान) क क्षेत्रमे ओकर कुल-मूल भिन्न भने सिद्ध कयल जाय।" स्पष्ट थिक जे मनुष्यक समानताक उद्घोषक 'किरण' भाषाक स्तरो पर कोनो विभेदक विरोधी रहथि।

'किरण निबन्धावली' मे संकलित एगारहम (आ अंतिम) निबन्ध 'फकड़ा' थिक जकरा योगानन्द झा अपन निबन्ध[1] मे संकलानात्मक निबंध कहलनि अछि। 'फकड़ा'क सम्बन्धमे योगानन्द झा अपन उक्त निबन्धमे निम्नांकित विचार प्रस्तुत कयलनि अछि—

"एहि निबंधमे ग्राम्य जीवनमे परिव्याप्त विशिष्ट कोटिक फकड़ा सभकेँ संकलित ओ व्याख्यायित कयल गेल अछि। कविक कल्पना ओ फक्कड़क यथार्थ अनुभव पर आधारित कविता ओ फकड़ा कें (एहि निबंधमे) क्रमशः सामन्ती ओ प्रगतिवादी परिवेश सँ व्युत्पन्न कहल गेल अछि। निबन्धकार लोकजीवनक सत्यकें उद्घाटित करएबला विशिष्ट फकड़ा सभकेँ संकलित कए एहि निवन्धक माध्यमेँ प्रस्तुत कएल अछि तथा मैथिली लोकसाहित्यक विशिष्ट विधाकेँ सम्पुष्ट कएल अछि।"

एकटा साहित्यिक समारोह मे 'किरण' साहित्य मे जन-सहयोग हेतु भाषामे ठेंठ शब्दक प्रयोगक आवश्यकता केँ रेखाङ्कित कयलनि तऽ ओहि समारोहमे उपस्थित कविशेखर बदरीनाथ झा हुनक कथनक समर्थन करितो बजलाह जे "सभ त' फकड़ाए नहि लिखत। अतः जे संस्कृत-बहुल भाषा मे लिखि सकैत छी से ताहि भाषामे लिखी।" तात्पर्य ई जे ठेंठ-बहुल भाषा मे लिखल कविता फकड़ा होइछ। ई मान्यता मात्र कविशेखरेक नहि रहनि, संस्कृत-पण्डित सँ अनुशासित मैथिल-समाज मे ई बहुमान्य धारणा छल।[2]

कविशेखर बदरीनाथ झाक कथन सुनि 'किरण' मानसिक द्वन्द्व मे पड़ि गेलाह आ विचारय लगलाह जे 'ठेंठ' शब्द मे लिखल फकड़ा किए भय जेतैक ? की फकड़ाक संग ठेठ शब्दक सम्बन्ध अविच्छेद्य छै ?" आ 'किरण' क एहि मानसिक-वैचारिक द्वन्द्वक प्रतिफल थिक ई 'फकड़ा' शीर्षक निबन्ध।

अपन एहि निबन्ध मे पहिने 'ठेंठ' शब्दक अर्थ फरिअबैत 'किरण' लिखैत छथि—

"ठेंठ शब्दक अर्थ होइछ छोट वा ओछ। कमचाकर धोती के ठेंठ धोती कहैत छै। ठाठक चकराइ कम भेलें कहल जाइछ—ठाठ ठेंठ भय गेल। खिआयल कोदारि हर ठेंठ कहबैछ।

"क्यो विद्वान कहै छथि जे ठेंठक अर्थ थिक अल्प देशव्यापी। मैथिलीक अपन शब्द थोड़ दूरमे बुझल जाइछ तें ठेंठ कहबैक।

---

1 'कर्णामृत'—किरण समृति अंक-जुलाइ-सितम्बर, 1989

2 तत्रैव

"मुदा ठेंठ विशेषण लोकहु संग लगैत अछि। आ तखन तकर अर्थ स्पष्ट रूपेँ होइछ छोट वा नीच। जेना फल्लाँ बड़ ठेंठ छथि अर्थात् नीच छथि। अल्पदेशव्यापी अर्थ एतय नहि बैसैत अछि।

"तेहन शब्द कें तँ ठेंठ कहिते छिऐ, जकर प्रयोग केवल निट्ठठ गमार करैत अछि।

"...शब्द मे छोट-पैघक भाव समाजक प्रभाव थिक। जखन साहित्य समाजक प्रतिविम्ब, कोना नै औतै (ओ भाव–विनिबन्ध कारक जोड़)।"

पैघ जाति आ छोट जातिमे बाँटल समाजमे सुविधाप्रद जीवन जीबैत पैघ लोक छोटलोक केँ घृणाक दृष्टिएँ देखय आ ओकरा गमार कहैक।, तेँ जे ठेंठ छल, तकर सभ वस्तु ठेंठ छल। "तञ शब्दो (जे ओ प्रयोग करय–विनिबन्धकारक टिप्पणी) ठेंठ भेलै!" ओना ऊंच जाति आ नीच जातिक भाषा क्रम सँ एक-दोसरा संग मिज्झर होइत आयल अछि आ तेँ कविवर सीताराम झाक काव्यक प्रसंग ई कहल गेल अछि जे ''ठेंठ शब्दक ठाठ देखबाक हो तँ श्री सीताराम झाक काव्य मे देखू।'' ई कहनिहार कें जँ "ठेँठक अर्थ नीच बुझल" रहितनि तऽ ओ एहन पाँती नहि लिखितथि।

भाषाक संदर्भ मे ठेंठोक अभिप्राय बदलैत रहल अछि। पहिलुक जमाना मे संस्कृतेतर भाषाक प्रयोग ठेंठ बुझल जाइत छल। ज्योतिरीश्वर आ विद्यापति द्वारा मैथिली भाषामे गीत लिखब निश्चित रूपसँ क्रान्तिकारी बात छल।

ठेंठ शब्दक फरिछायल तात्पर्यकेँ रेखाङ्कित कऽ किरण फकड़ाक भावार्थ दिस ध्यान दैत छथि आ कहैत छथि जे– ''फक्कड़क कृति–फक्कड़ा-फकड़ा कहौलक। फक्कड़ जाहि समाजक छल तकरा कवि आ काव्य शब्दक संग परिचयो नहि छल हेतै। अतः फक्कड़ उपाधिकेँ मानि लेलक। हुनके सभक देल जाति-व्यवस्था छलै। जीवनक कोन अवस्थामे पण्डितक बन्धन सँ मुक्त छल ओ ! 'किरण' क अनुसार ''ठेंठ समाजमे फकड़ो ओहने आदरपूर्ण स्थान रखैत अछि जेहन स्थान संस्कृतक श्लोककेँ पैघ लोकक समाज मे छैक।"

"अतएव फकड़ो काव्ये थिक ! जहिना मिथिलाक जीवनक पूर्ण परिचय पयबाक लेल ब्राह्मण-क्षत्रिय सँ लय डोम-दुसाध धरिक जीवन-क्रमक अध्ययन आवश्यक तहिना मिथिलाक पूर्ण चित्र देखयबाक लेल पण्डितक काव्य संग-संग लोक-साहित्यक अध्ययन आवश्यक अछि आ फकड़ा लोक-साहित्यक प्रमुख अंग थिक।"

आगाँ किरण लिखैत छथि जे "पण्डितक काव्य यदि पाँच प्रतिशत लोकक चित्र दैछ तँ फकड़ा पंचानबे प्रतिशत लोकक।"

ठेंठ आ फकड़ाक अन्तस्सम्बन्धकेँ रेखाङ्कित कयलाक बाद 'किरण' एहि निबन्धमे सत्काव्य ओ फकड़ा मे वर्णित तथ्यक परीक्षा करैत एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छथि जे एहि दुहु कोटिक काव्यक सामाजिक संरचनामे व्याप्त विषमता सँ अन्तरंग सम्बन्ध छैक। एहि क्रम मे ओ कतोक फकड़ाक उद्धरण प्रस्तुत करैत तकरा समाजक बहुसंख्यकक सोच आ समझक प्रतिविम्ब मानलनि अछि। हम 'किरण' द्वारा उद्धृत कतो क फकड़ामे

सँ किछु एतय उद्धृत करैत फकड़ा सम्बन्धी 'किरण'क मान्यता संग अपन सहमति प्रकट करैत छी—

इतरक पानि भीतर जाय।
आ घैल छुले जाति जाय ?

× × ×

पेट न छूतय छूतय हाँड़ा।
आ
जकर लाठी तकर भैंस।

× × ×

धनिकक बाजय घांटी।।

× × ×

गरीब गारिसन कोनो ने गारि।

परिशिष्ट

(i) **प्रकाशन**

1. चन्द्रग्रहण (उपन्यास कहि प्रकाशित)
2. वीर-प्रसून (बाल कथाक संग्रह)
3. जय जन्मभूमि (एकाङ्की)
4. विजेता विद्यापति (नाटक)
5. कथा-किरण (कथा संग्रह)
6. पराशर (महाकाव्य)
7. किरण-कवितावली (कविता संग्रह)
8. कतेक दिनक वाद (कविता संग्रह)
9. किरण निवन्धावली (निबन्ध-संग्रह)
   एकर अतिरिक्त अनेक कविता, कथा, निबंध आ आन विधाक रचना पत्र-पत्रिका मे छिड़िआयल

(ii) **उपाधि आ सम्मान**

1. (ज्योतिरीश्वर ठाकुरक) 'वर्ण रत्नाकरक आलोचनात्मक अध्ययन' लेल पी-एच॰ डी॰ क उपाधि
2. 'कथा-किरण' लेल वैदेही पुरस्कार
3. 'पराशर' लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार

विनिबन्ध मे सहायक पत्र-पत्रिका आ पोथी

पोथी/शोध-प्रबंध

1. 'किरण'क उपलब्ध रचना
2. मैथिली साहित्यक इतिहास (डॉ॰ जयकान्त मिश्र)
3. मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन (डॉ॰ अमरेश पाठक)
4. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क रचनाक आलोचनात्मक अध्ययन (डॉ॰ सुनील कुमार ठाकुर)
5. भोज प्रबन्ध—बल्लाल सेन
6. अनवरत (श्री मोहन भारद्वाज)
7. परिचायिका (डॉ॰ भीमनाथ झा)
8. मैथिली पत्रकारिताक इतिहास (चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर')
9. शिखरिणी (स॰—पंडित गोविन्द झा प्रभृति)
10. मैथिलीक प्रसिद्ध कथा (सं॰ डॉ॰ वासुकीनाथ झा : श्री मोहन भारद्वाज)

पत्रिका

1. कर्णामृत—(किरण स्मृति अङ्क, जुलाइ-सितम्बर, 1989) सं अर्जुन लाल करण
2. माटि-पानि (दिसम्बर, 1983) सं॰ विनोद : विभूति आनन्द
3. माटि-पानि (जनवरी, 1984) सं॰ विनोद : विभूति आनन्द
4. हाल-चाल (दिसम्बर, 1987) सं॰ मोहन भारद्वाज
5. मिथिला मिहिर (7-13 अगस्त 1983) सं॰ सुधांशु शेखर चौधरी
6. परिषद्-पत्रिका (किरण स्मृति अङ्क 1990) सं॰ प्रो॰ रमाकान्त मिश्र
7. अर्पण (छठम अंक, नवम्बर, 1989) सं॰ उमाकांत झा

117126
9.12.04

काञ्चीनाथ झा 'किरण' (1906-1988) मैथिलीक दृष्टिसम्पन्न रचनाकारमे अग्रगण्य छथि । जीवन-दृष्टि हुनक आस्था कैं बरोबरि दिशा-निर्देश दैत रहलनि अछि । ई आस्था हुनक जीवन-शैली, विचार-शैली तथा साहित्यमे समान रूपसँ रूपायित भेल अछि । सोझरायल विचार आ निर्भीक कथन हुनक जीवनेक नहि, साहित्योक सर्वाधिक उल्लेखनीय घटक थिक । अपन भूमि ओ भाषा-साहित्यक एहन अनुरागी आ संगहि मानवीय समानताक एहन घोषित पक्षधर विरले भेटैत अछि । हुनक व्यक्तित्व आ कृतित्व अमिश्र आस्थाक निष्कम्प अभिव्यक्ति थिक आ तैं एहन दृष्टिबोध संभव भेल अछि। 'किरण'क अवदान जेना-जेना समय गुजरत, आओर फड़ीछ भेल जायत ।

'किरण' पर विनिबन्ध लिखनिहार छथि हुनके सन अक्खड़ व्यक्तित्वक बेछप रचनाकार-कुलानन्द मिश्र, जे मार्क्सवादमे निष्कम्प-आस्था रखैत छथि । ई कथा लिखने छथि, कतोक कृतिक अनुवाद कयने छथि, मुदा हिनक ख्याति अछि कवि तथा आलोचकक रूपमे । जीवन आ जगतक स्थिति एवं समस्याक अध्ययन-मनन हिनक एकान्त सेवी जीवनशैलीक नि
तथा लेखन मे डूबल कुलानन्द मिश्र
अछि । ओकर रंग-ढंग सर्वथा अभि
कुलानन्द मिश्रक सोच-विचार आ भाषा-भागमा अपन सहज रूप म भेटैत अछि जे 'किरण' कैं जनबा-बुझबा लेल उपयोगी अछि ।

Library IIAS, Shimla
MT 817.230 92 J 559 M
00117126

ISBN 81-260-0463-0

पचीस टाका